

ज्ञानशौर्यम्



ISSN : 2582-0095

**Peer Reviewed and Refereed International
Scientific Research Journal**

Website : <http://gisrrj.com>



GYANSHAURYAM

INTERNATIONAL SCIENTIFIC REFEREED

RESEARCH JOURNAL

Volume 6, Issue 2, March-April-2023

Email : editor@gisrrj.com Website : <http://gisrrj.com>



ज्ञानशौर्यम्

**Gyanshauryam
International Scientific Refereed Research Journal**

Volume 6, Issue 2, March-April-2023

[Frequency: Bimonthly]

ISSN : 2582-0095

**Peer Reviewed and Refereed International Journal
Bimonthly Publication**

**Published By
Technoscience Academy**



Editorial Board

Advisory Board

- **Prof. Radhavallabh Tripathi**
Ex-Vice Chancellor, Central Sanskrit University, New Delhi, India
- **Prof. B. K. Dalai**
Director and Head. (Ex) Centre of Advanced Study in Sanskrit. S P Pune University, Pune, Maharashtra, India
- **Prof. Divakar Mohanty**
Professor in Sanskrit, Centre of Advanced Study in Sanskrit (C. A. S. S.), Savitribai Phule Pune University, Ganeshkhind, Pune, Maharashtra, India
- **Prof. Ramakant Pandey**
Director, Central Sanskrit University, Bhopal Campus. Madhya Pradesh, India
- **Prof. Kaushalendra Pandey**
Head of Department, Department of Sahitya, Faculty of Sanskrit Vidya Dharma Vigyan, Banaras Hindu University, Varanasi, Uttar Pradesh, India
- **Prof. Dinesh P Rasal**
Professor, Department of Sanskrit and Prakrit, Savitribai Phule Pune University, Pune, Maharashtra, India
- **Prof. Parag B Joshi**
Professor & OsD to VC, Department of Sanskrit Language & Literature, HoD, Modern Language Department, Coordinator, IQAC, Director, School of Shastric Learning, Coordinator, research Course, KKSU, Ramtek, Nagpur, India
- **Prof. Sukanta Kumar Senapati**
Director, C.S.U., Eklavya Campus, Agartala, Central Sanskrit University, Janakpuri, New Delhi, India
- **Prof. Sadashiv Kumar Dwivedi**
Professor, Department of Sanskrit, Faculty of Arts, Coordinator, Bharat adhyayan kendra, Banaras Hindu University, Varanasi Uttar Pradesh, India
- **Prof. Manoj Mishra**
Professor, Head of the Department, Department of Vedas, Central Sanskrit University, Ganganath Jha Campus, Azad Park, Prayagraj, Uttar Pradesh, India
- **Prof. Ramnarayan Dwivedi**
Head, Department of Vyakarana Faculty of Sanskrit Vidya Dharma Vigyan, BHU, Varanasi, Uttar Pradesh, India

- **Prof. Ram Kishore Tripathi**

Head, Department of Vedanta, Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, Uttar Pradesh, India

Editor-In-Chief

- **Dr. Raj Kumar**

SST, Palamu, Jharkhand, India

Senior Editor

- **Dr. Pankaj Kumar Vyas**

Associate Professor, Department- Vyakarana, National Sanskrit University (A central University), Tirupati, India

Associate Editor

- **Prof. Dr. H. M. Srivastava**

Department of Mathematics and Statistics, University of Victoria, Victoria, British Columbia, Canada

- **Prof. Daya Shankar Tiwary**

Department of Sanskrit, Delhi University, Delhi, India

- **Prof. Satyapal Singh**

Department of Sanskrit, Delhi University, Delhi, India

- **Dr. Ashok Kumar Mishra**

Assistant Professor (Vyakaran), S. D. Aadarsh Sanskrit College Ambala Cantt Haryana, India

- **Dr. Raj Kumar Mishra**

Assistant Professor, Department of Sahitya, Central Sanskrit University Vedavyas Campus Balahar Kangara Himachal Pradesh, India

- **Dr. Somanath Dash**

Assistant Professor, Department of Research and Publications, National Sanskrit University, Tirupati, Andhra Pradesh, India

Editors

- **Dr. Suneel Kumar Sharma**
Assistant Professor Department of Education, Shri Lalbahadur Shastri National Sanskrit University (Central University) New Delhi, India
- **Dr. Rajesh Sarkar**
Assistant Professor, Department of Sanskrit, Faculty of Arts, Banaras Hindu University, Varanasi, Uttar Pradesh, India
- **Rajesh Mondal**
Research Scholar Department of Vyakarana, National Sanskrit University, Tirupati, Andhra Pradesh, India
- **Dr. Sheshang D. Degadwala**
Associate Professor & Head of Department, Department of Computer Engineering, Sigma University, Vadodara, Gujarat

Assistant Editors

- **Dr. Shivanand Shukla**
Assistant Professor in Sahitya, Government Sanskrit College, Patna, Bihar, India | Constituent Unit : Kameshwar Singh Darbhanga Sanskrit University, Bihar, India
- **Dr. Shalendra Kumar Sahu**
Assistant Professor, Department of Sahitya Faculty of S.V.D.V, Banaras Hindu University (BHU) Varansi, Uttar Pradesh, India

International Editorial Board

- **Vincent Odongo Madadi**
Department of Chemistry, College of Biological and Physical Sciences, University of Nairobi, P. O. Box, 30197-00100, Nairobi, Kenya
- **Dr. Agus Purwanto, ST, MT**
Assistant Professor, Pelita Harapan University Indonesia, Pelita Harapan University, Indonesia

- **Dr. Morve Roshan K**
Lecturer, Teacher, Tutor, Volunteer, Haiku Poetess, Editor, Writer, and Translator
Honorary Research Associate, Bangor University, United Kingdom
 - **Dr. Raja Mohammad Latif**
Assistant Professor, Department of Mathematics & Natural Sciences, Prince Mohammad Bin
Fahd University, P.O. Box 1664 Al Jhobar 31952, Kingdom of Saudi Arabia
 - **Dr. Abul Salam**
UAE University, Department of Geography and Urban Planning, UAE
-

Editorial Board

- **Dr. Kanchan Tiwari**
Assistant Professor, Department of Sahitya, Uttarakhand Sanskrit University Haridwar,
Uttarakhand, India
- **Dr. Jitendra Tiwari**
Assistant Professor, Sahitya, Rashtriya Sanskrit Sansthan, Eklavya Campus, Radhanagar,
Agartala, Tripura, India
- **Dr. Shilpa Shailesh Gite**
Assistant Professor, Symbiosis Institute of Technology, Pune, Maharashtra, India
- **Dr. Ranjana Rajnish**
Assistant Professor, Amity Institute of Information Technology(AIIT), Amity University,
Lucknow, Uttar Pradesh, India
- **Dr. Vimalendu Kumar Tripathi**
Lecturer +2 High School, Bengabad, Giridih, Jharkhand, India

CONTENT

Sr. No	Article/Paper	Page No
1	स्वातंत्र्योत्तर मैथिली उपन्यासमे प्रकृति चित्रण डॉ. विनीत कुमार लाल दास	01-08
2	विद्यापति आ हुनक रचना संसार डा. श्रवण कुमार	09-16
3	मारवाड़ के शिलालेखों में आर्थिक चिंतन डॉ. रेखा गुप्ता	17-23
4	आजमगढ़ क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालय छोड़ने वाले छात्रों में योगदान करने वाले कारकों का अध्ययन विनीता सिंह, डॉ. नीता सिंह	24-35
5	यथार्थबोध: एक अध्ययन पूनम	36-40
6	रामायण एवं महाभारत में स्त्री अस्तित्व का समीक्षात्मक अध्ययन अखिलानन्द उपाध्याय	41-47
7	पृथ्वी की उत्पत्ति Praneet Kaur	48-64
8	Artificial Intelligence in India : A New Era of Digital Economy Dr. Neha Jaiswal	65-70
9	प्रथम प्रकारकातिशयोक्तयलङ्कारे गौणसाध्यवसानालक्षणायाः प्रयोजकहेतुता डॉ. सीता राम शर्मा	71-75

10	सहयोगात्मकाधिगमः डॉ. आरती शर्मा	76-79
11	चिन्ताऽवसादयोः स्वरूपं यौगिक समाधानानि च डॉ. सुनील कुमार शर्मा	80-84

स्वातंत्र्योत्तर मैथिली उपन्यासमे प्रकृति चित्रण

डॉ. विनीत कुमार लाल दास
स्नात्कोत्तर (मैथिली), स्वर्णपदक प्राप्त, नेट, पटना विश्वविद्यालय, पटना

Article Info

Volume 6, Issue 1

Page Number : 01-08

Publication Issue :

March-April-2023

Article History

Accepted : 10 Feb 2023

Published : 05 March 2023

लिखावटक वाह्य-स्वरूपक आधारपर लेखनक तीन प्रकार मानल गेल अछि – गद्य, पद्य आ दुनूक मिश्रित रूप चम्पू। गद्य साहित्यक एक भेद उपन्यासक कहल जाइत अछि। तँ उपन्यासक बुझबाक लेल सबसँ पहिले गद्य साहित्यक बुझब आवश्यक अछि।

मैथिली भाषा-भाषीक लेल ई गौरवक विषय अछि जे आधुनिक भारतीय भाषामे उपलब्ध सभसँ प्राचीन गद्य-ग्रंथ मैथिली भाषाक 'वर्णरत्नाकर' अछि। तँ मैथिली भाषामे गद्यक विकास बहुत पहिलेसँ भेल अछि। ज्योतिरीश्वरक बाद गद्य मैथिली भाषामे लिखब लगभग बन्दे जकाँ रहल कारण ज्योतिरीश्वरक बाद विद्यापति अपन रचना अवहट्ट आ संस्कृतमे गद्य रचना कयलाह तथा मैथिली भाषामे पद्यक रचना कयलाह मुदा गद्यक रचना मैथिली भाषामे नहि कयलाह।

मध्य-कालमे नाटकक युग छल मुदा ओहि कालमे सेहो मैथिली गीतेक बोलबाला रहल छल। ओहि कालक नाटकक मध्य मैथिली भाषाक प्रयोग कयल जाइत रहल जाहि मध्य मैथिली भाषाक प्रयोग देखबाक लेल भेटैत अछि। ओहि कालमे नेपाल आ आसाममे मैथिली नाटकक चलन जोर-शोरसँ छल मुदा ओहि कालमे कथा-साहित्यक उद्भव नहि भेल छल।

मैथिली साहित्यमे कथाक उद्भव संस्कृत भाषाक विद्यापतिक 'पुरुष परीक्षा' नामक नीति-विषयक कथाक पोथीक मैथिली अनुवादसँ भेल अछि आ जखन चंदा झा 'पुरुष परीक्षा'क मैथिलीमे अनुवाद कयलाह तखन ओहि समयक बुद्धिजीवि लोकनि हुनका देखा-देखी ओहो लोकनि संस्कृत भाषाक कथाक आन-आन पोथी सभक मैथिली भाषामे अनुवाद करय लागल छलाह जाहिसँ मैथिली कथा साहित्य समृद्ध होबऽ लागल छल मुदा ओहि समय 1888-89 धरि उपन्यासक नामोनिशान नहि छल।

उपन्यासक उद्भव 1900 ई.क बादसँ भेल अछि आ उपन्यासक प्रारंभिक समयमे कथा आ उपन्यासमे कोनो विशेष भेद नहि होइत छल। जकरा उपन्यास कहि संबोधित करल जाइत छल, वास्तवमे ओ कथे रहैत छल। जेना-जेना समय बितैत गेलैक तेना-तेना वस्तु-स्थितिमे परिवर्तन होइत गेलैक आ उपन्यास लेखनमे उत्तरोत्तर सुधार होइत गेल। आगू चलि क मैथिली आलोचना साहित्यक विद्वान लोकनि द्वारा उपन्यासक आलोचना करलापर ओहिमे सुधार करैत रहलाह जकर परिणाम आइ हमरा लोकनिक सोझा अछि। आइ मैथिली उपन्यास पूर्ण गतिसँ अपन विकासक पथपर अग्रसर अछि।

डॉ. दिनेश कुमार झा अपन पोथी 'मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास'मे उपन्यासक तत्त्वक संबंधमे लिखने छथि— "कलाक दृष्टिसँ उपन्यासक छओ टा तत्त्व मानल गेल अछि— कथानक, पात्र, संवाद, वातावरण, उद्देश्य एवं भाषा—शैली। कोनो श्रेष्ठ उपन्यासमे एहि छवो तत्त्वक समुचित संतुलन अनिवार्य मानल गेल अछि।"¹

उपन्यासक छओ तत्त्वमे एक तत्त्व वातावरण होइत अछि जाहिमे प्रकृति—चित्रण देखबामे आबैत अछि। प्रकृति—चित्रणमे खेत—खरिहान, बाध—बोन, नदी—नाला, पर्वत—सागर, प्रात—मध्यान्ह—साँझ, दिन—राति, सूर्य—चन्द्र, ऋतु आदिक चित्रण करल जाइत अछि। एहि दृष्टिसँ स्वातंत्र्योत्तर मैथिली उपन्यासकँ देखैत छी त बुझना जाइत अछि जे मैथिलीक अनेको एहन उपन्यास अछि जाहिमे प्रकृति—चित्रण देखबामे आबैत अछि।

योगानंद झाक 'भलमानुस' उपन्यासमे प्रकृति—चित्रण

"पोखरौनीक बीच गाममे एक पोखरि अछि। ओत' मोगियाही घाटपर भोरसँ दुपहर तक किछु ने किछु लोक रहिते अछि। सूर्योदयक पूर्वसँ गामक पुतोहु लोकनि चुपचाप डूब द' जाइत छथि। आ रौद—बसात भेलापर दस—एगारह बजे धरि गामक बेटी तथा वृद्धा लोकनिक भीड़ रहैत अछि। एहिठाम ने घाटक ठेकान छैक ने दारुक। कौखन दाइ—माइ लोकनि एकटा पतरका तखताक दारुकँ एम्हर घुसकाक' जाइत छथि तँ कोखन ओम्हर। आ घाट अछि सहरजमीनसं चारि—हाथ नीचाँ। सेहो उभड़—खाभड़। जखन सहरजमीनपर गधकिच्चनि भ' जाइत छैक तखन चढ़ै—उतरैमे सेहो परम कष्ट।"²

एहि ठाम प्रकृति—चित्रण पोखरिक चित्रणक रुपमे बड़ मनोरम दृश्य उपस्थित करल गेल अछि।

डॉ. लेखनाथ मिश्रक 'रंजना' उपन्यासमे प्रकृति—चित्रण

"चैतक भोर। अमैया बसात। लोक कँ निन्नक लेल आँखि खुजिते नहि रहैत छैक। पहर राति सँ कोइली जोर—जोर सँ कू कूक कूजन करए लगैत अछि। मुदा जेना सोलह वसन्तक पोसलि, दूधक धार सँ धोइलि गौरांगिनी अलसनयनाक नयन बिनु मद पिउने मातल झपलाइत रहैत छैक तहिना भोर मे प्राणीक आँखि खुजैत छैक आ' फेर सहजे मुना जाइत छैक। कतेक काजार्थी लोकनि नियारने रहैत छथि जे पहो नहि फाटल रहतैक कि तखने उठि कँ काज कए आएब, किन्तु पह फटैत उठबाक कोन चर्चा जे जँ केओ डेनो धऽ कऽ उठबए जाइत छन्हि तँ कहैत छथिन्ह आहाँ कँ हमरा सँ कोन शत्रुता अछि, हम नेहोरा करैत छी कनेक काल आओर सुतए दीअऽ। शीतल मन्द बसात मे दाकीक ढाकी निन्न आँखि पर अबैत छन्हि आ' नेना जकाँ ठोकि कऽ सुता दैत छन्हि।"³

एहि ठाम प्रकृति—चित्रण प्रात कालक चित्रणक संग ऋतुक चित्रण आ ओहि समय कोइलीक कूकक चित्रणक रुपमे करल गेल अछि।

पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक 'पोखरि रजोखरि' उपन्यासमे प्रकृति—चित्रण

"हेमजावाली खरहोरि सँ घूरि क' अएलनि तँ कोनटाक इनार पर हाथ पएर धोअ' लेल ठाढ़ भ' गेलीह। मुन्द्रिका डोल मे राखल जल सँ हाथ पएर धो सिमटी बला चबूतरापर चढ़ि गेलि। धम्म द' क' रस्सी सहित डोल इनार मे खसा देलकै। डोलक संग पानिक हलचल, तकर झनझनाइत स्वर हेमजावालीक करेज पर सदिखन लागै छनि, आइयो लगलनि। ओ हाथ पएर आ मुह धो पूब मुहे ठाढ़ि भेलीह। घनगर लीचीक गाछ पर चिड़इ चुनमुनी

कचबच करैत छल, लुक्खी ऊपर नीचा भगै छल। हेमजावाली जखन श्यामा रहथि तखन लुक्खी जकाँ गाछ पर चढ़थि उतरथि; लोक हिनकर तुलना लुक्खी सँ करनि।⁴

एहि ठाम खरहोरि, लीचीक घनगर गाछ आ ओहि पर लुक्खीक अवरजात सभ प्रकृति-चित्रणक हिस्सा अछि।

बिजेन्द्र कुमार मिश्रक 'कुचक्र' उपन्यासमे प्रकृति-चित्रण

" दिल्लीक हाल जुनि पूछू। जाड़ मे शोणित जमि जायत आ गर्मी मे देह घमा जायत। अखुनका समय बड़ बढ़िया छै, ने ओतेक जाड़ ने ओतेक गरम। बेशी स' बेशी एक मास धरि एहेन दोरस मौसम रहतै, ओकर बाद त' पंखा-कूलर सभटा फेल! मात्र ए.सी. वला सभ के जान बचल रहैत छैक।"⁵

एहि ठाम दिल्लीक प्रकृति-चित्रण एकदम सटिक अछि।

प्रदीप बिहारीक 'शेष' उपन्यासमे प्रकृति-चित्रण

"उगैत सुरुजकँ दोसर अर्घ्य पड़लाक कनिये कानक बाद घाट उदास होमऽ लगलैक। व्रती सभ अर्घ्य-प्रसाद उसरगलनि आ छोट-छोट बच्चा सभक अंगा-पेन्टक जेबी सभमे ठकुआ-भुसबा सँताय लागल। सभ अपन-अपन घाट परक ढाकी, केराक घौड़, कोसिया, कुड़बार उठा आँगन दिस बिदा भेल।"⁶

एहि ठाम प्रात, उगैत सूर्य आदिक चित्रण प्रकृति-चित्रण अछि।

सुरेन्द्र नाथक 'उसरगल लोक' उपन्यासमे प्रकृति-चित्रण

" जतय पहिने कुरथी, खेसाड़ी, गाम, कोदो आ मडुआ उपजैत छल ओतय धान गहूम होमय लागल। जतय धान आ गहूमक संग सब फसल उपजैत छल ओतय पानि बेशी लागला स' फसल खेते मे गल' लागल। एकहु आध-आछार पानि पड़ला पर ऊँच-नीचक सब फसल बाढ़ि मे दहाब' लागल। फँदा यैह भेल रहै जे आब बाढ़ि पहिने जकाँ नहि अबैत रहै मुदा जखन अबैत' पिछुलका सब रेकॉर्ड कँ तोड़ने आबै। जेना बहुत दिन स' जेल मे बंद कैदी के आजादी भेटलाक बाद घरक लेल सुरफुरी रहैत अछि तहिना बाधिन जकाँ गोंगियाबैत, घर-दुआर समेटैत आ लोक कँ पछाड़ैत अबैत छलै। लोकक जीह पर आब इहो चर्च होमय लागल रहै, "रौ, ई कोन आफत संग लगा देलकहु रौ। चौबे गेल छबे बन' आ दुवे बनि कँ आयल।"

एहि स' एक फँदा आओर भेल रहै। बाढ़ि जखन अबै, प्रखंडक नाट्यलीला देख' बला रहैत छलै। एहि नाट्यलीलाक सम्पूर्ण पात्र अपन-अपन गाना- बाजाक संग उतरि जाइत छलै। किछु स्थानीय आ किछु राजधानीक महान कलाकार सब के देखबाक मौका लगैत छलै। निरीक्षण भवन मे आसमान स' उतरल देवताक शोकाकुल आ नटकिया पोतल मुँह देखैत बनैत अछि। गाड़ीक पी-पी बढि जाइत अछि। आकाश मे हेलीकॉप्टर मंडराब' लगैत अछि। जनताक करुण पुकार शुरु भ' जाइत अछि। बिना मांगने भोजन, वस्त्र आ रहबाक ठौर भेटि जाइत अछि। गुम्नो लोकक मुँह खुजि जाइत अछि। आ अंत में, सब कँ दर्शन दैत, आश्वासनक बेर-बेर हाथ डोलाबैत देवता अन्तर्ध्यान भ' जाइत अछि।

एक समय रहै। बेर-बेर बाढ़ि अयला स' उपज बढ़ैत छलै। बाढ़िक गादि आ पाँक स' खेतक उर्वराशक्ति बढ़त रहै। रासायनिक खादक काज नहि पड़ै। बाढ़ियो अयबाक समय आ सीमा बुझल-गमल रहै। एकहि बेर

बाँसक—बाँस भरि छकल पानि नहि दौड़ि जाइत रहै। लोको एतेक नहि मरैत रहै। जहिया स' बान्ह बनलैए तहिये स' सब आफत बढ़लैए। अनिश्चितताक अन्हार पसरि गेलैए। बुझले नहि रहै छै जे कखन बाढ़ि एतै। कतेक पानि रहितै। बाढ़ि आबहु वला रहैत छै त' प्रशासन बीच मे टपकि जाइत छै। अनेरोक भविष्यवाणी करैत डराबैत रहै छै। फेर आश्वासनो दैत छै जे घबड़यवाक बात नहि छै। प्रशासनक काज युद्ध स्तर पर चलि रहल छै।⁷

एहि ठाम बाढ़िक विभिषिकाक चित्रण प्रकृति—चित्रणक उत्कृष्ट नमूना अछि।

मधुकान्त झाक 'स्वेदजीवी' उपन्यासमे प्रकृति—चित्रण

“रातिक एक बाजि गेल। समीपक करखानाक साइरन चिकरि के शान्त भऽ गेल। मिथिल जी के निन्न नहि भऽ रहल छलनि। बैसखा रौदमे भरि दिन धीपल एहि सेडक टीनही छतसँ जेना एखनहुँ आगि बरसि रहल छल। ओछाइन पसेनासँ थालम—थाल भऽ गेल छनि। देह घामक धारमे जेना कतहु बहि हेरा गेल छनि। उमस भरल एहि कलकतिया गर्मीसँ बेचौन भऽ उठल छथि मिथिल जी।⁸

एहि ठाम प्रकृति—चित्रणमे गर्मीक चित्रण करल गेल अछि।

मधुकान्त झाक 'ममता जोगी' उपन्यासमे प्रकृति—चित्रण

“पछिला साल भादवक पश्चात ग्राममे वर्षा नहि भेल। हथिया नक्षत्र फेर दगाबाजी कयलक। अगहन मे धान कटबाक बदला लोक दरबज्जे—दरबज्जे फकसियारि कटैत फिरैत रहल। मरहन्ना पड़ल धान कटनिहार जन—मजूर नहि भेटैत छलैक। स्थिति एतेक खराप भऽ गेलैक जे लोक चर—चाँचर मे धानक सुखायल डाँट मे आगि लगा खेतकँ उग्रास करबाक प्रयास शुरू कयलक। जकरा पछिला वर्षक किछु अन्न घरमे बाँचल छलैक से तँ कोनो ना दिन—कटैत छल। लेकिन सय मे नब्बे—लोकक घरमे दुनू साँझ चूल्हा जरब आस्ते—आस्ते बन्न हुअय लगलैक। जन मजूरकँ लोक बोनि कतय सँ देत जे खेती करत ताहि चिन्ता मे किसान मरल जाइत छलाह। गाम सँ कुक्कूर बिलाड़ि पड़ाय लगलैक। पोखरि झाँखरिक पानि सूखा लगलैक। जल्दी—जल्दी लोक खरसी—बकरी, गाय—बाछी बेचय लागल। माल—जालकँ पानि आनि कतय सँ पियाओत से समस्या भऽ गेलैक।⁹

एहि ठाम प्रकृतिक मारिसँ लोक कोनो बेहाल रहैत अछि, से एहि प्रकृति—चित्रणमे देखबामे आबैत अछि। जल जे जीवनक लेल अतिमहत्वपूर्ण वस्तु अछि, तकर अभावमे कोनो लोक आ माल—जालपर प्रभाव पड़ैत अछि, तकर चित्रण बड़ सजीव रूपँ कयने छथि।

आशा मिश्रक 'उचाट' उपन्यासमे प्रकृति—चित्रण

“फागुनमे यत्र—तत्र फूल सभ पर तितली उड़ैत—बैसैत रहैत छलै। भरि—भरि दिन छोँड़ा सभ संगे तितली पकड़ैत छल। चैतक मास अगिलगगीक होइत छलै। बाबी चैतमासकँ उतपतिया मास कहथि। आबि गेल चैत उतपतिया। धुक्कड़, बिहाड़ि आ अगिलगगीक मास। आकाश लाल होइतहिं केओ चिचिया उठैत छल— फल्लां गाममे आगि लगलै। सब पुरुष बाल्टी—डोल उठा—उठाक' ओहि गाम दिस दौड़ैत छल। आमक मास भरि—भरि दिन टिकुले बिछैत बीति जाइत छलै। रातिमे कनी जोरसँ हवा, बिहाड़ि उठल नहि कि बाबीक संग चारु भाइ—बहीन चंगेरी ल' क' कलम पहुँच जाथि।¹⁰

एहि ठाम प्रकृति लोककें आनंद आ दुख दुनू दैत अछि। आशा मिश्र प्रकृति-चित्रण करबामे सिद्ध-हस्त बुझना जाइत छथि। खन आनंद आ खन दुखद स्थितिक चित्रण करब साधारण बात नहि होइत अछि।

साकेतानंदक 'सर्वस्वांत' उपन्यासमे प्रकृति-चित्रण

"फेर बरखा। धारासार। कखन भोर भेल, कखन साँझ, पता लगायब मोसकिल। कखनहुँ बुनछेको होइत अछि तँ ओ झमटगर बरखाक भूमिका बनि जाइत अछि। ई बदरी कहिया सँ लधने अछि, लोक कँ मोन नहि छै। ओना ई कहब ठीक हैत जे अइ बेर रामवनमी सँ जे लधान लधलक से आब तँ दशमी लगिचियेलै। छै एखन दू मास, लेकिन अइ बेर की दशहरा हैत? ई बरखा छोड़त तखन ने दशमी कि दिवाली? झलबा झा कँ होइ छलनि जे आइ जरूर उबेर हेतै। उबेर हेतै आ ओ बाध दिस जेता। बाध जायब जरूरी छनि। खेत देखब जरूरी छनि। आर्दरा बीति रहल छै आ एक्को बेर बाध नहि जा सकला। ई पानि जे ने कराबय। घरो सँ निकलब पराभव। रोज अहल भोरिये उठैत छथि। राति तँ सहजहिं निन्दे ने भेलनि। अधरतिया मे आँखि लगबो कयलनि तँ तेहन ने ठनका आ पानिक संग बतास जे झटका सँ चादरि भीज' लगलनि, आ आँखि खूजि गेलनि। तँ पौ फटै सँ किछु पहिने, जँ कि कने फड़िच्छ भेले कि छाता ल' क' विदा भ' गेला। मंदिरक इनार पर मुँह धोइत ओ आकाश दिस तकलनि। कत्तहु नीलक दर्शन नहि, धूसर मेघ तराउपरी। मंदिरक बगल अपन खोपड़ी मे गनेसी चुक्कीमाली बैसल सभ दिन जकाँ पराती टेरने छल। पता नहि गनेसी बुढ़बाक एक बाकुट देह मे कते दम छैक जे एते जोरक टाहि मारैए—“हे भोला नाथ, कखन हरब दुख मोर।”

“गनेसी।”

‘के पंडीजी?’ बुढ़बा कँ सूझे नै छै। मुदा आवाज आ पयरक आहटे सँ ओ भरि गाम कँ चीन्है छै।

“हँ, गनेसी। ई पानि छुटबो करतै हौ?”

“ई पानि?” अपन दंतहीन मुँह सँ ओ भभा क' हँसैत अछि।

“सूरदास अब बूड़त है बिरिज।” गनेसी फेर हँसैत अछि।

“हँसै छ' गनेसी? एते वयस भेल' देखने रहक कहियो एहन बरखा?”

“पड़ल रहै, अहूँ सँ बेसी। अहाँ आउर के जलम सँ पहिने। तहिया हम आ करिया कड़गर जुआन रहियै।”

“कहियाक गप्प करै छ' बुढ़ा?”

“भुइकंपक साल सँ पहिले। खंड-परलय होइत-होइत बचलै। ओइ साल कोसी अहूँ गाम कँ दोमि देलकै। अखड़ाहाक सड़क पर करिया एगारह सेरक रहु पकड़ने रहय। कमो सँ कम छओ मास धरि तँ बदरी लधनहि रहलै।”¹¹

एहि उपन्यासमे उपन्यासकार प्रकृति-चित्रण वर्षा-कालक चित्रण करैत ई देखयबाक प्रयास कयने छथि जे मिथिलामे वर्षा-कालमे केहन स्थिति बनल आ बनाओल जाइत छैक? एक त अनवरत वर्षा आ उपरसँ बाढ़िक प्रकोप! एहन स्थितिमे लोक ओकरा झेलैत अछि। ई कम बड़का बात नहि छै।

गौरीनाथक 'दाग' उपन्यासमे प्रकृति-चित्रण

"कोइली कुहुकि रहल छै-कू-कू कूSSS...!

एक टा आमक झमटगर गाछ केर कतेको डारि मे कतेको झूला लागल छै। सब झूला पर मारते छौंड़ा-छौंड़ी पेंग मारैत झुलि रहल है। एक टा झूला पर सुभद्रा सेहो झुलि रहल यए।

किछु छोट-छोट बच्चा सब एक टा खोपड़ी मे कनियाँ-वर बनि बियाहक खेल खेला रहल गए। झूला पर सँ उतरि सुभद्रा वर-कनियाँ बनल बच्चाक गाल धपधपाबै यए। फेर घुरिक' अपन झुला पर चढ़ि खूब जोर-जोर सँ झुल' लगै यए। आकाश-पाताल बीच पेंग मारैत झुला झुल' मे बेसुध भ' जाइ यए ओ।

अचानक कारी-कारी मेघ उमड़ि-घुमड़ि अबै छै। हवाक तेज झोंका, धूरा-गर्दा उड़ब' लगै छै। टिपिर-टिपिर पानि पड़' लगै छै।"¹²

एहि ठाम उपन्यासकार ग्रीष्म ऋतुक वर्णन बड़ सजीव रूपे कयने छथि।

डॉ. विद्यानाथ झा 'विदित'क 'मानव-कल्प' उपन्यासमे प्रकृति-चित्रण

"सहरगंज। कोशिकन्हाक एकटा पैघ झमटगर गांव। तीस हजारक लगान आबादी। एके गाममे दू-दूटा पंचायत। दूटा प्राथमिक विद्यालय एकटा मिडिल स्कूल। एकटा बिना मंजूरीक मोसफरकाती हाइ स्कूल आ बिना डाक्टरक एकटा प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र आ दूटा राशनक दोकान। समय-समय पर स्कूल आ अस्पतालमे प्रजातंत्रक गहबर बनैत चारिटा बूथ।

एक समय छल जहिया एहि गामक लोक धानक बखारे कहैत रहथि। असगरे ऐ गामक चारु चओरमे ततेक ने धान उपजैत छल जे ओहि से एकटा जिलाक के कहय जे आधा प्रदेशो यदि भरि वर्ख एकरे चाउर खाइत रहितय, तँ तैयो ई अन्नपूर्णाक भंडार नहि घटैत। परन्तु ई तँ कोशीक अबाहि सँ पूर्वक गप्प थिक। आई तँ एहू गाममे गरीबी रेखासँ नीचा रहयबला परिवारक संख्या पांच हजारसँ कम नहि अछि।

काल बडु निष्ठुर, निर्मम आ क्रूर होइत अछि। परिवर्तनक अपन एहि विलक्षण सामर्थ्यसँ ई संसारक प्रत्येक वस्तुक आकार-प्रकार बदलैत रहैत अछि। चाहे ओ गांव हो अथवा लोक। कालक क्रीडामे कोनो वस्तुक अपवाद नहि अछि। वास्तवमे एहि "परिवर्तिनि संसारे"सँ कालक उपस्थिति आ आकृतिक पता सेहो चलैत अछि आ एहीसँ ओकर महत्वो सिद्ध होइत अछि।

कालक एहि परिवर्तन-शक्तिक जीवन्त उदाहरण थीक सहरगंज। पहिने जो समतोला जकाँ गोल आ सोहनगर आकृतिमे एकेठाम बसल छल, घरपर घर छल, एकदम सटल आ गसल। से कोशीक कटानक कारण बुझ छहोछित्त भऽ गेल। काल आ कोशी दुनू जेना सिखाबुद्धी कऽ ओहि समतोलाक छिलका उतारि ओकर सबटा फांककँ अलग-विलग कऽ देलक।

वर्तमान सृष्टिक सम्बन्धमे ई मान्यता प्रचलित अछि जे ई पृथ्वी पहिने पानिमे डूबल छल तकरा वराह भगवान अपन थुथुनसँ उठाकऽ ऊपर अनलनि आ तकरा पुनः अपन सामर्थ्यसँ पानिएपर स्थिर कैलनि। तकरो उदाहरण थीक सहरगंज। पृथ्वीक सृष्टि एकबेर भेल आ से तहियेसँ चलि रहल अछि परन्तु ई गाम तँ कोशीक

अवाहिमे प्रतिवर्ष साओन-भादवमे जल-समाधि लऽ लैत छल आ दुर्गापूजाक ढोल सुनियेकऽ फेर नहु-नहु पानि सँ ऊपर अबैत छल। फेर वैह रामा वैह खटोलबा। अगहन अबैत-अबैत फेर वैह गांव यथापूर्वमकल्पयत् कँ सार्थक करैत बसि जाइत छल। सहरगंजक निवासी प्रतिवर्ष होमयबला एहि अठमस्सू सृष्टिक साक्षिए नहि तकर अभ्यासी बनि गेल छलाह।¹³

एहि उपन्यासमे प्रकृति-चित्रण वर्तमानक नहि अपितु भूतकालक अछि। पहिले केहन प्रकृतिक दृश्य रहैत छलैक आ आब केहन भ गेल छैक, तकर नीक चित्रण देखबामे आबैत अछि।

रमानंद रेणुक 'उत्तर जनपद' उपन्यासमे प्रकृति-चित्रण

"बाध मे खेत सभक माटि कहि रहल छलैक जे खेत बेस उपज वाला छलैक। सभ खेत मे खेसारी अथवा मसुरीक बेस घनगर डाँट छलैक। अधिकांश आड़ि-धूर जकाँ भरि ठेहुन, भरि जाँघक जाहि पर खूब झमटगर राहड़िक गाछक दू पँतियानी। दुनू पँतियानी अपन-अपन खेत दिस ओलरल। बेस फुलायल आकि पुष्ट छीमी सँ लदफद।

कोनो-कोनो आड़ि कम ऊँचक आ राहड़ि बिहीन। ओही आड़ि पर दऽ कऽ ओ सभ आगाँ बढ़त गेल। ई बुझबा मे ओकरा कनियो भाडठ नहि रहलैक जे खेत मे धानक फसिल बेस जबरदस्त होइत छलैक आ ओही मे छिट्टा दऽ कऽ खेसारी-मसुरी आकि बूटक खेती गृहस्थ करैत छल।

कतहु-कतहु एकाध कोलाक खेसारी उजाड़ल छलैक। भरिसक महींसक घासक निमित्तें उखाड़ि लेल गेल होयतैक।¹⁴

एहि उपन्यासमे उपन्यासकार अपन वर्णन-कलाक परिचय दैत वर्तमान आ भूत दुनू कालक प्रकृतिक चित्रण क ई प्रमाणित क देने छथि जे अवसरक उपयोग कोना कयल जाइत अछि।

सुभाष चंद्र यादवक 'गुलो' उपन्यासमे प्रकृति-चित्रण

" कंदाहावली कए नव रोजगार भेटलइ-ए। मलहदक चाँप मे मखानक कमौनी। नौ बजे सए तीन बजे धरि भरि टेंगहुन पानि मे ढूँकि कए मखान महक भाकन, करमी, डोका आ घोंघा बीछ कए बाहर करय पड़इ छै। एक सय टाका रोज भेटै छै। कंदाहावली भोरे भानस करइ-ए। कुइछ खाय कए कमौनी करय चलि जाइए। घूमि कए एला पर नहाइ-ए। सौंसे देह करु तेल लगबइ-ए। करु तेल नोचनी मारै छै। अदहा घंटा पएर मोड़इ-ए। फेर आरा चलि जाइए। खेत मे कतौ-कतौ तोड़ी के छिट्टा देल छै, से बीछइ- ए। चिकना पाँच-सात दिन मे उखाड़इ वला भाए जेतै।

रिनियाँ मनसुआयल-ए। आइ डोका के मौस खायत। कंदाहावाली कहि कए गेल छै डोका लेने एतै। लेकिन डोका नै भेलै। ऊ घोंघा लेने एलै। घोंघा छोट होइ छै।¹⁵

एहि ठाम उपन्यासकार मिथिलाक प्रकृतिक चित्रण कयने छथि।

जगदीश प्रसाद मंडलक 'पंगु' उपन्यासमे प्रकृति-चित्रण

“मिथिलांचल सभ दिन धार-धुरक इलाका रहबे कएल अछि। दर्जनो धार मिथिलांचलक बीच अछि। ओहू धार-धूरमे सभ धारक गति-विधि एके रंग सेहो नहि अछि। किछु धार एहेन अछि जे बेसी काट-खोट करैए आ किछु एहेन अछि जे बहेत तँ अछि सालो भरि मुदा समटल गतिये। तैसंग मरल धार सेहो अछि। मरल धारक माने भेल, ओहन धार जे बरसातमे तँ किछु दिन बोहितो अछि मुदा रहैए सभ दिन सुखले। जइसँ ने ओइ जमीनमे उपजा-बाड़ी होइए आ ने उपयोगक कोनो दोसरे काज। तैसंग माटिक रूपमे सेहो दुर्भाग्य रहल अछि जे उपजाउ माटि माने उर्वर शक्तिबला खेतक माटि भँसि गेल आ ओकरा ऊपर दोखरा बाउल भरि गेल।

कोसी-कमला नदीक उपद्रव सबहक सोझमे छेलैहे। ओकरो रोक-थामक लेल मिथिलाक किसान उठि कऽ ठाढ़ भेला। कोसी नदीकेँ दुनू भागसँ बान्हि ओइ पानिक उपयोग सिंचाइ-ले करैक योजना बनल।”¹⁶

अन्तमे निष्कर्षक रूपमे कहि सकैत छी जे बड़ कम्मे रचनाकार होयताह जे अपन औपन्यासिक रचनामे प्रकृति-चित्रण नहि कयने होयताह। सभ अवसरक ताकमे रहैत छथि। जिनका जेहन दृश्य देखबामे आबैत छनि ओ ओहन दृश्यक चित्रण अपन-अपन रचनामे कयने छथि।

संदर्भ सूची

1. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. दिनेश कुमार झा (तेसर संस्करण 2007), मैथिली अकादमी, पटना; पृष्ठ संख्या – 130
2. भलमानुस – योगानंद झा, (दोसर खेप 1989), मैथिली अकादमी, पटना; पृष्ठ संख्या – 104
3. रंजना – डॉ. लेखनाथ मिश्र, (दोसर खेप 1989), ज्योति प्रकाशन, पौना, मधुबनी; पृष्ठ सं. – 26
4. पोखरि रजोखरि – उषाकिरण खान (2017), शेखर प्रकाशन, पटना; पृष्ठ सं.– 21
5. कुचक्र – बिजेन्द्र कुमार मिश्र (2004), चामुण्डा प्रकाशन, गंधवारि, मधुबनी; पृष्ठ सं. – 11
6. शेष – प्रदीप बिहारी (2012), चतुरंग प्रकाशन, बेगुसराय; पृष्ठ सं. – 07
7. उसरगल लोक – सुरेन्द्र नाथ (2017), नवारम्भ, पटना; पृष्ठ सं. – 22
8. स्वेदजीवी – मधुकान्त झा (2008), शेखर प्रकाशन, पटना; पृष्ठ सं.– 15
9. ममता जोगी- मधुकान्त झा (2012), मनोरमा प्रकाशन, पटना; पृष्ठ सं. – 111
10. उचाट – आशा मिश्र (2010), तूलिका प्रकाशन, दरभंगा; पृष्ठ सं. – 78
11. सर्वस्वांत – साकेतानंद (2003), राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पटना; पृष्ठ सं. – 7
12. दाग – गौरीनाथ (2012), अंतिका प्रकाशन, गाजियागाद, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ सं. – 109
13. मानव-कल्प – डॉ. विद्यानाथ झा 'विदित' (2008), प्रस्तुति प्रकाशन, दुमका, झारखण्ड; पृष्ठ सं. – 21
14. उत्तर जनपद – रमानंद रेणु (2003), कर्णगोष्ठी, कोलकाता; पृष्ठ सं. – 59
15. गुलो – सुभाष चंद्र यादव (2015), किसुन संकल्प लोक, सुपौल; पृष्ठ सं. – 36
16. पंगु – जगदीश प्रसाद मंडल (2018), पल्लवी प्रकाशन, सुपौल; पृष्ठ सं. – 66

विद्यापति आ हुनक रचना संसार

डॉ. श्रवण कुमार

ओल्ड पी.जी. कैम्पस, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

Article Info

Volume 6, Issue 1

Page Number : 09-16

Publication Issue :

March-April-2023

Article History

Accepted : 10 Feb 2023

Published : 05 March 2023

सारांश - मिथिला विभूति आ बिहारक गौरव विद्यापतिक बहुआयामी व्यक्तित्व संपूर्ण भारतीय परिवेश मे विद्वान आ आमजन के बीच विचारणीय रहल अछि। विद्यापति कविक-कवि मानल जाइत छथि। ओ नीतिशास्त्री, परंपरावादी छलाह किन्तु यथार्थवादी आ सुधार-वादियो छलाह। विद्यापति संस्कृत, अवहट्ट, मैथिली एहि भाषा मे रचना कयने छलाह। हुनक रचना सँ बंगाल, उड़ीसा, आसाम, नेपाल प्रभावित छल। विद्यापति केँ कोनो सीमा मे बाँन्हि कऽ आंकलित करबाक अर्थ होयत जे विद्या के विद्यापति सँ अलग करब। शृंगार रस होइ या भक्ति रस, नीतिशास्त्र होइ या दार्शनिक चिंतन आम लोकक संदर्भ मे विद्यापति एहि सब क्षेत्र मे भारतीय जनमानस के प्रभावित कयलनि।

विद्यापतिक समय राजनीति आ सांस्कृतिक दृष्टि सँ संक्रमणक समय छल। मुस्लिम शासक वर्गक प्रभावक कारणेँ राजनीति, समाजिक आ अर्थव्यवस्थाक क्षेत्र मे व्यापक परिवर्तन भऽ रहल छल। हिंदू-इस्लामी सांस्कृतिक प्रभाव बढ़ि रहल छल। विद्यापति एहि सभ सामाजिक विरोधपूर्ण परिस्थितिसँ अवगत छलाह। ओ राजा, सामंत आ आम लोग सभक बात कयलनि। विद्यापति जतेक सत्ताक करीब छलाह ओतने आमलोकक नजदीक सेहो छलाह। ओ आइयो समाजक सब वर्गक बीच लोकप्रिय छथि।

बंगाल, बिहार एक समय मे बौद्धिक परिचर्याक प्रमुख स्थल छल। वस्तुतः नदिया विश्वविद्यालयक प्रादुर्भाव सँ पूर्व बंगाल विद्वान सभ स्मृतिशास्त्र, नव्यन्याय आ मीमांसा पढ़बाक लेल मिथिला आबैत-जाइत रहैत छलाह। संस्कृत विद्याक साथे-साथ महाकवि विद्यापतिक वैष्णव भक्ति पदावली सेहो बंगाल पहुँचल। चौतन्य विद्यापति सँ प्रभावित छलाह। चैतन्यक चरित्रामृत सँ स्पष्ट अछि जे ओ विद्यापति आ चंडीदासक भक्ति गीत सँ अधिक प्रभावित छलाह :-

“विद्यापति चंडीदास श्री गीतगोविंदम एइतिनगी तेकरे प्रमुख आनन्द”

वैष्णव संतक प्रभावक कारणेँ विद्यापति बंगला साहित्यक अंग बनि गेलाह। कृष्णदास, नरोत्तमदास, ज्ञानदास, राजशेखर, नरहरिदास, गोविंददास सभ गोटे विद्यापतिक अनुकरण कयलाह। विद्यापतिक पदावली बंगला मे एते बेसी लोकप्रिय छल जे लोग हुनका बंगलाक कवि मानय लागल। सभ सँ पहिले जॉन बीम्स सन 1873 ई. मे ई विचार व्यक्त कयलनि जे विद्यापति बंगालक नदिया जिलाक निवासी छलाह। बंगाली परंपराक अनुसार हिनक असली नाम बसंत राय आ पिताक नाम भवानंद राय छल आ हुनक जन्मभूमि बंगालक यशोहर जिलाक वर्णाटोर ग्राम मे बताओल गेल छल। बीम्सक विचार भ्रामक छल। 1875 ई. मे पिंडारूछ (दरभंगा) सँ मिलल ताम्रपत्र सँ सिद्ध भेल कि विद्यापतिक असली नाम विद्यापतिये छल आ हुनक जन्मभूमि बंगाल

नहि बल्कि वर्तमान मधुबनी जिला बिस्फी ग्राम छल। एहि ग्राम के ओ अपन प्रिय शासक महाराज शिव सिंह सँ प्राप्त कयने छलाह। ई उपर्युक्त विचार राख्यबाला श्री रामकृष्ण मुखोपाध्याय पहिल बंगाली विद्वान छलाह। बीम्सो हिनक विचार मानबाक लेल बाध्य भेलाह। सन 1881 मे प्रसिद्ध भाषाविद् अब्राहम ग्रियर्सन 'पंजी-प्रबंध' आधार पर विद्यापतिक पूर्वजक नाम 'मैथिल क्रिष्टोमैथी'क नाम सँ प्रकाशित कयलाह। ग्रियर्सनक विचार के म. म. हर प्रसाद शास्त्री, जस्टिस शारदा चरण मिश्र, वीरमेश दत्त, श्री नरेंद्र लाल गुप्त जेहन विद्वान सभ स्वीकार कयलनि। एहि प्रकारँ हिनक जन्म संबंधी विवाद समाप्त भेल। सभ गोटे स्वीकार कयलनि जे विद्यापति मिथिलाक बिस्फी गामक निवासी छलाह। विद्यापतिक एक टा पंक्ति एकर स्वयं एक टा अकाट्य प्रमाण सेहो अछि—

“पंचगौड़ाधिप शिवसिंह भूप कृपा करि लेले निन पास।

बिस्फी ग्राम दान कएला मोहि रह इत राज सनिधाम।।”

कमोबेश ई कहि सकै छी जे विद्यापति 15म शताब्दीक छलाह। विद्वान सभ विद्यापतिक जन्मतिथि सुलझेबाक प्रयास कयलनि। सतीश चंद्र राय हिनक जन्मतिथि 1380 ई., डॉ. राही दुल्ला 1390, म. म. परमेश्वर झा 1374, शिव नंदन ठाकुर 1334, आ विमान बिहारी मजूमदार 1380 ई. मानैत छथि। मिथिलाक ख्याति प्राप्त विद्वान म. म. उमेश मिश्र, डॉ. जयकांत मिश्र हिनक जन्म काल 1360 ई., डॉ. सुभद्रा, खगेन्द्र नाथ मिश्र आ विमान बिहारी मजूमदार विद्यापतिक जन्म 1380–1460 ई. मानै छथि। रमानाथ झा लिखने छथि— विद्यापतिक जन्म 1350 ई. मे बिस्फी मे भेल छल। एहि सँ स्पष्ट अछि कि विद्यापतिक वास्तविक जन्मतिथिक बारे मे विद्वान सभक बीच मतभेद अछि। मिथिला मे प्रचलित परंपरा अनुसार विद्यापति 1360 ई. सँ 1477 ई.क बीच जीवित छलाह। ग्रियर्सन सेहो मानै छलथि जे विद्यापति 15म शताब्दीक प्रारंभ मे जीवित छलाह।

विद्यापति एहन परिवारक सदस्य छलाह जे पछिला चारि-पाँच शताब्दी सँ मिथिलाक बौद्धिक नेतृत्व दैत रहल छथि। हिनक परिवार धर्म शास्त्रीय ज्ञान क्षेत्र मे अपन विशिष्ट पहचान बना चुकल छलाह। हिनक परिवार मे मंत्री छलाह कर्मादित्य भावादित्य, वीरेश्वर आ चंडेश्वर। हिनक पिता गणपति ठाकुर छलाह। बचपने सँ विद्यापति कुशाग्र बुद्धि सँ युक्त छलाह। महामहोपाध्याय हरि मिश्र विद्यापतिक अध्यापक छलाह आ म. म. पक्षधर मिश्र हिनक सहपाठी।

विद्यापति अपन पिताक संग राजा गणेश्वरक दरबार मे आबैत—जाइत छलाह। राजा गणेश्वरक बाद कीर्ति सिंह राजा बनलाह। विद्यापति राजा कीर्ति सिंहक दरबारक सदस्य छलाह। मध्यकाल राजनीतिक आ सामाजिक दृष्टिकोण सँ संक्रमणक युग छल। राजनीतिक परिवर्तन अर्थव्यवस्था, समाज आ संस्कृति के प्रभावित कऽ रहल छल। विद्यापति एहि सब तथ्य सँ परिचित छलाह। ओ समकालीन परिस्थितिक अनुरूप कतेको क्षेत्र मे योगदान देलाह। विद्यापतिक अधिकांश जीवनकाल राजाश्रय मे बीतल। ओइनिवार वंशक शासक हिनक आश्रयदाता छलाह। कीर्तिलता मे विद्यापति बड़ गर्व सँ कहने छथि—

“ओइनि वंश प्रसिद्ध जग कर दूर सेव।

दुहू एक्कल न पाविअइ गुअबई अरु भूदेव।।”

विद्यापति अपन रचना मे ओइनिवार वंशक शासकक जिक्र त केनहि छथि साथहिं हुनका प्रति आदरभाव सेहो समर्पित कयने छथि। कीर्ति सिंह, भव सिंह, देव सिंह, पद्म सिंह आ कतेकोक जिक्र हिनक रचना मे स्पष्ट भेल अछि।

विद्यापतिक युग संक्रमणक युग छल। ई स्वाभाविके छल जाहि सँ हुनका अनेको दिस ध्यान आकृष्ट करय पड़लैन। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक सब पक्ष पर हिनका ध्यान छलनि आ ताहि रूपे रचना कयलनि। ताहि कारणँ विद्यापति के 'संधि कवि' सेहो मानल जाइत अछि। एक एम्हर ओ शास्त्र निर्माण करैत छलथि त दोसर एम्हर 'बेसिल बयना' पर ओतबे

अधिकार राखैत छलथि। विद्यापति साहित्यकार, संगीतकार आ लोक भाषा मैथिलीक प्रकांड विद्वान छलाह। संगहि ओ ओइनवंशक इतिहासकारक रूप मे सेहो जानल जाइत छथि।

विद्यापति मैथिल ब्राह्मण छलाह। श्रुति, स्मृति, इतिहास, पुराण, दर्शनशास्त्र, राज्य सिद्धांत आदि सब विषय के विद्यापति आ हुनक पूर्वज ख्याति प्राप्त विद्वान छलाह। ओइनवार वंशक प्रभावे ओ कतेको ग्रंथक रचना कयलाह। सबसँ बेसी रचना ओ संस्कृत मे कयलाह जे बहुतो विषयक छल जेना— धर्मशास्त्र, विधिशास्त्र, नीतिशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, भू-परिक्रमा, पुरुषपरीक्षा, लिखनावली, दुर्गाभक्तिरंगिणी, विभागसार आदि पुस्तकं कीर्तिलता आ कीर्तिपताका अबहट्ट देसी भाषा मे अछि। विद्यापतिक पदावली मैथिली भाषा मे अछि।

कीर्तिलता मे विद्यापति कीर्तिसिंहक वीरताक उल्लेख कयने छथि। ओहि मे ओइनवार वंशक शासक कीर्तिसिंह आ वीरसिंहक संबंधित कथा अछि। कीर्तिलता बिहार आ जौनपुरक बीच राजनीतिक आ सांस्कृतिक संबंध पर प्रकाश दैत अछि। कीर्ति लता मध्यकाल मे व्याप्त नैतिक पतन सँ संबंधित तथ्य के सेहो उजागर करैत अछि। शर्की राजवंशक राजधानी जौनपुर ओ ओतुका शासकक आक्रमक वर्णन सेहो एहि मे कयल गेल अछि। मध्यकालीन नगर, सैनिक व्यवस्थाक अतिरिक्त प्रकृति आ पर्यावरण सँ संबंधित जानकारी सेहो एहि पुस्तक मे देल गेल अछि। उदाहरणस्वरूप बगीचा, पुल, बांध, पोखरि आ जौनपुरक वेश्या सभक वर्णन अछि। आदिकालक गद्य परंपरा मे लिखल ई उत्कृष्ट रचना मानल जाइत अछि। कीर्तिलता मे कीर्ति सिंहक दानशीलताक प्रशंसा अछि। वीरपुरुषक लक्षण बताओल गेल अछि। पुरुषत्व (पुरुषार्थ) सँ पुरुष होइत अछि। खाली पुरुष योनि मे जन्म ल लेला सँ कियो पुरुष नहि बनि जाइत अछि। मिथिला नरेश योगेश्वर आ गणेश्वरक प्रशंसा एहि पुस्तक मे अछि। जौनपुर ख्याति बड़ छल। व्यापार-व्यवसाय समृद्ध छल। फारसी साहित्य मे जौनपुर के सिराज-ए-हिंद कहल गेल। राजा असलानक उल्लेख अछि। अंततः कीर्तिसिंह परास्त कयलनि। विद्यापति लिखने छथि— राजनीति मे हिंदू मुसलमान दुनू शासक के सहायता लय छलथि। कवि आ साहित्यकार विद्यापति कीर्तिलता मे कीर्ति सिंह आ अन्य राजनीतिक, सामाजिक आ आर्थिक पक्षक जानकारी दैत छथि ओ इतिहासकारो मानल जा सकैत छथि।

कीर्तिपताका :-

विद्यापति द्वारा लिखित ई पुस्तक अपना आप मे अद्भुत अछि। म. म. हर प्रसाद शास्त्री के ई पुस्तक नेपाल सँ प्राप्त भेल छल। ई अबहट्ट भाषा मे लिखल गेल अछि। कतहु-कतहु संस्कृत शब्दक प्रयोग सेहो करल गेल अछि। एहि मे शिव सिंहक युद्धप्रियताक वर्णन अछि। यौवनक मद मे आनंद विभोर युवती सभक वर्णन अछि। ई पुस्तक शृंगार रस सँ भरल कहल जा सकैत अछि।

पुरुष परीक्षा :-

हिनक ई एक टा मूल्यवान कृति अछि। महाराज शिव सिंहक आदेश सँ विद्यापति एहि पुस्तकक रचना कयलनि। पुरुष परीक्षाक महत्त्व एहि सँ बुझल जा सकैत अछि जे ई पुस्तक फोर्ट विलियम कॉलेजक पाठ्यपुस्तक मे छल। अंग्रेजी, बंगला, मैथिली, हिंदी आदि भाषा मे पुस्तकक अनुवाद कयल गेल अछि। ग्रियर्सनक अंग्रेजी अनुवाद आइयो लोकप्रिय अछि। पुरुष परीक्षा मे मौर्य काल सँ लऽ कऽ ओइनवार वंशक राजा शिव सिंह तक के घटना के वर्णन अछि। नंद आ मौर्य शासकक कटुता, उज्जैनक शासक विक्रमादित्यक उल्लेख पुरुष परीक्षा मे कयल गेल अछि। विक्रमादित्य दानवीर बताओल गेल अछि आ महाराज भोजक समकालीन कर्णाट शासक मल्लदेवक उल्लेख पुरुष परीक्षा मे सेहो अछि। नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवक संबंध जयदेव सँ बताओल गेल अछि जे कनी विवादपूर्ण अछि। मोहम्मद गौरी आ नरसिंह देवक वर्णन, धार राजा भोज,

अलाउद्दीन खिलजीक सेहो वर्णन अछि। पुरुष परीक्षा साहित्यिक ग्रंथक रूप मे आ ऐतिहासिक ग्रंथक रूप मे सेहो उपयोग होइत अछि।

लिखनावली :-

विद्यापति द्वारा लिखित ई 84 पत्रक संकलन अछि। लिखनावली सँ तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्थाक बोध होइत अछि। सामंती व्यवस्था आ आर्थिक विफलता संबंधित पक्ष एहि पुस्तक मे अछि। समसामयिक, प्रशासनिक, सामाजिक आ आर्थिक पक्षक संदर्भ मे एकर महत्व अछि। पत्र लेखन कला त स्पष्ट होइते अछि।

गया-पत्तलक :-

एहि पुस्तक मे गया मे श्राद्ध संबंधी विधानक संक्षिप्त विवेचन कयल गेल अछि।

वर्ष कृत्य :-

एहि मे साल भरिक पावनिक विधान अछि। वर्ष कृत्यक रचना विद्यापति चंद्र सिंह रूपनारायणक आज्ञा सँ कयने छलाह। एकरा सँ तत्कालीन धार्मिक मान्यता के समझबाक-बुझबा मे सहायता मिलल। विवाह संबंधक महत्व पर सेहो प्रकाश देल गेल अछि। घर द्वार बनेबाक उपर्युक्त महीना आ महीनाक हिसाब सँ खयबाक-पीबाक निषेधक सेहो वर्णन अछि। सामाजिक आ सांस्कृतिक व्यवस्थाक लेल ई मूल्यवान पुस्तक अछि।

गोरक्ष विजय :-

ई एक टा नाटक छी। ई नाटक महाराज शिव सिंहक आज्ञा सँ भगवान भैरवक आराधनाक लेल लिखल गेल अछि। गोरक्षनाथ आ मत्स्येन्द्र नाथक प्रसिद्ध कथा पर आधारित अछि। मैथिली आ संस्कृत दुनू भाषाक प्रयोग एहि पुस्तक मे कयल गेल अछि।

मणि मंजरी :-

विद्यापति एहि नाटक मे राजा चंद्रसेन आ मणि मंजरीक प्रेम प्रसंगक वर्णन कयने छथि। मैथिली भाषा मे नाट्यशास्त्रक विकास के समझबाक-बुझबाक लेल ई पुस्तक बड़ उपयोगी अछि।

दुर्गा भक्ति तरंगिणी :-

एहि पुस्तक मे विद्यापति देवी दुर्गा सँ संबंधित आराधना सब बतौने छथि। महाराज भैरव सिंहक आदेश सँ एहि पुस्तकक रचना कयल गेल अछि। एहि ग्रंथ सँ ई बुझबा मे आबैत अछि जे विद्यापतिक समय मे दुर्गा पूजाक महत्व बड़ बेसी छल।

शैवसर्वस्वसार :-

संस्कृत भाषा मे ई ग्रंथ लिखल गेल अछि। एहि मे शिवक उपासना सँ संबंधित बात सब अछि। राजा पद्मसिंहक पत्नी विश्वास देवीक जिक्र एहि पुस्तक मे अछि। हिनके आदेश सँ विद्यापति एहि पुस्तकक रचना कयलनि। ईहो पुस्तक मे ओइवार वंशक किछु राजाक वर्णन भेटैत अछि। शिवक उपासनाक लेल विभिन्न प्रकार फल, फूल आ विभिन्न वस्तुक वर्णन सेहो भेटैत अछि। एकरा अतिरिक्त सामाजिक व्यवस्था सँ जुड़ल तथ्यक सेहो वर्णन अछि। सौ कन्याक उल्लेखसँ बहु विवाहक सेहो बोध होइत अछि।

विभागसार :-

विद्यापति द्वारा लिखित ईहो संस्कृत भाषा मे ग्रंथ अछि। ई ग्रंथ सामाजिक आ आर्थिक दृष्टि सँ महत्वपूर्ण अछि। संपत्तिक अधिकार, संपत्ति बटवारा, बटवारा मे बाप, बेटा, बेटा सभक अधिकारक उल्लेख कयल गेल अछि। मनु, नारद, वशिष्ठ, व्यास जेहन प्राचीन स्मृतिकारक उदाहरण दैत विद्यापति अपन बात कहने छथि।

दानवाक्यावली :- एहि पुस्तक मे विद्यापति दानक महत्व पर प्रकाश देने छथि। आइ धरि दान देबाक प्रथा बिहार मे लोकप्रिय अछि। एहि पुस्तक मे विद्यापति भारत देश के सेहो रेखांकित कयने छथि। एकरा लेल ओ मनु आ भविष्य पुराण के सेहो उद्धृत कयने छथि। खनिज संपदा पर सेहो बात कयने छथि। दान देबाक प्रक्रिया मे बहुमूल्य पत्थर आ रत्न सभक उल्लेख अछि।

गंगावाक्यावली :- एहि पुस्तकक रचना रानी विश्वास देवीक नाम सँ कियल गेल अछि। विद्यापतिक नाम संपादकक रूप मे अछि। एहि मे हरिद्वार सँ लऽ कऽ गंगासागर तक होइ बाला तीर्थक उल्लेख अछि। एहि मे रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृति आदिक उल्लेख विद्यापति कयने छथि। शिव शंकर ठाकुर लिखने छथि एकर रचना रानी विश्वास देवीक आज्ञा सँ विद्यापति कयने छलाह।

भू-परिक्रमा :-

संस्कृत मे लिखल गेल विद्यापतिक ई प्रथम पुस्तक छल। ई यात्रा-वृत्तांतक रूप मे महाराजा देव सिंहक आदेश सँ लिखल गेल छल। एहि मे नगर आ ग्रामक वर्णन अछि। विद्यापति द्वारा लिखित भू-परिक्रमा एक टा यात्रा वृत्तांत अछि जे ओहि समयक आर्थिक इतिहासक उपयुक्त स्रोत मानल जा सकैत अछि।

विद्यापतिक रचना समसामयिक राजनीतिक व्यवस्थाक संदर्भ मे महत्वपूर्ण अछि। राजनीतिक चिंतन क्षेत्र मे विद्यापति अपनी पहिल राजनीतिक विश्लेषक चंडेश्वर सँ प्रभावित छलाह। विद्यापतिक राजनीतिक विचार पुरुष परीक्षा, लिखनावली, कीर्तिपताका आ विभागसार मे सेहो देखल जाइत अछि। हिनक राजनीतिक आदर्श ओइनवार वंशक नीति सँ प्रभावित छल। पुरुष परीक्षा मे राजा सभक काम-काज पर ध्यान दिऔने छथि। राजा के देव, नरदेव उपाधि सँ संबोधित कयने छथि। पुरुष परीक्षा मे विद्यापति राजा के उदार, करुणाशील आ सत्यनिष्ठ होयबाक सुझाव सेहो देने छथि। याज्ञवल्क्य जकाँ विद्यापति राजाक गतिविधि आ नीति के गुप्त रखबाक सलाह देन छथि।

पुरुष परीक्षाक पाँचम कथा मे लिखने छथि- मंत्री परिषद राजाक इच्छा पर काज करैत अछि तथापि ओकर भूमिका बड़ महत्वपूर्ण रहैत अछि। ओ कहै छथि जे ओ राज्य कखनो उन्नति नहि कऽ सकैत अछि जकर मंत्री विरक्त भऽ जाए। ओ कुछ मंत्री सभक चर्चा करै छथि जाहि मे अच्युत राजा शिव सिंहक मंत्री, रतिपति आ शंकर महत्वपूर्ण अधिकारी, राहत राजदेव एक सामंत अछि।

लिखनावलीक माध्यम सँ विद्यापति राज्यक अधिकारी बीच भेल पत्राचार सँ अवगत करबै छथि। प्रशासनक लेल अलग-अलग विभागक व्यवस्था छल जकरा कर्ण आ अधिकर्ण कहल जाइत छल। एहि मे सेनापति, दलपति, राउत जेहन सैनिक अधिकारीक सेहो उल्लेख अछि।

विद्यापति कवि कविये नहि अपितु एक टा राजनीतिक शिल्पकार सेहो छलाह। राजनीतिक दर्शन हुनक रचना मे स्पष्ट देखबा मे आबैत अछि। ई एक टा एहन पक्ष अछि जतय विद्यापति विद्वान कँ राजनीतिक चिंतक आ इतिहासकारक रूप मे प्रदर्शित करै छथि।

पदावली :-

विद्यापतिक प्रसिद्धक मूल आधार हुनक पदावली छनि। पदावलीक भाषा मैथिली अछि। हिनक गीतक प्रमुख विषय शृंगार आ भक्ति सँ जुड़ल रहै छलनि। भक्ति गीत मे मुख्यतः शक्ति, शिव आ गंगाक उपासना रहै छल। ई कहल गेल अछि पदावली खाली दू पांडुलिपि मिथिला क्षेत्र मे पाओल गेल छल। पहिल 18म शताब्दी मे रामभद्रपुरक पांडुलिपि जाहि मे 93 पद अछि। दोसर जे तरौनी (दरभंगा) मे पाओल गेल। एहि मे 239 पदावली अछि। नगेंद्र नाथ गुप्त 1909 ई. मे बंगीय साहित्य सँ एकरा प्रकाशित करबौने छलाह। लोचन रागतरंगणी मे 51 गीतक संकलन करौने छलाह। मौखिक परंपराक आधार पर ग्रियर्सन 82 गीतक संकलन भणीताक रूप मे कयने छलाह। विद्यापतिक सभसँ प्रमाणिक गीत नेपाल दरबार पुस्तकालय मे मिलल छल। ई 16म आ 17म शताब्दी मे रचल गेल छल। एहि मे 288 गीत अछि।

विद्यापति पदावली बंगाल चयनिका मे सेहो पाओल गेल अछि। सर्वप्रथम विश्वनाथ चक्रवर्ती जे 18म शताब्दीक पहिल दशक मे संकलित कयलनि। ओ 315 गीत के अपन किताब कृष्ण भक्ति चिंतामणि मे कयने छलाह। दोसर चयनकर्ता राधा मोहन ठाकुर जे दीनबंधुक संस्कृतामृत नामक पांडुलिपि मे विद्यापतिक 165 पद के उपलब्ध करोलनि। कविवर रवींद्रनाथ टैगोर 1892 मे विद्यापतिराधिका मे विद्यापति पदावलीक उल्लेख कयलनि। विद्यापति द्वारा लिखल किछु गीत बंगाली स्रोत से सेहो प्राप्त भेल अछि।

विद्यापति के पदावली मे मिथिलाक कतेको राजाक जिक्र भेल अछि। राजा देव सिंह, महाराजा हरि सिंह, शिव सिंह, पद्म सिंह, रानी विश्वास देवी, राधव सिंह, रूद्र सिंह, धरि सिंह, भौरव सिंह आ राजा चंद्र सिंहक वर्णन अछि।

महाकवि विद्यापति अपनी मातृभाषा मैथिली मे असंख्य पदक रचना कयलनि। पदावलीक लोकप्रियता कारणे ओ 'अभिनव जयदेव', 'मैथिल कोकिल' आदि नाम सँ जानल गेलाह। विद्यापतिक पद मिथिला, नेपाल, बंगाल, उड़ीसा आ असम मे मिलल अछि। मिथिलाक्षर मे लिखल विद्यापतिक गीत हस्तलेख रूप मे नेपाल दरबार लाइब्रेरी, काठमांडू मे सुरक्षित अछि। सबसँ पहिले म. म. हर प्रसाद शास्त्री एकर खोज केलाह आ नेपाल सरकारक अनुमति सँ नागेंद्र नाथ एकर उपयोग कयलाह। एहि मे 287 पद अछि। पुनः नेपाल सँ प्राप्त भाषा गीत संग्रहक अंतर्गत विद्यापतिक 68 गीत भेटल।

बंगाली स्रोत सँ सेहो विद्यापतिक पद भेटल छनि। वैष्णव संत विश्वनाथ चक्रवर्ती 18म शताब्दी मे 315 पद के संकलित कयलनि अछि जाहि मे 37 टा पद भणिता वाला अछि।

पंडित राधा मोहन ठाकुर वैष्णव कवि के 746 पद संकलित कयलनि जाहि मे 64 पद भणिता सँ अछि। पद कल्पतरु (चारि भाग मे) वैष्णव कविक 3101 पद अछि जाहि मे 161 पद भणिता सँ अछि। एहि परंपरा के अंतर्गत कतेको विद्वान स्वतंत्र रूप सँ बंगाल मे प्राप्त विद्यापतिक पदावली के संकलित कयलनि जाहि मे नगेंद्र नाथ गुप्त, खगेंद्र नाथ मिश्र, विमान बिहारी मजूमदार, मोहम्मद शहीदुल्लाह आदि प्रमुख छथि।

एहि सभ हस्तलिखित लेखक अतिरिक्त मिथिला आ बंगाल लोक गीत के रूप मे विद्यापति के गीत उपलब्ध अछि। 1881-82 मे ग्रियर्सन एशियाटिक सोसाइटी सँ एहन गीत के प्रकाशित करौलनि। विद्यापति के कतेको गीत के बंगला भाषा सँ अन्य भाषा मे अनुवाद भेल अछि।

हिनक पदावली भक्ति आ शृंगार दुनू सँ भरल अछि। विद्यापति के वैष्णव कविक रूप मे स्वीकार कयल गेल अछि। चैतन्य प्रभु हिनका सँ प्रभावित छलाह। डॉ. उमेश मिश्र आ नगेंद्र नाथ दासक अनुसार विद्यापति त्रिदेवोपासक छलाह कियेक तऽ हुनक रचना शक्ति, विष्णु आ शिव तीनू मे मिलल अछि। किछु विद्वान हुनका मूलतः शैव मानैत छथि। वस्तुतः हिनक पदावली कतेको

अर्थ मे महत्वपूर्ण अछि। हिनक महेश वाणी, नचारी, उचिती, योग एहि सभ गीत मे मिथिलाक सामाजिक जीवनक बड़ सुंदर, सत्य आ मार्मिक वर्णन अछि। समाजक सभ सँ गरीब लोकक अवस्थाक चित्रण विद्यापतिक 'नचारी' मे भेटैत अछि। टुटले फुटले मड़ैया अधिक सोहाओन हे।

ताहि पर बैसल गौर मनहि मन झाँखत हे।।

एहन कतेको पद मे विद्यापति निर्धनक जीवन के देखबैत छथि। उदाहरण रूपे स्वयं शिव सँ पार्वती कहै छथिन खेती-बाड़ी शुरू करू। जखन तक अनाज नहि उपजत तब कत भीख मांगऽ पड़त जखन कि भीख मंगनाय निकृष्ट काज अछि।

विद्यापतिक कविता वस्तुतः समाजक दर्पण अछि विद्यापति के रचना सँ मिथिलाक महिलाक तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के सेहो बोध होइत अछि। अनमेल बियाह विद्यापति के पसंद नहि छल। ओ लिखैत छथि :-

पिया लेलि गोद कए चलति बाजार।

हटियाक लोक पूछए के लागू तेहार।।

विद्यापति के पदावली सँ वस्त्र, परिधान, आभूषण सभक बोध होइत अछि। शृंगारक लेल फूलक प्रयोग भेल अछि। हिनक पदावली मे सुहागिनक परिधानक सेहो चर्चा अछि। सिंदूर, आभूषण, विभिन्न प्रकार चूड़ी, बाहुमूल्य रत्न सभक प्रयोग अछि। पर्दा प्रथाक लेल घुंघट सेहो प्रयोग अछि। बियाह एक टा महत्वपूर्ण संस्कार अछि। हिनक गीत मे बियाहक रीति रिवाज भरल अछि। सोहाग, परीक्षण, बेदी, कोहबर आदि शब्दक व्यापक प्रयोग कयल गेल अछि।

हिनक कविता मे सूक्ति सभक खूब नीक उपयोग अछि। विद्यापति संसार मे मनुष्य जन्म के अपूर्व मानैत छथि।

'भनहि विद्यापति रूप, हे सखी मानुष जन्म अनूप'

विद्यापति जन्मे के सफल नहि मानैत छथि। सबसँ श्रेष्ठ ओ मनुष्य अछि जे अपन वचनक प्रतिपालन करय। 'सुपुरुष वचन परवापक रेहा' विद्यापति पति के स्त्रीक एक मात्र सर्वस्व मानै छथि। दांपत्यक संबंध के पवित्र आ संपूर्ण मानै छथि। विद्यापति अपन गीत के संकलन नहि कयलनि। मुदा बिहार, बंगाल, आसाम, नेपाल आ उड़ीसा मे हुनक पसरल गीत अमर बना देलकनि। विद्यापतिक पदावली गेय (गाबै) वला अछि जेकरा के संस्कृत अलंकार शास्त्र मे भद्र काव्य कहल जाइत अछि। विद्यापति अपन गीत मे जाहि रागक प्रयोग कयलाह ओ बौद्ध सिद्ध द्वारा जयदेवक 'गीत गोविंद', ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मे उल्लेखित अछि अर्थात कही सकैत छी विद्यापति एहि सब राग सँ प्रभावित छलाह। हिनक शृंगार रचना कालीदास सँ प्रभावित देखबा मे आबैत अछि। उपमा अलंकार सब मे समानता अछि। विद्यापति शृंगार प्रधान गीत भौतिक प्रेम सँ युक्त स्त्री-पुरुष संबंध पर केंद्रित अछि। ग्रियर्सनक दृष्टि सँ ई गीत कबीरक गीतक तरहे रहस्यात्मक अछि जाहि मे प्रेमक माध्यम सँ आत्मा के परमात्मा में विलीन होयबाक बात कहल गेल अछि। वस्तुतः विद्यापति के शब्द चित्रकार मानल गेल अछि। सौंदर्यक आकलन में प्रेम प्रमुख विषय रहै छनि जकरा सदैव महिलाक दृष्टि सँ देखैत छथि।

रवीन्द्रनाथ टैगोर विद्यापतिक काव्यक मूल्यांकन करैत स्वीकार केने छथि जे विद्यापति आनंद आ प्रेमिका मिलनक आनंद कवि छथि। विद्यापति प्रकृति प्रेमी सेहो छलाह। हिनक ऋतु वर्णन परंपरागते नहि अपितु वास्तविक अछि। विद्यापति अपनो लेल अनेक उपाधिक प्रयोग केने छथि जेना- सरस कवि, कविराज, सुकवि, कविवर आदि।

अभिनव जयदेव बंगाल मे एतेक लोकप्रिय छलाह जे बहुतो दिन तक बंगाली कवि मानल जाइत छलाह। चैतन्य, चंडीदास, ज्ञानदास, राधामोहन, टैगोर, अरविंद सब विद्यापति सँ प्रभावित छलाह। आसाम मे विद्यापति वैष्णव संतक रूप मे मशहूर दलाह। शंकरदेव (1449-1568) आसाम मे विद्यापति के लोकप्रिय बनौलनि बंगालक माध्यम सँ उड़ीसा मे सेहो विद्यापतिक

प्रभाव देखल जा सकैत अछि। उड़ीसाक प्रख्यात नाटककार रामानंद राय विद्यापति सँ प्रभावित छलाह। उड़ीसाक राय दामोदरदास, चंडकवि आ यदुपति दास विद्यापति सँ प्रभावित देखबा मे आबैत छथि।

नेपाल मे मैथिली आइ धरि सशक्त भाषा अछि। नेपालो मे विद्यापति बड़ लोकप्रिय छलाह। नेपाल दरबार मे मैथिली भाषा के सम्मानित स्थान मिलल। विद्यापति मध्यकालीन राजनीति आ सामाजिक व्यवस्थाक चुनौती के ध्यान मे राखि नियम-परिनियमक मध्यमे मध्ययुगीन सामाजिक व्यवस्था के सुदृढ़ करबो प्रयत्न कयलनि। विद्यापति संगीतकार आ नाटककार दुनू छलाह। उमापति आ लोचन संगीत आ नाटकक क्षेत्र मे हिनका सँ प्रभावित दलाह। विद्यापति जाहि नाट्य परंपराक विकास कयलाह ओ आसाम आ नेपाल जेहन क्षेत्र मे खूब लोकप्रिय भेल। विद्यापति पदावली विद्यापति के अमर बनौलक। मिथिलाक लोक संस्कृति मे आइयो एकर व्यापक महत्व अछि। हुनक गीत बिना कोनो अनुष्ठान पूर्ण होयबाक कल्पनो नहि भ सकैत अछि।

अर्थात कहि सकै छी जे विद्यापति आमजनक मसीहा छलाह। हिनक क्षेत्र राजदरबार सँ निकैल खेत खरिहान तक पहुँच जाइत अछि। हिनक रचना मे अरबी-फारसी शब्दो के प्रयोग भेल अछि। हिनक रचना नचारी अब्दुल फजल के सेहो प्रभावित कने छल जेकर चर्चा फजल आइन-ए-अकबरी मेकेने छथि। अपन समय मे विद्यापति समस्त भारत मे महत्वपूर्ण स्थान रखैत छलाह। निःसंदेह कही सकै छी विद्यापतिक बहुआयामी व्यक्तित्व मिथिला आ बिहारक इतिहास मे एक टा गौरवपूर्ण अध्याय छल।

संदर्भ सूची

1. पुरुष परीक्षा- हेतुकर झा – 2022
2. सम आस्पेक्ट ऑफ सोसायटी एंड इकोनोमी ऑफ मीडियम मिथिला
3. विद्यापतिकालीन मिथिला – पटना 1986
4. कंप्रीहेसिव हिस्ट्री ऑफ बिहार- पटना 1983
5. हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर – साहित्य अकादमी 1976
6. बिहार थ्रू द एजेज – कोलकाता 1959
7. मिथिला तत्त्व विमर्श – मिथिला अकादमी
8. द सॉन्ग ऑफ विद्यापति – सुभद्र झा 1954
9. मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति- वाराणसी 1876
10. मैथिली साहित्यक इतिहास
11. कीर्तिलता – वाराणसी 1964
12. हिस्ट्री ऑफ तिरहुत – कोलकाता 1922

मारवाड़ के शिलालेखों में आर्थिक चिंतन

डॉ. रेखा गुप्ता

सीनियर रिसर्च फेलो (ICSSR)

मो.ला. सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान

Article Info

Volume 6, Issue 1

Page Number : 17-23

Publication Issue :

March-April-2023

Article History

Accepted : 01 April 2023

Published : 10 April 2023

शोधसारांश - पुरुषार्थ चतुष्टय में अर्थ का स्थान द्वितीय है किंतु व्यवहारिक दृष्टि से देखा जाए तो अन्य तीनों पुरुषार्थ धर्म, काम तथा मोक्ष की सिद्धि अर्थ के अभाव में संभव नहीं है। अतः अर्थ प्रमुख पुरुषार्थ है। अर्थ जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है तथा अर्थ के बिना जीवन यात्रा असंभव है। अर्थ के बिना मानव का अस्तित्व ही नहीं है। मारवाड़ से प्राप्त शिलालेखों से तत्कालीन आर्थिक स्थिति का अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है। कृषि, पशुपालन तथा उद्योग- धंधे आय का प्रमुख स्रोत होते थे। इनमें भी कृषि आर्थिक जीवन का प्रमुख आधार थी।

मुख्य शब्द - अर्थ, मारवाड़, शिलालेख, कृषि, उद्योग, व्यापार, कर व्यवस्था, मुद्रा।

अर्थार्थ प्रवर्तते लोकः अर्थात् संपूर्ण विश्व अर्थ हेतु प्रवृत्त है। पुरुषार्थ चतुष्टय में अर्थ का स्थान द्वितीय है किंतु व्यवहारिक दृष्टि से देखा जाए तो अन्य तीनों पुरुषार्थ धर्म, काम तथा मोक्ष की सिद्धि अर्थ के अभाव में संभव नहीं है। अतः अर्थ प्रमुख पुरुषार्थ है। अर्थ जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है तथा अर्थ के बिना जीवन यात्रा असंभव है। अर्थ के बिना मानव का अस्तित्व ही नहीं है। भारतीय अर्थ चिंतन के प्रारंभिक बीज हमें वैदिक साहित्य में प्राप्त होते हैं। वैदिक संहिताओं में अनेक मंत्रों में विभिन्न देवी-देवताओं से धन प्राप्ति की कामना की गई है। अग्नि देवता से धन प्राप्ति की कामना करता हुआ यजमान कहता है- **अग्निना रयिमश्रवत पोषमेव दिवे दिवे यशसं वीरवंतम् ।¹** पृथ्वीसूक्त में पृथ्वी को आनंदप्रदात्री, धनप्रदात्री, विश्व का भरण-पोषण करने वाली तथा संसार के समस्त ऐश्वर्य प्रदान करने वाली कहा गया है।² वैदिक अर्थ चिंतन में अर्थ शुचिता को सर्वोपरि माना गया है। ऋग्वेद में स्पष्ट उल्लेख है कि द्यूत आदि अनैतिक साधनों से धनार्जन नहीं करना चाहिए अपितु कृषि कर्म से धनार्जन करना चाहिए-

अक्षैर्मादीव्यः कृषिमित् इति कृषस्व वित्ते रमस्व बहुमन्यमानाः ।³

उपनिषदों में भी जहां एक ओर धनवान तथा संपत्तिशाली बनने की कामना की गई है,⁴ वहीं दूसरी ओर धन का लोभ ना करने तथा धन का उपभोग त्यागपूर्वक करने का उपदेश दिया गया है।⁵ स्मृतिकारों ने भी जीवन में अर्थ को आवश्यक मानते हुए धर्म के आधार पर अर्थ की विवेचना की है तथा धन की तीन विधियां बताई हैं- रक्षण, वर्धन तथा भोग।⁶ वाल्मीकि रामायण में अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार वार्ता अर्थात् कृषि, पशुपालन तथा व्यापार थे। जिनमें कृषि कार्य को

राजा का विशेष प्रोत्साहन प्राप्त होता था। रामायण में उर्वर भूमि को अदेवमातृक कृषि भूमि कहा गया है I वाल्मीकि ने अर्थ को प्राथमिक व प्रशंसनीय जीवन का लक्ष्य बताया है। जिस प्रकार पर्वत से नदियां प्रवाहित होती हैं उसी प्रकार समृद्ध एवं प्रबुद्ध धन से ही सभी क्रियाएं संपन्न होती हैं।⁷ महर्षि वेद व्यास ने अर्थ को 'साधन' माना है। अर्थ विवेकशील होने पर ही 'अर्थ' रहता है अन्यथा 'अनर्थ' हो जाता है I अतः धन का अर्जन नैतिकता से युक्त न्यायोचित होना चाहिए। इसके लिए व्यक्ति का उद्यमी होना आवश्यक है-

विद्या तपो वा विपुलं धनं वा सर्वमेतद् व्यवसायेन शक्यम् I⁸

अर्थ के महत्व के कारण ही प्राचीन काल से ही मनुष्य अर्थ प्राप्ति के लिए प्रयास करता रहा है। प्राचीन काल में कृषि, पशुपालन व उद्योग अर्थोपार्जन के प्रमुख स्रोत थे। वैदिक काल में कंदमूल, फल तथा स्वतः उगा हुआ धान ही लोगों का भोजन होता था। धीरे-धीरे वैदिक आर्यों ने खेती करना प्रारंभ किया तथा पृथ्वी, इंद्र, पर्जन्य तथा सीता आदि देवताओं की कल्पना कर उनकी स्तुतियां करने लगे।⁹ महाभारत में महर्षि वेद व्यास ने धान और खानों से युक्त भूमि का विश्लेषण करते हुए बताया है कि खानों से कोष मात्र बढ़ता है परंतु धान्य से कोष्ठ व कोष्ठागार भरता है।¹⁰ इस प्रकार प्रारंभ से ही कृषि अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार रहा है, क्योंकि विभिन्न प्रकार के उद्योग व्यापार व शिल्प कलाओं के लिए कच्चे माल की आपूर्ति कृषि से ही संभव होती है। वैदिक काल में पशु पालन भी किया जाता था। ब्राह्मण ग्रंथों में 'गवय' नामक पशु का उल्लेख है, जो संभवतः बैल की भांति होता था।¹¹ रामायण और महाभारत में भी अनेकशः गोपालन व गोदान का उल्लेख मिलता है। जिससे स्पष्ट होता है कि पशुपालन भी जीवन निर्वाह हेतु किया जाता था I क्योंकि पशुओं के द्वारा उनके भोजन, व्यवसाय, यातायात, युद्ध आदि कृत्य पर्याप्त रूप से प्रभावित होते थे I कृषि व पशुपालन के अतिरिक्त वाणिज्य-व्यापार प्राचीन अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार था। अथर्ववेद में दर्श (वस्त्र), पवस्त (चादर) और अजि (चर्म) के क्रय - विक्रय का उल्लेख है।¹² पुराणों में श्राद्ध पक्ष में रजत दान करना पवित्र माना गया है।¹³ महाभारत काल में मिश्रित धातु का प्रयोग प्रारंभ हो गया था। मिश्रित धातुओं से कवच व अस्त्र-शस्त्र बनाए जाने लगे जो कि अभेद्य होते थे I¹⁴ इससे स्पष्ट है कि प्राचीन काल में भारत में अनेक उद्योग-धंधों का विकास हो चुका था I इन सबके अतिरिक्त राज्य की आय का प्रमुख स्रोत 'कर' था। जो कि राजा को दिया जाता था। यह 'कर' विभिन्न रूपों में प्राप्त होता था I जैसे युद्ध में विजय होने पर प्राप्त संपत्ति, उद्योगों से होने वाली आय पर लगाया गया कर, दंड के रूप में प्राप्त धन, कृषि द्वारा उत्पन्न फसल पर लगाया गया कर आदि। राजा को प्राप्त होने वाली यह आय शास्त्र सम्मत व धर्म सम्मत मानी जाती थी और राजा इसे वेतन के रूप में स्वीकार करता था I¹⁵ इस प्रकार प्राचीन काल में आय के विभिन्न स्रोत थे।

मारवाड़ के शिलालेखों में आर्थिक चिंतन - मारवाड़ से प्राप्त शिलालेखों से तत्कालीन आर्थिक स्थिति का अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है। कृषि, पशुपालन तथा उद्योग धंधे आय का प्रमुख स्रोत होते थे। इनमें भी कृषि आर्थिक जीवन का प्रमुख आधार थी I प्रायः सभी वर्णों के लोग कृषि करते थे। भूमि के प्रकार तथा सिंचाई के साधनों के अनुसार राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार की फसलें होती थी। राजस्थान में मुख्य रूप से ज्वार, बाजरा, मोठ, जौ, गेहूं, चावल आदि फसलें उगाई

जाती थी लेकिन मारवाड़ क्षेत्र रेगिस्तानी प्रदेश होने के कारण यहां पर ज्वार, सरसों, जौ और बाजरा प्रमुख रूप से उगाए जाते थे I

शिलालेखों में सियालू (सर्दी) तथा उनालू (गर्मी) की फसलों का उल्लेख मिलता है तथा प्रत्येक अरघट से एक आढ़क गेहूं व जौ, मूंग, दाल आदि के प्रत्येक द्रोण पर एक माणक 'कर' दिए जाने का उल्लेख है।¹⁶ सेवाड़ी अभिलेख में मंदिरों में दान हेतु विभिन्न गांवों से प्रत्येक रहट से एक हारक अर्थात् एक डलिया के बराबर यव (जौ) प्रदान किए जाने का वर्णन है।¹⁷ सांडेराव पाषाण लेख के अनुसार महावीर स्वामी के कल्याण महोत्सव हेतु श्री कल्हणदेव की माता ने राजकीय भोग से एक हाइल ज्वार प्रदान की। इसी उत्सव के लिए रथकार धनपाल आदि ने भी ज्वार का एक हाइल अर्पित किया। इससे ज्ञात होता है कि सार्वजनिक उत्सवों में सामान्य जनता भी दान दिया करती थी I¹⁸ लालराई से प्राप्त अभिलेख में बाली तथा आसपास के गांवों से यव तथा अरहट से पैदावार का कुछ भाग गूजरी यात्रा निमित्त देने का उल्लेख है। इस लेख के अनुसार नाडोल के शासक कल्हणदेव तथा उनकी रानी श्री महिदेवी ने ग्राम पंचों के समक्ष रथ यात्रा उत्सव के निमित्त एक हारक यव प्रदान की।¹⁹

मारवाड़ में मंदिरों के रखरखाव व पुजारियों के जीवन यापन हेतु दान के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के कर दिए जाने का उल्लेख भी कई शिलालेखों में प्राप्त होता है। 996 ई. के हस्तीकुंडी अभिलेख से ज्ञात होता है कि वहां के शासक विदग्ध ने अपने गुरु वासुदेव की प्रेरणा से हस्तीकुंड में एक जैन देवालय का निर्माण करवाया तथा मंदिर की व्यवस्था के लिए अनेक प्रकार के कर निर्धारित किए। जैसे 20 बोझों पर, गाड़ी तथा ऊंट के भार पर तथा ऊंट पर ₹1 लिया जाता था। जुआरियों, पान बेचने वाले और तेल विक्रेताओं से एक 'कर्ष' वसूला जाता था। सिर पर उठाए जाने वाले एक बोझ की बिक्री पर एक 'विन्शापक' तथा सूती कपड़े, तांबा, केसर के भार पर 10 'पल' सरकारी कर लगाया गया था। इसके अतिरिक्त कुम्हारों के व्यवसाय पर भी कर लगाया जाता था।²⁰ गुहिल वंश के शासक राजदेव ने नेमीनाथ मंदिर की पूजा के निमित्त नारलाई में आने वाले लगे हुए वृषभों पर लिए जाने वाले कर का दशमांश निर्धारित किया।²¹ इसी प्रकार मारवाड़ के महाराजा जयसिंह के सामंत अश्वक द्वारा देवी के मंदिर में पूजा के निमित्त चार द्रम्म दिए गए तथा अन्य व्यक्तियों व अरहटों से भी एक-एक द्रम्म दिलाया गया।²²

मारवाड़ से प्राप्त अभिलेखों से ज्ञात होता है कि यहां पर मंदिरों व ब्राह्मणों को भूमि दान करने की प्रथा प्रचलित थी। अमृतपाल देव के जोधपुर से प्राप्त एक ताम्रपत्र वि.सं. 1242 में पुरोहित पाल्हा, ज्योतिषी यश देव, पंचकुल महिदिग, सेठ साहूकारों, ग्राम निवासियों तथा अमात्यों को भूमि दान की सूचना का उल्लेख है। सांडेराव अभिलेख में कुछ रथकारों द्वारा एक 'हल' भूमि का दान किया गया I दुर्लभराज चालुक्य के शासनकाल में तंत्रपाल क्षेमराज ने क्षत्रियपद ग्राम ब्राह्मण नाणक को दान में दिया था।²³

वि.सं. 900 के प्रतिहार भोजदेव के दौलतपुरा ताम्र अभिलेख से विदित होता है कि वत्सराज ने 'सिव' ग्राम भट्ट वासुदेव को दान में दिया तथा इसकी सूचना सभी ग्रामवासियों तथा पड़ोस के गांव को भी दी गई और उन्हें आदेश दिया गया कि वह 'सिव' ग्राम का राजस्व दान पाने वालों को दें। इसी प्रकार जोधपुर से प्राप्त दानपत्र में परम भट्टारक महाराजाधिराज

श्री मूलराजदेव द्वारा अपने पूर्वजों के पुण्य और यश वृद्धि हेतु सांचौर मंडल के वर्णक ग्राम का दान वृक्षों, काष्ठ, तृण तथा जल पर अधिकार सहित दीर्घाचार्य ब्राह्मण को देने तथा इसकी सूचना ब्राह्मणों, राज पुरुषों तथा अन्य संबंधित व्यक्तियों को देने का विवरण प्राप्त होता है।²⁴ नाडोल के महाराजाधिराज कलहणदेव ने वृक्षों सहित एक कुआं नारायण नामक ब्राह्मण को दान में दिया।²⁵

इस प्रकार मारवाड़ में भूमि दान, अन्न दान तथा विभिन्न प्रकार के कर मंदिरों की आय का प्रमुख स्रोत होते थे। उनसे मंदिर संबंधी सभी व्यवस्थाएं कुशलतापूर्वक संचालित होती रहती थी। ब्राह्मण भी आजीविका हेतु प्राप्त दान से अपना जीवन यापन करते हुए कर्तव्यों का निर्वहन किया करते थे। इसी कारण मारवाड़ के अनेक अभिलेखों में कहा गया है कि जो दान की गई भूमि का हरण करता है या वस्तु को वापस लेता है तो वह गौ हत्या तथा ब्रह्म हत्या के समान पाप का भागी होता है तथा दान की अवहेलना करने वाला एक हजार गाय तथा सौ ब्रह्म हत्या के पाप का भागी होता है।²⁶

मारवाड़ में पशुपालन भी आय का प्रमुख स्रोत था। पशुपालन से गांव में दूध, दही, घी, ऊन आदि का भी उत्पादन किया जाता था। पशुओं का उपयोग व्यापार हेतु माल लाने- लेजाने के लिए भी किया जाता था। पशुओं का क्रय-विक्रय भी किया जाता था। घोड़े के विक्रय पर एक द्रम्म शुल्क लिया जाता था।²⁷ नाडोल के सोमेश्वर मंदिर से प्राप्त 1141 ई. के लेख के अनुसार भाट उस समय घोड़ों का उपयोग माल ढुलाई के लिए करते थे साथ ही घोड़ों का व्यापार भी करते थे। जबकि बंजारे बैलों पर लाद कर सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे। ओसियाँ के लेख से ज्ञात होता है राज भवनों में हाथी भी सुशोभित होते थे।

12 वीं शताब्दी के किराडू लेख में पशुवध निषेध की आज्ञा आल्हनदेव के द्वारा जारी की गई थी I माह की दोनों पक्षों की अष्टमी, एकादशी तथा चतुर्दशी को पशुवध निषेध कर दिया गया तथा सामान्य प्रजा के साथ-साथ पुरोहितों और सामंतों को भी इसके लिए पाबंद कर दिया गया I आज्ञा के उल्लंघन करने पर साधारण नागरिक पर पांच द्रम्म तथा राज परिवार पर एक द्रम्म दंड निर्धारित किया गया।²⁸ किराडू के इस लेख से तत्कालीन शासन व्यवस्था में मानवता, नैतिकता तथा पशुओं के प्रति दया का भाव दिखाई देता है। दंड व्यवस्था में राज परिवार से एक द्रम्म तथा साधारण प्रजा से पांच द्रम्म वसूलने की व्यवस्था से राज परिवार का विशेषाधिकार स्पष्ट होता है। 13वीं शताब्दी में बाड़मेर व्यापारिक केंद्र था। वहां से ऊँट, घोड़े, बैल आदि माल लेकर गुजरते थे। आदिनाथ मंदिर की व्यवस्था के लिए सभी महाजनों ने इन पर कर देना स्वीकार किया था।²⁹

पशुपालन के अतिरिक्त अन्य उद्योग धंधे भी मारवाड़ में आय के प्रमुख स्रोत थे। मारवाड़ से प्राप्त अभिलेखों में अनेक स्थानों पर घाणक का उल्लेख है जिससे स्पष्ट होता है कि मारवाड़ में तेल का व्यापार किया जाता था। उदाहरणार्थ पाली के नारलाई के महावीर मंदिर का लेख 1130 ई. के अनुसार महावीर मंदिर के निमित्त घाणक तेल से चौहान पतरा के पुत्र बिसरा ने कलश के नाप का तेल अनुदान में दिया। नारलाई के ही 1132 ई. के चौहान रायपाल देव के अभिलेख में प्रति घाणक से दो पल्लीका तेल बाहर से आने वाले जैन संतों को दिए जाने का आदेश है तथा इसका उल्लंघन करने वाले के लिए गौ हत्या तथा ब्राह्मण हत्या का पाप बताया गया है। नमक का व्यापार भी मारवाड़ की आय का प्रमुख स्रोत था। डीडवाना,

फलोदी, पचपदरा, सांभर आदि खारे पानी की झीलों से भारी मात्रा में बढ़िया किस्म का नमक उत्पादित होता था तथा नमक के प्रत्येक कूटक पर मंदिर के निमित्त एक विंशोपक दिया जाता था।³⁰

राजस्थान खनिजों का भंडार कहा जाता है I इस दृष्टि से मारवाड़ क्षेत्र भी खनिजों से समृद्ध क्षेत्र है। यहां नागौर में तांबे की बड़ी-बड़ी खाने हैं। एक अभिलेख में तांबे के भार पर 10 पल राजकीय कर लिए जाने का उल्लेख है जिससे इस क्षेत्र में तांबे के उत्पादन का ज्ञान होता है।³¹ इसके अतिरिक्त जालौर और सोजत की खानों से जस्ते का उत्पादन भी किया जाता था। अभिलेखों में सूत, ऊन, स्वर्णाभूषणों के व्यापार तथा कपड़ा उद्योग का उल्लेख भी मिलता है I मारवाड़ में स्वर्ण आभूषणों का निर्माण प्रचुरता से होता था। स्वर्णकार अत्यंत प्रवीण होते थे। कल्याणपुर सातवीं सदी तथा नवी सदी के घटियाला के अभिलेखों के उत्कीर्णक स्वर्णकार ही थे। घटियाला अभिलेख के अनुसार प्रतिहार शासक कक्कूक के शासन काल में घटियाला व्यापार व वाणिज्य का प्रमुख केंद्र था तथा यहां पर मरु, माड़, वल्ल, तमनी, अज्ज तथा गुर्जरत्रा के व्यापारी आकर बस गए थे।³²

उद्योग धंधों के अतिरिक्त निर्माण कार्य भी आय का स्रोत होते थे। मारवाड़ रेगिस्तानी प्रदेश होते हुए भी यहां के शासकों ने बहुतायत में मंदिरों, दुर्गों, बावडियों इत्यादि का निर्माण करवाया जिससे जनता को रोजगार प्राप्त होता था। अभिलेखों के अनुसार मारवाड़ के नाडोल क्षेत्र के शासक आल्हनदेव ने नाडोल में शिवालय का निर्माण करवाया। कल्हण ने स्वर्ण तोरण द्वार बनवाकर ख्याति प्राप्त की। समर सिंह ने जालौर में गढ़ का निर्माण करवाया।³³ जोधपुर से 20 मील उत्तर में घटियाला गाँव के 861 ई के दो लेखों के अनुसार मंडोर के प्रतिहार शासकों ने मंडोर दुर्ग का ऊंचा प्रकार बनवाया। राजाओं और सामंतों की भांति सामान्य लोग भी सार्वजनिक निर्माण करवाने में रुचि लेते थे। मंडोर की एक बावड़ी से प्राप्त वि.सं. 742 के अभिलेख से ज्ञात होता है कि ब्राह्मण चाणक के पुत्र माधू ने इस बावड़ी का निर्माण करवाया था। नारलाई में भिवडेश्वर के मंदिर के मंडप का निर्माण सूत्रधार महदुआ व उसकी पत्नी जसदेवी के पुत्र पाहिणी ने करवाया जिसमें पत्थरों व ईंटों का प्रयोग किया गया तथा 330 द्रम्मों का व्यय हुआ।³⁴ इससे शिल्पकार्य में होने वाले व्यय का ज्ञान होता है। किन्तु निर्माण कार्य करने वाले श्रमिकों को कितना पारिश्रमिक दिया जाता था यह अभिलेखों में वर्णित नहीं है I

अभिलेखों से नाप-तौल संबंधी सूचनाएं भी प्राप्त होती हैं। बीजापुर के वि.सं. 1053 के लेख से नाप-तौल हेतु पल, कर्ष, आढ़क, मानक, द्रोण, कलश, हाएल आदि विभिन्न मापों का ज्ञान होता है। मंडोर के केशव मंदिर को एक कर्ष तेल दिया जाता था। नारलाई में प्रत्येक घाणक से दो पल्लीका तेल बाहर से आने वाले जैन संतों को दिया जाता था।³⁵ ओसियां के सच्चियाय माता मंदिर में भोजक को पारिश्रमिक के रूप में देवी के कोषागार से प्रतिदिन दो अंजुल मूंग व एक कर्ष दिया जाता था I अभिलेखों से ज्ञात होता है कि वर्तमान की भांति उस समय में ब्याज पर ऋण भी दिया जाता था। ब्याज मुद्रा व वस्तु दोनों रूपों में लिया जाता था। भीनमाल से प्राप्त अभिलेख के अनुसार जगत स्वामी मंदिर के कोषागार को 40 द्रम्म पर 12 द्रम्म वार्षिक ब्याज के रूप में मिलते थे। इससे ब्याज की दर 30% वार्षिक होना ज्ञात होती है। वि.सं. 1306 के भीनमाल में एक अन्य अभिलेख के अनुसार 40 द्रम्म के वार्षिक ब्याज के रूप में निम्न वस्तुएं प्राप्त होती थी- गेहूं 2 सेई, मूंग 1 मण, चोखा (चावल) दो पायली, घी साढ़े आठ कलश, पूजा सामग्री सात द्रम्म मूल्य की I उपयुक्त वस्तुओं के मूल्यों

के आधार पर दशरथ शर्मा ने साढ़े 33% की ब्याज तक की दर मानी है। जोकि मध्यकालीन मारवाड़ में ऊंची ब्याज दर को दर्शाता है।³⁶ इस प्रकार मारवाड़ के शिलालेखों के अध्ययन से तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था के विभिन्न पक्षों यथा कृषि, व्यापार, वाणिज्य, उद्योग-धंधों, दान, कर, मुद्रा तथा निर्माण कार्यों के विषय में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध होती है I

सन्दर्भ

1. ऋग्वेद 1.1.1
2. अथर्ववेद 12.16
3. ऋग्वेद 10.34.13
4. तैत्तिरीयोपनिषद 1.4
5. ईशावास्योपनिषद, प्रथम मंत्र
6. नारद स्मृति 1.39
7. वाल्मीकि रामायण 6.83.32
8. महाभारत, शांतिपर्व 120.45
9. ऋग्वेद 1.117.21
10. महाभारत, सभा पर्व 5.61
11. शतपथ ब्राह्मण 1.2.3.9
12. अथर्ववेद 4.7.6
13. विष्णु पुराण 3.15.52
14. महाभारत, द्रोणपर्व 94.39
15. वही, शांति पर्व 72.10
16. फलोदी से प्राप्त वि.सं. 1236 का अभिलेख
17. सेवाड़ी के महावीर मंदिर का 1090 ई. का अभिलेख
18. सांडेराव पाषाण लेख 1164
19. बाली के निकट लालराई के शांतिनाथ मंदिर का 1176 ई. शिलालेख
20. उदयपुर सिरोही मार्ग पर एक द्वार पर स्थित हस्तीकुंडी अभिलेख, शर्मा, गोपीनाथ, राजस्थान के इतिहास के स्रोत, पृष्ठ 68
21. नारलाई से प्राप्त 1138 ई. का अभिलेख
22. पाली जिले में 1143 ई.का बाली के बोला माता मंदिर का स्तंभ लेख

23. वि.सं. 1069 का जोधपुर ताम्रपत्र
24. वि.सं. 1051 का बालेरा, जोधपुर से प्राप्त दान पत्र
25. वि. सं. 1223 के जोधपुर, बाणनेरा से प्राप्त अभिलेख
26. पाली, नारलाई का लेख 1132 ई.
27. बाली का लेख 1143 ई.
28. किराडू का 1152 ई. का शिलालेख
29. जूना, बाड़मेर के आदिनाथ मंदिर का लेख 1295ई.
30. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृ.494
31. वि.सं. 1053 का हस्ती कुंडी अभिलेख
32. शर्मा, गोपीनाथ, राजस्थान के इतिहास के स्रोत-भाग 1, पृ.57
33. जोधपुर के जसवंतपुरा गांव से 10 मील की दूरी पर स्थित सुंधा पर्वत का शिलालेख 1262 ई.
34. पाली के नारलाई में महावीर मंदिर का लेख 1171 ई.
35. व्यास, श्यामप्रसाद, राजस्थान के अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन, पृ.161
36. शर्मा, दशरथ, अली चौहान डायनेस्टी पृष्ठ 336-37

आजमगढ़ क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालय छोड़ने वाले छात्रों में योगदान करने वाले कारकों का अध्ययन विनीता सिंह

शोधकर्त्री, राजा श्री कृष्ण दत्त पीजी कॉलेज जौनपुर

डॉ. नीता सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, राजा श्री कृष्ण दत्त पीजी कॉलेज जौनपुर

उद्देश्य

Article Info

Volume 6, Issue 2

Page Number : 24-35

Publication Issue :

March-April-2023

Article History

Accepted : 01 April 2023

Published : 10 April 2023

यह अध्ययन आजमगढ़ क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालय छोड़ने वाले छात्रों में योगदान करने वाले कारकों पर जांच का एक सिंहावलोकन प्रदान करता है। जांच में मौजूदा शोध की समीक्षा, सर्वेक्षणों, साक्षात्कारों और फोकस समूहों के माध्यम से डेटा संग्रह, डेटा का विश्लेषण, कारकों की पहचान, सिफारिशों का विकास और सिफारिशों के कार्यान्वयन और निगरानी शामिल है। पहचाने गए कारकों में स्कूल के बुनियादी ढांचे, शिक्षक की गुणवत्ता, छात्र प्रेरणा और माता-पिता की भागीदारी से संबंधित मुद्दे शामिल हैं। सिफारिशों का उद्देश्य आजमगढ़ के प्राथमिक विद्यालयों में इन मुद्दों को हल करना और छात्रों को बनाए रखने में सुधार करना है। आजमगढ़ क्षेत्र में छात्रों के शैक्षिक परिणामों में सुधार के लिए जांच नीति निर्माताओं, शिक्षकों और हितधारकों के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है।

परिचय

प्राथमिक शिक्षा बच्चों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास के लिए एक महत्वपूर्ण आधार है। हालांकि, भारत में शिक्षा में महत्वपूर्ण निवेश के बावजूद, काफी संख्या में छात्र अपनी शिक्षा पूरी करने से पहले प्राथमिक विद्यालय छोड़ना जारी रखते हैं। आजमगढ़ क्षेत्र में, उत्तर प्रदेश राज्य का एक क्षेत्र, प्राथमिक स्कूल के छात्रों के बीच एक महत्वपूर्ण ड्रॉपआउट दर है। इस मुद्दे का छात्रों के शैक्षिक परिणामों और क्षेत्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण प्रभाव है।

इस जांच का उद्देश्य उन कारकों की पहचान करना है जो आजमगढ़ क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों को छोड़ने वाले छात्रों में योगदान करते हैं। इन कारकों की पहचान करके, इस जांच का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों में छात्र प्रतिधारण में सुधार और क्षेत्र में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सिफारिशें विकसित करना है।

इस जांच में विषय पर मौजूदा शोध की समीक्षा, सर्वेक्षणों, साक्षात्कारों और फोकस समूहों के माध्यम से डेटा संग्रह, डेटा का विश्लेषण, कारकों की पहचान, सिफारिशों का विकास और सिफारिशों के कार्यान्वयन और निगरानी शामिल होगी।

यह जांच आवश्यक है क्योंकि यह आजमगढ़ क्षेत्र में छात्रों के शैक्षिक परिणामों को बेहतर बनाने के लिए नीति निर्माताओं, शिक्षकों और हितधारकों के लिए बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है। यह उन कारकों की व्यापक समझ में भी योगदान दे सकता है जो प्राथमिक विद्यालयों में छात्र छोड़ने की दर में योगदान करते हैं और भारत में शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं को सूचित करते हैं।

प्रतिदर्श चयन:

किसी भी अध्ययन के नमूने का आकार जनसंख्या (जनसंख्या) का वह हिस्सा है जो पूरी आबादी की सभी विशेषताओं का स्पष्ट रूप से प्रतिनिधित्व करता है; इसलिए, नमूना जनसंख्या का एक सबसेट है। चयनित नमूने पूरी आबादी के प्रतिनिधि हैं। या नहीं, इसका भी परीक्षण करना आवश्यक होता है।

शोध में न्यादर्श चयन सबसे महत्वपूर्ण चरण है। व्यावहारिक और सामाजिक दोनों स्थितियों में नमूनाकरण बहुत महत्वपूर्ण है। इस शोध के बिना कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। हालांकि सैम्पलिंग का प्रयोग वैज्ञानिक विषयों में किया जाता है। हालांकि, नमूना चयन के साथ कोई समस्या नहीं है। यह जनसंख्या को उसके शुद्धतम रूप में दर्शाता है, जनसंख्या का जो भी प्रतिशत सुलभ है। हालांकि, सामाजिक विषयों में एक नमूने के चयन में प्राथमिक चुनौती यह है कि नमूना की इकाइयों को उस आबादी से कैसे चुना जाए जो इसका प्रतिनिधित्व कर सकती है; पूरी आबादी की जांच करना असंभव नहीं तो मुश्किल है। न्यादर्श प्रविधि से शोध कार्य को व्यवहारिक तथा समय, धन, शक्तिदृष्टि से मितव्ययी बनाया जा सकता है।

जब जनसंख्या में एक चर की इकाइयों में से एक (एक इकाई, वस्तुओं का संग्रह, या मनुष्य) को इसके सटीक मूल्य को निर्धारित करने के लिए चुना जाता है, तो जनसंख्या को नमूना कहा जाता है। नमूनाकरण एक आबादी में एक चर की कुछ इकाइयों को चुनने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है, साथ ही उन इकाइयों के सेट को भी चुना जाता है जिन्हें नमूना लेने के लिए चुना गया था।¹⁸

केवल जब नमूने में प्रतिनिधित्व और पर्याप्तता की विशेषताएं हों तो इसे पूर्ण होने का दावा किया जा सकता है।

उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध-कार्य में न्यादर्श का चयन शोद्देश्य न्यादर्श काचयन एक विशेष लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किया गया और स्तरीकृत यादृक्षिक न्यादर्श जनसंख्या को किसी न किसी मानदण्ड के आधार पर वर्गों में विभक्त कर लेते हैं। यह विभक्त अनुमानित एवं अनुपातिक दोनों हो सकता है।

अध्ययन के प्रमुख चर

- ड्राप आउट
- जाति
- धर्म
- लिंग
- पैत्रिक आर्थिक स्थिति
- पैत्रिक शिक्षा
- क्षेत्र-शहरी ग्रामीण अर्थात् टाउन ध्यामीण
- विद्यालय

अध्ययन के लिए आजमगढ़ जिले के विभिन्न हिस्सों के प्राथमिक विद्यालयों को चुना गया था। प्राथमिक विद्यालयों की संख्या अधिक होने के कारण लॉटरी द्वारा विद्यालयों का चयन किया गया।

प्राथमिक स्तर पर स्कूल छोड़ने वाले विद्यार्थियों की कठिनाइयों के अध्ययन के भाग के रूप में आजमगढ़ जिले को छोड़कर विभिन्न प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों, सरकारी और गैर-सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालयों को शोध के लिए चुना गया है।

बूढ़नपुर तहसील के अन्तर्गत आने वाले विकास खण्ड (ब्लाक)

1- अतरौलिया

2- कोयलसा

3- अहरौला

बूढ़नपुर तहसील के अन्तर्गत आने वाले विकास खण्डों में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या

अतरौलिया 1-79

कोयलसा 1-100

बेसिक शिक्षा परिषद, जिला परिषद और नगर पालिका, समाज कल्याण विभाग, और जिला स्कूल निरीक्षक सहित विभिन्न संगठनों द्वारा बुनियादी और उच्च प्राथमिक विद्यालयों की सूची दी गई थी।

• विद्यार्थी

वर्तमान अध्ययन का नमूना उन छात्रों से बना है जो बाहर हो गए हैं। बुधनपुर तहसील के तीनों विकासखंडों के सभी प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा एक में पंजीकृत 1.5महिला छात्राओं में से कोई भी माध्यमिक शिक्षा ग्रहण नहीं कर रही है या जो पुनः प्रवेश ले रहे हैं उन ड्राप आउट्स छात्रों को जिनकी संख्या 1424 एवं रिपीटर्स छात्रों को जिनकी संख्या 416 है, को न्यादर्श के अन्तर्गत किया गया है। इन छात्रों को जातिवर्ग, धर्म व लिंग वर्ग, आर्थिक वर्ग में विभक्त किया गया है और उनके ड्राप आउट एवं रिपीटर की स्थिति देखी गयी। उनके अभिभावक को भी शिक्षा वर्ग में विभक्त करके ड्राप आउट एवं रिपीटर्स की स्थिति देखी गयी। उनके पुनरावर्तक और छोड़ने वालों के कारणों की जांच की गई है। यह नमूना राष्ट्र और शिक्षा का प्रतिनिधि होगा, और परिणाम सार्वभौमिक और शाश्वत होंगे।

3.4 उपकरण का विवरण

डेटा संग्रह हर शोध परियोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। उपकरण वे उपकरण हैं जिनका उपयोग किसी समस्या को हल करने के लिए अज्ञात डेटा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। अनुसंधान के लिए, तीन प्रकार के उपकरण हैं: मानकीकृत, गैर-मानकीकृत और स्व-निर्मित उपकरण। इस अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

ड्राप आउट्स देखने हेतु प्रश्नावली

शोधकर्ता ने बुधनपुर तहसील में प्राथमिक प्राइमरी स्कूल स्तर पर ड्रापआउट की जांच के लिए दो प्रकार की प्रश्नावली तैयार की।

प्रथम प्रश्नावली विद्यार्थियों के लिए सरल तथा बोधगम्य बनायी गयी। है, जिससे प्रश्नों के समझने में कठिनाई न हो। प्रथम प्रश्नावली में पहले 54 प्रश्न तैयार किया गया जिसे कुछ शिक्षाविदों तथा प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को दिखाई गयी, उनके परामर्श से 11 प्रश्न निकाल दिये गये, जो उपयुक्त नहीं थे। इस प्रश्नावली में कुल 43 प्रश्नों में कक्षा 1 से 5 तक की पढ़ाई बीच ही में छोड़ने के कारण से सम्बंधित है, उसका मुद्रण करवाया गया जिसका प्रारूप परिशिष्ट में संग्रहीत है। इन पूछताछों को छात्र समस्याओं की चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है: शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत। इन क्षेत्रों में क्रमशः 19 और 6 प्रश्न रखे गये हैं।

दूसरी प्रश्नावली में विद्यालय स्तर पर ड्राप आउट्स के कारणों को जानने के लिए 25 एकांश तैयार किये गये थे परन्तु बाद में कुछ शिक्षाविदों एवं प्रधानाध्यापकों के परामर्श से 8 एकांश को निकाल दिये गये जो उपयुक्त नहीं थे। यह प्रश्नावली सादे अंग्रेजी में लिखी गई थी और छपाई के लिए इसे 17 खंडों में विभाजित किया गया था। जिसका प्रारूप परिशिष्ट में संग्रहीत है। यह विषय शैक्षिक मुद्दों के चार क्षेत्रों पर केंद्रित है—शैक्षिक स्थिति, शैक्षिक सामग्री, निर्देशात्मक तरीके और शैक्षिक दृष्टिकोण (छात्र, शिक्षक, सरकार, माता-पिता)। इन क्षेत्रों में कुल एकांश क्रमशः 3 और 6 हैं जिसे अग्रांकित एक टेबल दिखाया गया है।

3.5 विशेषज्ञ से परामर्श

आँकड़ों का संग्रह करने के लिए अनुसूची कहा तक उपयुक्त है, कहाँ तक नहीं, इसकी जानकारी हेतु अनुसूची को निर्देशक को दिखाया जाय। अनुसूची प्रतिबंधित स्वरूप की बनायी गई थी। निर्देशक ने उस अनुसूची को प्रतिबंधित एवं खुली दोनों स्वरूपों के प्रश्नों के निर्माण करने के लिए परामर्श दिया। अनुसूची पुनरु मिश्रित स्वरूप की बनायी गयी। इसको पुनः निर्देशक को दिखाया गया। उन्होंने अनुसूची को छोटे-न्यादर्श पर प्रयोग करने की अनुमति दे दी। यह अनुसूची परिशिष्ट एक में संलग्न है।

3.6 प्राथमिक परीक्षण

जो अनुसूची बनायी गयी उसे टाइप कराया गया टाइप कराकर ड्राप आउट एवं रिपीटर्स हेतु जौनपुर जिले के बदलापुर ब्लाक, तियरा, एवं कँही खुर्द के ड्राप आउट एवं रिपीटर छात्रों के पच्चीस अभिभावक को अनुसूची भरने के लिए दिया गया। अभिभावक ने अनुसूची भरकर वापस किया। वापस की गयी अनुसूची के प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का विश्लेषण किया गया। इससे यह ज्ञात हुआ कि चौथे प्रश्न जिसमें परिवार के सदस्यों के विवरण के विषय में पूछा गया है, में सदस्यों की संख्या लिखने की कम जगह थी। बाद में जब अनुसूची पुनः बनायी गयी तब पर्याप्त जगह छोड़ी गयी इसके अतिरिक्त प्रश्न संख्या 7 में माता-पिता का परदेश गमन एवं छात्रों का दुकान कार्य में लगना दो कारण और बढ़ाया गया इन्हें ऊपर-नीचे के क्रम में लिखा गया। इसी प्रकार रिपीटर्स की अनुसूची छपायी गयी निर्देशक को दिखाया गया। उन्होंने अनुसूची को छोटे न्यादर्श पर प्रयोग करने की अनुमति दे दी।

सांख्यिकीय प्रविधियां

अनुसंधान में, सांख्यिकीय दृष्टिकोण एक मार्गदर्शन के रूप में कार्य करते हैं। डेटा एकत्र किए जाने के बाद, पहले सारणीकरण किया जाता है, उसके बाद सांख्यिकीय दृष्टिकोण।

डेटा विश्लेषण के दृष्टिकोण से, किसी भी जांच में सांख्यिकीय दृष्टिकोण का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। उपकरण की इकाइयों के निर्माण और परीक्षण के दौरान इस पर विचार किया जाना चाहिए। आँकड़ों को इस रूप में एकत्र

करना चाहिए जिससे उसका विश्लेषण तथा अर्थ निकालना आसान एवं सरल बन जाये। इस अध्ययन में उपकरणों का उपयोग करते हुए और इकाइयों का निर्माण करते समय केवल व्यवहार्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण लागू किए गए थे।

प्रयुक्त सांख्यिकी –

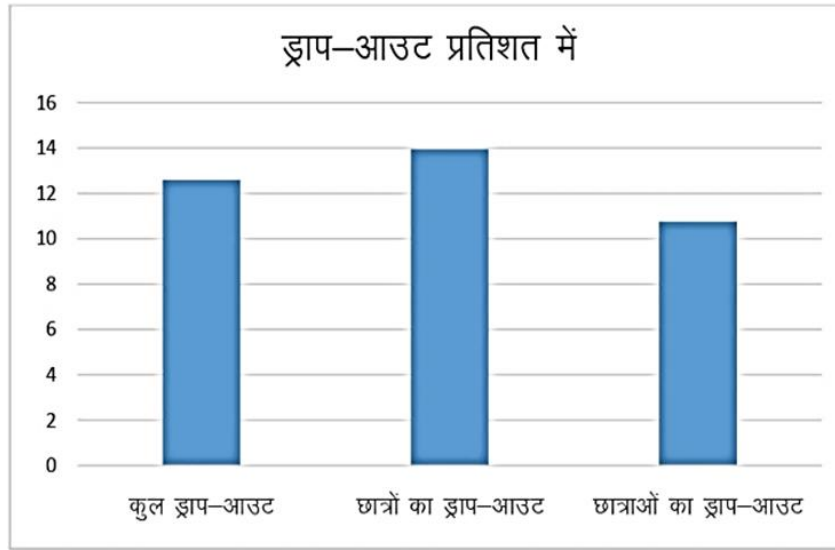
शोधकर्ता ने इस अध्ययन में केवल पर्सेंटाइल वैल्यू को नियोजित किया है और किसी अतिरिक्त आंकड़े का उपयोग नहीं किया है। अपनी गाइडबुक में, शोधकर्ता ने स्कूल के आंकड़ों के आधार पर चुने हुए क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों में नामांकित विद्यार्थियों की संख्या दर्ज की। प्राइमरी स्कूल के सभी पाठ्यक्रमों में ड्रॉपआउट की पहचान की गई। तत्पश्चात ड्रॉप-आउट छात्रों के माता-पिता को निर्धारित साक्षात्कार को देखकर और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति से उनकी शैक्षिक, आर्थिक, जाति, लिंग और धार्मिक स्थिति के बारे में जानने के बाद इन बिंदुओं के तहत वर्गीकृत किया गया था। संख्या जानकर उससे प्रतिशत मान निकाला गया इसके साथ-साथ ड्राप आउट्स के कारणों को भी इन्हीं उपकरणों की सहायता से जाना गया। प्रत्येक कारण पर ड्रॉप आउट रिपीटर्स की संख्या का उपयोग इन कारणों पर ड्रॉप आउट के प्रतिशत मूल्य की गणना के लिए किया गया था।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

डेटा संग्रह और वर्गीकरण का वर्णन पिछले अध्याय में किया गया था; अब, इस अध्याय में डेटा विश्लेषण, व्याख्या और परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं। जनपद जौनपुर के बदलापुर तहसील के कुल 11297 बच्चों का नामांकन मान्यता प्राप्त प्राथमिक विद्यालयों में कराया गया। इन बच्चों के नामांकन को किंडरगार्टन से पांचवीं कक्षा तक ट्रैक किया गया था। उनमें ड्रॉपआउट और रिपीटर्स पाए गए। वे सूची में थे। ड्रॉप-आउट की कुल संख्या 1424 थी, जबकि इस पद्धति में रिपीटर्स की कुल संख्या 416 थी। कक्षा एक में स्कूल छोड़ने वाले और दोहराने वालों की संख्या कम थी। वास्तविक समस्या ड्राप आउट्स की कक्षा 2 एवं 3 में उत्पन्न होती है एवं रिपीटर्स सबसे अधिक कक्षा पाँच में मिले।

कक्षा में दाखिला लेने के बाद, कक्षा से कक्षा तक ड्रॉपआउट और रिपीटर्स की भर्ती की गई। सबसे पहले, नामांकित छात्रों की संख्या, उन्हें प्राप्त होने वाले ड्रॉप-आउट और रिपीटर्स की संख्या, और उनका प्रतिशत मूल्य, साथ ही छात्रों की अलग-अलग संख्या और नामांकन से बाहर हुई लड़कियों, उनके द्वारा प्राप्त किए गए ड्रॉप-आउट और रिपीटर्स की संख्या, और कुल नामांकन के सापेक्ष उनका प्रतिशत और प्रतिशत मूल्य। यह टेबल सेट करने का समय है।

	ड्रॉप-आउटप्रतिशत में
कुल ड्रॉप-आउट	12.60
छात्रों का ड्रॉप-आउट	13.95
छात्राओं का ड्रॉप-आउट	10.76



नीचे दी गई जानकारी के अनुसार, वर्तमान में 11297 छात्र नामांकित हैं, जिनमें से 1424 छात्र पढ़ाई छोड़ चुके हैं। यह कुल छात्र आबादी का 12.60 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करता है।

संस्था में कुल 6514 छात्रों ने नामांकन किया है, जो कुल नामांकन का 57.66 प्रतिशत है। दूसरी ओर, स्कूल छोड़ने वाले छात्रों की संख्या 909 है, जो कुल छात्र नामांकन का 13.95 प्रतिशत और कुल नामांकन का 8.04 प्रतिशत है।

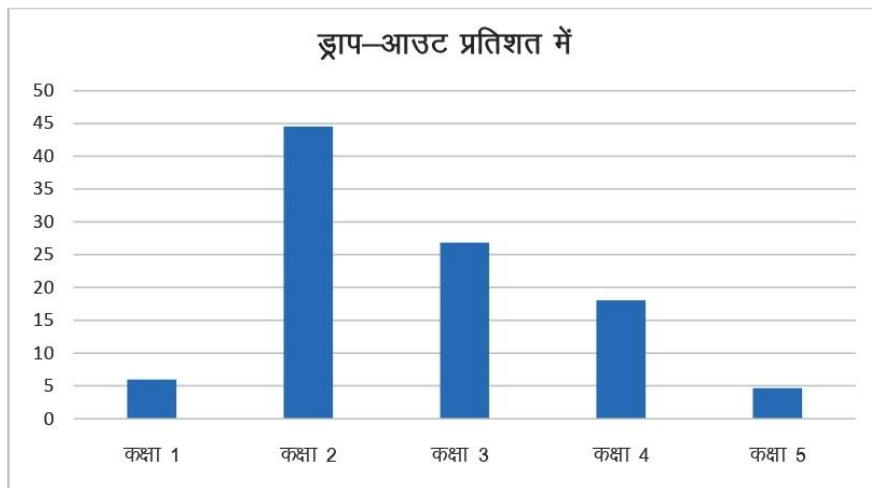
यादव राम चंद्र के शोध के परिणामस्वरूप कितने अनुपात में छात्र बाहर हो गए? के।, देवी। हाँ। जौनपुर जिले में वर्तमान शोध कार्य के अध्ययन परिणामों से प्राप्त ड्रॉपआउट का अनुपात दोनों पूर्व शोध अध्ययनों के निष्कर्ष की तुलना में काफी कम है। ड्रॉपआउट और रिपीटर्स की संख्या, जो एक प्रतिशत का आंकड़ा है, इतनी अधिक नहीं होनी चाहिए थी। जौनपुर की तरह यह जिला उच्च साक्षरता दर वाले जिले का हिस्सा है। यह अनुपात निश्चित रूप से अन्य अविकसित क्षेत्रों में अधिक होगा। वर्तमान अध्ययन के बाद, ड्रॉपआउट और रिपीटर्स के समान अनुपात की खोज की गई थी। यह चिंताजनक है और भारत की शिक्षा प्रणाली के लिए खतरा है। 1999 की विस्तारित

अवधि के दौरान ड्रॉपआउट दर में उल्लेखनीय सुधार होना चाहिए था। बहुत अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है। क्योंकि अब तक कोई ड्रॉपआउट या रिपीटर्स नहीं होना चाहिए था। महिला ड्रॉपआउट के मामले में, उनमें से बहुत सारे हैं। पहले, देवी के की तरह, उनका अनुपात लड़कों की तुलना में बड़ा था। हाँ। और यद्यपि यादव रामचंद्र के शोध के परिणाम स्पष्ट हो रहे हैं, वर्तमान अध्ययन में लड़कों की तुलना में महिलाओं में ड्रॉप-आउट और रिपीटर्स का प्रतिशत मूल्य कम है। इससे स्पष्ट है कि जौनपुर जिले में माता-पिता और छात्राएं अपनी बेटियों की शिक्षा को लेकर विशेष रूप से चिंतित हैं।

ड्रॉप-आउट और रिपीटर्स की संख्या, साथ ही कुल ड्रॉप-आउट और प्रति कक्षा नामांकन का उनका प्रतिशत मूल्य अब एक तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका संख्या 4.2

	ड्रॉप-आउट प्रतिशत में
कक्षा 1	5.96
कक्षा 2	44.52
कक्षा 3	26.82
कक्षा 4	18.04
कक्षा 5	4.63



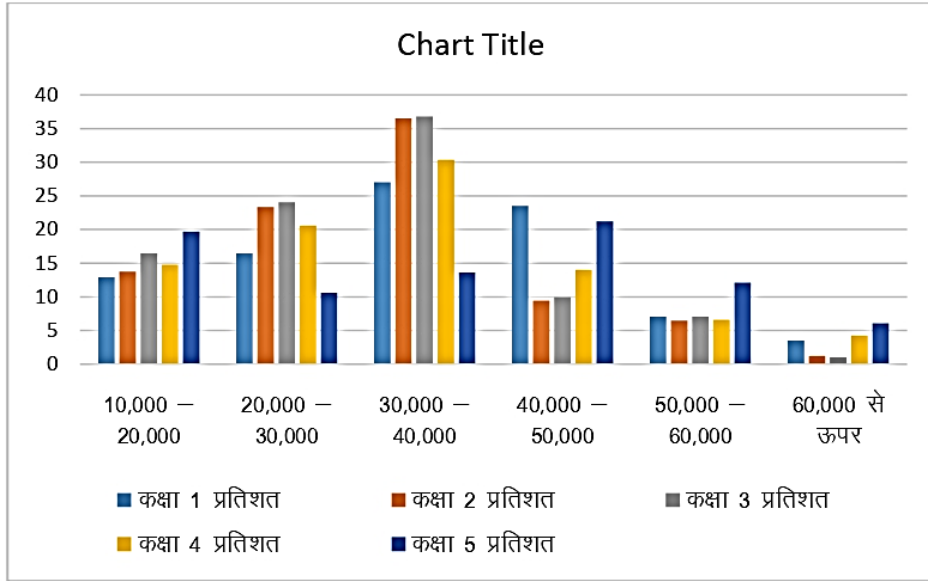
तालिका 2 से पता चलता है कि कुल छोड़ने वालों में, कक्षा एक में 5.9% कक्षा तीन में 44.52 प्रतिशत, कक्षा चार में 26.82 प्रतिशत, कक्षा पाँच में 18.04 प्रतिशत और कक्षा षष्ठ में 4.63 प्रतिशत है।

ऊपर दिए गए चार्ट से स्पष्ट है कि कक्षा ट में स्कूल छोड़ने वालों का अनुपात सबसे कम है। उच्चतम ग्रेड कक्षा 2 में है। तब से यह धीरे-धीरे घट रहा है। परिणामस्वरूप, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों में विद्यालय छोड़ने की दर निम्न कक्षाओं में अधिक है। पांचवीं कक्षा में पहुंचते-पहुंचते यह कम हो गया है। इसके कई तरह के कारण हो सकते हैं। एक कारण परिवार में ज्ञान की कमी हो सकती है। दूसरे परिवार की आर्थिक स्थिति संकट में पड़ सकती है। तीसरे प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक उदासीन और गैर-जिम्मेदार हो सकते हैं। चौथी कक्षा में सीखने के लिए मानसिक उत्साह की कमी हो सकती है। माता-पिता और शिक्षकों के साक्षात्कार ने यह सच दिखाया है।

प्रत्येक कक्षा में ड्रॉपआउट और रिपीटर्स के माता-पिता की वित्तीय स्थिति के आधार पर, प्रत्येक कक्षा में ड्रॉपआउट और रिपीटर्स की संख्या, साथ ही उनके अनुपात को दर्शाने वाली एक तालिका अब प्रकाशित की जा रही है।

प्रत्येक कक्षा में ड्रॉप-आउट्स अभिभावकों की आय के अनुसार उनके पाल्यों की कक्षावार ड्रॉप-आउट्स की संख्या एवं प्रतिशत मान की तालिका

क्रम संख्या	प्रत्येक कक्षा में ड्रॉप-आउट्स छात्रों की संख्या एवं प्रतिशत				
	कक्षा 1 प्रतिशत	कक्षा 2 प्रतिशत	कक्षा 3 प्रतिशत	कक्षा 4 प्रतिशत	कक्षा 5 प्रतिशत
10,000 - 20,000	12.94	13.77	16.49	14.78	19.69
20,000 - 30,000	16.47	23.34	24.08	20.62	10.60
30,000 - 40,000	27.05	36.54	36.81	30.35	13.63
40,000 - 50,000	23.52	9.46	9.94	14.04	21.21
50,000 - 60,000	7.05	6.46	7.06	6.61	12.12
60,000 से ऊपर	3.52	1.26	1.04	4.28	6.06



10000 रुपये की वार्षिक आय वाले माता-पिता के बच्चों में ड्रॉपआउट का अनुपात कक्षा एक में 9.41 प्रतिशत, कक्षा दो में 7.09 प्रतिशत, कक्षा तीन में 6.54 प्रतिशत और कक्षा चार में 6.54 प्रतिशत है, जैसा कि तालिका 3 में दिखाया गया है। 9.33 पांचवीं कक्षा में 16.66 प्रतिशत है।

- इनमें 12.94 प्रतिशत छात्र कक्षा एक से बाहर हो जाते हैं, 13.77 प्रतिशत छात्र कक्षा दो से बाहर हो जाते हैं, 16.49 प्रतिशत छात्र कक्षा तीन से बाहर हो जाते हैं, 14.78 प्रतिशत छात्र कक्षा चार से बाहर हो जाते हैं और 19.69 प्रतिशत छात्र बाहर हो जाते हैं। क्रमशः कक्षा पांच।
- 16.47 प्रतिशत साथी कक्षा से बाहर हो जाते हैं जब उनका वार्षिक वेतन 20000 से 30000 डॉलर के बीच होता है; कक्षा दो में 23.34 प्रतिशत ऐसा करते हैं; कक्षा तीन में 24.08 प्रतिशत ऐसा करते हैं; कक्षा चार में 20.62 प्रतिशत ऐसा करते हैं; और 10.60 प्रतिशत कक्षा पांच में ऐसा करते हैं।
- रुपया। जिन बच्चों के माता-पिता की वार्षिक आय 30000 से 40000 डॉलर के बीच है, उनमें स्कूल छोड़ने की दर कक्षा पांच में 13.63 प्रतिशत से लेकर कक्षा एक में 27.05 प्रतिशत, कक्षा दो में 36.54 प्रतिशत, कक्षा तीन में 36.81 प्रतिशत, कक्षा चार में 30.35 प्रतिशत और 13.63 है। पांचवीं कक्षा में प्रतिशत। ये दरें वर्ग स्तर पर आधारित हैं।
- 40000 रुपये से 50000 रुपये की वार्षिक आय वाले परिवारों में, स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत कक्षा में 23.52 प्रतिशत से कक्षा दो में 9.46 प्रतिशत, कक्षा तीन में 9.94 प्रतिशत, कक्षा चार में 14.04 प्रतिशत और 21.21 प्रतिशत है। पांचवीं कक्षा में प्रतिशत।

- रुपया। जिन छात्रों के परिवारों की वार्षिक आय 50000 और 60000 के बीच थी, उनमें कक्षा छोड़ने की दर 7.05 प्रतिशत, कक्षा 2 में 6.46 प्रतिशत, कक्षा तीन में 7.06 प्रतिशत, कक्षा चार में 6.61 प्रतिशत और कक्षा पांच में 12.12 प्रतिशत थी।
- क्योंकि उनके माता-पिता 60000 रुपये से अधिक कमाते हैं, कक्षा एक में 3.52 प्रतिशत बच्चे, कक्षा दो में 1.26 प्रतिशत छात्र, कक्षा तीन में 1.04 प्रतिशत छात्र, कक्षा चार में 4.28 प्रतिशत और कक्षा पांच में 6.06 प्रतिशत बच्चे पढ़ते हैं। स्कूल छोड़ दिया।
- 30000 से लेकर के 40000 वार्षिक आय वाले अभिभावक के पाल्यों का ड्रॉप आउट कक्षा 1 2 3 एवं कक्षा 4 में है। तथा 40 से 50 हजार आमदनी वाले अभिभावक के पाल्यों का ड्रॉप आउट कक्षा पाँच में सर्वाधिक है और सबसे कम ड्रॉप आउट 60 हजार से ऊपर आयद्वर्ग वाले अभिभावक के पाल्यों का सभी कक्षाओं में है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि निम्न आयद्वर्ग वाले अभिभावक के पाल्यों का ड्रॉप आउट मध्यम आयद्वर्ग वाले अभिभावक के पाल्यों से कम ड्रॉप आउट होता है और उच्च आयद्वर्ग वाले अभिभावक के पाल्यों का ड्रॉप-आउट्स सबसे कम होता है तथा मध्यम आय वर्ग वाले अभिभावक के पाल्यों का ड्रॉप आउट सबसे अधिक होता है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन ने कई कारकों की पहचान की है जो आजमगढ़ क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों को छोड़ने वाले छात्रों में योगदान करते हैं, जिनमें स्कूल के बुनियादी ढांचे, शिक्षक की गुणवत्ता, छात्र प्रेरणा और माता-पिता की भागीदारी शामिल है। इन कारकों के आधार पर, प्राथमिक विद्यालयों में छात्र प्रतिधारण में सुधार करने के लिए सिफारिशें विकसित की गई हैं, जैसे कि स्कूल के बुनियादी ढांचे में सुधार, शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास प्रदान करना, माता-पिता की भागीदारी बढ़ाना और छात्र प्रेरणा कार्यक्रमों को लागू करना।

इन सिफारिशों को लागू करने के लिए नीति निर्माताओं, शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के नेताओं सहित विभिन्न हितधारकों के सहयोग और समन्वय की आवश्यकता होगी। छात्रों के ड्रॉपआउट दर में योगदान देने वाले मुद्दों को संबोधित करते हुए, इस जांच की सिफारिशें आजमगढ़ क्षेत्र में शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ा सकती हैं और छात्रों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास में सुधार कर सकती हैं।

कुल मिलाकर, यह जांच भारत और अन्य क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा में समान चुनौतियों का सामना करने वाले नीति निर्माताओं, शिक्षकों और हितधारकों के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है। निष्कर्ष शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं को सूचित कर सकते हैं जो छात्र प्रतिधारण को प्राथमिकता देते हैं और बच्चों के समग्र विकास का समर्थन करते हैं।

संदर्भ

- [1]. एमएचआरडी। (2018)। शैक्षिक सांख्यिकी एक नज़र में। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- [2]. सिंह, ए., और खातून, एस. (2017)। प्राथमिक शिक्षा में ड्रॉपआउट दररु वाराणसी में ग्रामीण स्कूलों का एक अध्ययन। आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, 22(8), 1-7।
- [3]. गुप्ता, एम। (2016)। ग्रामीण उत्तर प्रदेश में प्राथमिक विद्यालय छोड़ने वाले छात्रों पर एक अध्ययन। द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 3(1), 38-47।
- [4]. राणा, आर., और कुमारी, एस. (2018)। प्राथमिक स्कूल के छात्रों के बीच ड्रॉपआउट को प्रभावित करने वाले कारकरु हिमाचल प्रदेश में शिमला जिले के ग्रामीण क्षेत्रों का एक अध्ययन। मानविकी और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 8(1), 1-6।
- [5]. यूनेस्को। (2016)। लोगों और ग्रह के लिए शिक्षा सभी के लिए स्थायी भविष्य बनाना। वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट।
- [6]. सिंह, वी.के., सिंह, ए., और सिंह, आर. (2015)। एनईआर में स्कूल छोड़ने वाले निर्धारकों का एक अनुभवजन्य अध्ययनरु मेघालय से साक्ष्य। जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एडमिनिस्ट्रेशन, 4(1), 8-20।
- [7]. कुंडू, ए.के. (2014)। ग्रामीण भारत में स्कूल नामांकन और प्रतिधारण को प्रभावित करने वाले कारकरु एक अनुभवजन्य अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल इकोनॉमिक्स, 41(6), 476-492।
- [8]. नाइक, जे.के., और पटनायक, एस. (2017)। आंध्र प्रदेश में अनुसूचित जाति के छात्रों के बीच स्कूल छोड़नारु एक केस स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 7(2), 46-59।
- [9]. चौधरी, एन। (2018)। भारत में आदिवासी छात्रों के बीच स्कूल छोड़ने की दर को प्रभावित करने वाले कारकों पर एक अध्ययन। मानवविज्ञानी, 33(3), 253-264।
- [10]. देसाई, एस., दुबे, ए., जोशी, बी. एल., और सेन, एम. (2017)। भारत मानव विकास सर्वेक्षण-द्वितीय (आईएचडीएस-द्वितीय), 2011-12। राजनीतिक और सामाजिक अनुसंधान खवितरक, के लिए इंटर-यूनिवर्सिटी कंसोर्टियम, एन आर्बर, एमआई।
- [11]. शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। भारत सरकार।
- [12]. अल्वी, एस। (2017)। पाकिस्तान में प्राथमिक विद्यालयों में लड़कियों के नामांकन और प्रतिधारण को प्रभावित करने वाले कारक। जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 8(7), 9-15।
- [13]. शुक्ला, आर., और सिंह, पी. (2018)। वाराणसी, भारत के प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों की ड्रॉपआउट दर में योगदान करने वाले कारक। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 5(7), 24-28।
- [14]. कांडपाल, के., और सिंह, पी. (2017)। भारत में स्कूल छोड़ने वालों की संख्यारु साहित्य की समीक्षा। जर्नल ऑफ एजुकेशनल एंड सोशल रिसर्च, 7(3), 65-69।
- [15]. एनसीईआरटी। (2019)। आजादी के बाद से भारत में शैक्षिक विकास। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, भारत सरकार।

यथार्थबोध: एक अध्ययन

पूनम

शोधार्थी, डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

Article Info

Volume 6, Issue 2

Page Number : 36-40

Publication Issue :

March-April-2023

Article History

Accepted : 01 April 2023

Published : 10 April 2023

शोधसारांश— यह सच ही कहा गया है, कि साहित्य समाज का दर्पण होता है, क्योंकि साहित्य के द्वारा ही किसी भी युग में तात्कालिक सांस्कृतिक जीवन का वास्तविक ज्ञान हमें प्राप्त होता है। क्योंकि साहित्य समाज से सीधा जुड़ा रहता है और समाज में जो भी घटनाएं घटित होती हैं, वही साहित्य में लिखी जाती हैं, अतः सामाजिक अनुभूतियां और संवेदना ही साहित्य का विषय बनती हैं और सामाजिकता का वास्तविक ज्ञान ही यथार्थ है। अतः साहित्य को सही तरह से पहचानने के लिए यथार्थवाद या यथार्थ को जानना अति आवश्यक है। इस आलेख के माध्यम से हम यथार्थबोध को विस्तार से जानेंगे।

मुख्य शब्द— यथार्थबोध, यथार्थ, वास्तविकता, वास्तविक आदि।

परिचय— हिंदी साहित्य के क्षेत्रा में यथार्थवादी चेतना का उद्भव आधुनिक युग में हुआ है। प्रेमचंद युग से हमें यथार्थवाद का वास्तविक स्वर दिखाई देता है, उसके पश्चात से लेकर स्वातंत्रयोत्तर युद्ध काल तक के कथाकार जीवन में यथार्थवाद हमें लगातार दिखाई देता है। इसी क्रम में महिला कथाकार भी यथार्थ के निरूपण में पीछे नहीं रही है और इन्हीं कथाकारों में उषा प्रियंवदा, अलका सरावगी, रमणिका गुप्ता आदि तमाम नाम शामिल हैं, जिन्होंने मानव जीवन की विडंबनाओं और जटिलताओं को संवेदना के धरातल पर यथार्थ पर अभिव्यक्ति प्रदान की है। यथार्थवादी कथाकारों ने वही लिखा है जो उन्होंने अपने आसपास अनुभव किया देखा है जैसे उषा प्रियंवदा ने लिखा है— “कि मैं वही लिखती हूं जिससे मैं परिचित हूं.....”

प्रेमचंद के समय में कहानी में यथार्थवाद का आरंभ हुआ। प्रेमचंद पहले क्रांतिकारी कहानीकार हैं जिन्होंने हिंदी कहानी को कल्पना लोक से निकालकर यथार्थ की ठोस भूमि प्रदान की और उन्होंने सबसे पहले हिंदी कहानी के शिल्प और शैली को नया रूप दिया। हिंदी कहानी में पहली बार पीड़ित शोषित दलित और मजदूरों की समस्याओं का चित्रण प्रेमचंद ने किया है।

यथार्थ — यथार्थ शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द 'रियल' का समानार्थी है, जिसका अर्थ है वास्तविक (वस्तु संबन्धी)। यथार्थ शब्द का उद्भव दो अक्षरों के मेल से हुआ है “यथा” और “अर्थ”। यथा का हिंदी मतलब होता है ‘जैसा’ और अर्थ का मतलब होता है ‘वस्तु, तत्व, द्रव्य, पदार्थ’ आदि। संसार की प्रत्येक वस्तु जिसका अनुभव हमें अपनी इन्द्रियों द्वारा होता है, यथार्थ कहलाती है। सामान्य रूप से यथार्थ का अर्थ होता है “जैसा होना चाहिए ठीक वैसा, उचित, वास्तविक, सच्चा”। रामचंद्र वर्मा द्वारा संपादित मानक हिंदी कोश में यथार्थ का अर्थ बताया है— जो अपने अर्थ आदि के ठीक अनुरूप हो, ठीक, उचित, जैसा होना चाहिए ठीक वैसा ही, वाजिव। इसी प्रकार नागेंद्र द्वारा संपादित साहित्य कोश में यथार्थ का अर्थ बताया है— जिसका अस्तित्व वास्तव में है।

यथार्थवाद का अभिप्राय— यथार्थवाद (रियलिज्म) 2 शब्दों यथार्थ (वास्तविक) और वाद (सिद्धांत) के योग से मिलकर बना है जिसका अर्थ है “जीवन की सच्ची अनुभूति और वास्तविकता का सिद्धांत”। यथार्थवाद भौतिकवादी जगत को मानता है और आदर्शवाद के द्वारा जगत को मिथ्या कहने वाली भावना का विरोध करता है। साहित्य जगत में यह सोचने का एक विशिष्ट तरीका है, जिसके अनुसार लेखक दुनिया और अपने समाज में हो रहे परिवर्तनों की वास्तविकता को अपनी कलम द्वारा सजीव चित्रित करता

है। यथार्थवाद के अनुसार मनुष्य को अपने चारों ओर के वातावरण का ज्ञान होना चाहिए और उसे जानकारी होनी चाहिए कि वह उस वातावरण को परिवर्तित कर सकने में सक्षम है या नहीं, और इसी ज्ञान के अनुसार ही उसे अपने कार्य करने चाहिए, जैसे डॉ. भीमराव आंबेडकर को अपनी जाति के लोगों की वास्तविकता का पूर्ण ज्ञान था और उनकी परेशानियों से भी वे भलीभाँति परिचित थे और वे यह भी जानते थे कि दलित जाति के लोगों की यथार्थ परेशानियों को कैसे बदला जा सकता है। इसी तरह कई क्रांतिकारी लेखक हुए हैं जिन्होंने अपनी लेखनी के बल पर समाज की तमाम बुराइयों को उजागर करके समाज को उसे दूर करने को मजबूर किया है। वास्तव में साहित्य में यथार्थवाद आधुनिक युग की देन है। कला और साहित्य के क्षेत्र में यथार्थवाद का उद्भव लगभग 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में फ्रांस में हुआ था और यथार्थवाद पर सर्वप्रथम विचार प्रकट करने वाले मर्क्यू फ्रांसे का नाम लिया जाता है, उन्होंने 1828 ईसवी में यथार्थवाद पर एक निबंध लिखकर कला और साहित्य के क्षेत्र में इसे स्थापित किया था। यथार्थवाद के मूल में वैज्ञानिक आविष्कार और औद्योगिक क्रांति विद्यमान है, जिसने जीवन और जगत को देखने की एक नवीन दृष्टि प्रदान की और नई सामाजिक व्यवस्था को जन्म दिया। लगभग सभी आधुनिक दौर की महिला कथाकारों ने अपनी कहानियों में यथार्थबोध का उल्लेख किया है।

यथार्थवाद की परिभाषाएँ— यथार्थवाद एक विश्वास का सिद्धांत है जो जगत को जाँच-परख कर वैज्ञानिक तरीके से स्वीकार करता है और वह जगत को वास्तविक मानता है।

स्वामी रामतीर्थ— इनके अनुसार यथार्थवाद स्वीकारता है कि हम जो कुछ भी अपनी इंद्रियों के माध्यम से प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं, उसका कारण वस्तुओं का एक यथार्थ जगत है।

जे.एस.रॉस— इनके अनुसार यथार्थवाद संसार को उसके मूलरूप (जिसमें वह दिखायी देता है) में स्वीकार करता है।

बटलर— इनके अनुसार यथार्थवाद का प्रमुख विचार यह है कि वास्तव जगत की सभी वस्तुएँ (पदार्थ) वास्तविक हैं और उनका अस्तित्व उसे देखने वाले से अलग है अर्थात् अगर उन पदार्थों को देखने वाले या महसूस करने वाले न हों तब भी उन पदार्थों का अस्तित्व रहेगा।

कार्टर वी. गुड— इसके अनुसार वास्तविक या भौतिक जगत चेतन मन से स्वतन्त्र रूप से अस्तित्व रखता है तथा उसके गुण और प्रकृति उसके ज्ञान से ज्ञात होते हैं।

डॉ. त्रिभुवन सिंह— किसी वस्तु का ज्यों का त्यों ग्रहण करना ही यथार्थवाद का चित्रण है परन्तु साहित्यकार फोटोग्राफर नहीं होता है, वह निर्माता होता है। साहित्य में जो कुछ भी यथार्थ में चित्रण किया जाता है वह वस्तुओं का तद्वत चित्रण न होकर संप्लेषणात्मक चित्रण होता है। साहित्यकार मात्रा उसका चित्रण ही नहीं करता बल्कि चुनाव भी करता है। वह प्रस्तुत दृश्य को ज्यों का त्यों नहीं चित्रित करता बल्कि अपनी रुचि के अनुसार वस्तु के दृश्यों को नये सिरे से सजाता है और फिर उसका चित्रण करता है। यही कारण है कि एक वस्तु का विभिन्न साहित्यकारों द्वारा अलग-अलग तरीकों से विश्लेषण एवं चित्रण किया जाता है। इस प्रकार वस्तु जगत और भाव जगत के सत्य में अन्तर दिखता है।

बाबू गुलाबराय— इनके अनुसार हमारे सामने नित्यप्रति घटने वाली घटनाएँ ही यथार्थ हैं। उसमें धूप-छाँव, पाप-पुण्य और सुख-दुःख आदि मिश्रित रहता है। यह सामान्य भाव भूमि के धरातल पर रहकर वर्तमान की वास्तविकता से सीमाबद्ध रहता है।

प्रेमचन्द— इनके अनुसार आजकल के लेखक अनोखे ओर विशिष्ट चरित्रों की खोज में अपनी शक्ति नष्ट कर देते हैं। जबकी उनको चाहिए कि वहाँ जाएँ जहाँ देश की वास्तविक आबादी रहती है और उन सीधे-साधे लोगों का वर्णन करो, यही यथार्थवाद है।

लुकाच— इनके अनुसार लेखक अपने आसपास जो भी देखता है उसका निडरतापूर्वक पूरी ईमानदारी व निष्पक्षता से वर्णन करना ही यथार्थवाद है।

एंगेल्स— इनके अनुसार— “मेरे विचार से ‘यथार्थवाद’ का आशय यह है कि लेखक विवरणों और ब्यौरों के सत्य प्रस्तुतीकरण के अलावा प्रतिनिधि पात्रों को प्रतिनिधि परिस्थितियों में सच्चाई के साथ चित्रित करे।

नगेन्द्र— इनके अनुसार यथार्थवाद से तात्पर्य उस दृष्टिकोण से है जिसमें कलाकार अपने व्यक्तित्व को यथार्थ संभव तटस्थ रखते हुए वस्तु को, जैसी वह है वैसी ही देखता है और चित्रित करता है अर्थात् यथार्थवाद के लिए वस्तुगत दृष्टिकोण अनिवार्य है।

शिवकुमार मिश्र— इनके अनुसार सच्चे तथा महान यथार्थवाद का लक्ष्य समाज, जीवन तथा मनुष्य के जीवन के यत्रा-तत्रा बिखरे स्फुट अंशों को ही परखने और मूर्त करने का नहीं होता; वरन् उनकी दृष्टि इनके संपूर्ण रूप को उभारने की ओर रहती है। वह उन्हें इनकी ‘संपूर्णता’ में ही देखने पर बल देता है।

अतः वस्तु या परिस्थिति की वास्तविक तस्वीर दिखाना ही यथार्थवाद है।

यथार्थवाद की विशेषताएं— यथार्थवाद की निम्नलिखित विशेषताएं हैं—

- यह साहित्य की एक विशेष चिंतन पद्यति है। इसके अनुसार साहित्यकार या लेखक अपने समाज और वाह्य जगत में होने वाले परिवर्तनों एवं घटनाओं का यथातथ्य चित्रण करता है।
- यथार्थवादी जीवन की सुन्दर घटनाओं के मुकाबले असुन्दर घटनाओं का वर्णन करने को बहुत महत्व देता है।
- संसार के लगभग सभी साहित्यों में यथार्थवाद मौजूद है। अर्थात् यह सर्वव्यापी है।
- यथार्थवाद संसार में क्रांति, परिवर्तन और सुधार का कारक है।
- यथार्थवाद के मूल में औद्योगिक क्रांति एवं वैज्ञानिक आविष्कार मौजूद हैं। इसके द्वारा ही जीवन को देखने की नवीन दृष्टि प्राप्त हुई है जिससे एक नई सामाजिक व्यवस्था ने जन्म लिया है।
- यथार्थवाद में यथार्थ (इन्द्रियों द्वारा महसूस की जा सकने वाली वस्तु) ही सत्य है।
- यथार्थवाद आंगिक सिद्धांत को मानता है, जिसकी वजह से संसार में सभी नियमों, विचारों, परिस्थितियों आदि में परिवर्तन होता रहता है।
- यथार्थवाद यांत्रिक होता है अर्थात् संसार में नियमितता का होना परम आवश्यक है।
- यथार्थवादी विचारधारा अवलोकन, निरीक्षण तथा प्रयोग पर बल देती है। यह एक वैज्ञानिक विचारधारा है।
- यथार्थवादी ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षण पर जोर देते हैं।
- यथार्थवाद के अनुसार जगत ही वास्तविक सत्य है और जगत नियमित है।
- यथार्थवाद वर्तमान एवं व्यवहारिक जीवन को ही मान्यता देता है। यह उन नियमों, आदर्शों को महत्व नहीं देता है जिनका व्यवहारिकता और वर्तमान से संबन्ध नहीं होता है।
- जयशंकर प्रसाद के अनुसार यथार्थवाद की विशेषताओं में प्रधान है लघुता की ओर साहित्यिक दृष्टिपात। उसमें स्वभावतः दुःख की प्रधानता और वेदना की अनुभूति आवश्यक है। लघुता से मेरा अभिप्राय है साहित्य के माने हुए सिद्धांत के अनुसार महत्ता के काल्पनिक चित्रण से अतिरिक्त व्यक्तिगत जीवन के दुःखों और अभावों का वास्तविक उल्लेख।
- नंददुलारे वाजपेयी के अनुसार “यथार्थवाद वस्तुओं की पृथक् सत्ता का समर्थक है।
- यथार्थवाद यूरोपीय साहित्य की देन है। इसका उद्भव फ्रांसीसी क्रांति के परिणामस्वरूप हुआ। डॉ. त्रिभुवन सिंह के अनुसार— इसका विकास मुख्यतः पाँच बातों से प्रभावित माना जाता है— 1. डार्विन का विकासवाद, 2. फ्रायड का मनोविश्लेषण, 3. मार्क्स का अर्थविज्ञान, 4. यूरोपीय यथार्थवादी उपन्यास, 5. वैज्ञानिक प्रभाव।

यथार्थवाद का साहित्य से संबंध— यथार्थवाद का साहित्य से गहरा संबन्ध होता है। ज्यादातर साहित्य में वही लिखा जाता है जिसे साहित्यकार अपने चारों ओर महसूस करता है और देखता है। साहित्यकार अपने समय

की घटनाओं का लिपिबद्ध चित्रण करते हैं जो समय के साथ इतिहास बन जाती हैं और आने वाला समाज उन्हीं घटनाओं की अच्छाई और बुराई को जानकर उसकी बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न करता है जिससे समाज में परिवर्तन होते हैं। इसी प्रकार पुरानी वैज्ञानिक खोजों के बारे में जानकर उसमें अपने अनुसार परिवर्तन करके किसी भी आविष्कार की गुणवत्ता को बताया जाता है। अतः यथार्थवाद के साथ साहित्यकार का चोली-दामन का साथ है। अगर साहित्यकार अपने समय के यथार्थ को वर्णित न करें तो आने वाला समाज पिछली पीढ़ी की अच्छाई और बुराइयों को नहीं जान पाएगा और न ही समाज में कोई सुधार संभव हो पाएगा। अतः संसार की प्रगति में यथार्थवादी साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

यथार्थ, साहित्य एवं कला की अभिव्यक्ति का बुनियादी विषय रहा है। देश-विदेश के साहित्य और कला में यथार्थ का चित्रण प्रारम्भ से ही होता रहा है। साहित्य तथा कला स्वभावतः यथार्थजीवी है। हिन्दी साहित्य में 'यथार्थवाद' यूरोपीय साहित्य की देन है। लेकिन हिन्दी साहित्य के भीतर यह विचारधारा के रूप में नहीं मिलता जैसा कि यूरोपीय साहित्य में मिलता है।

आधुनिक गद्य साहित्य की लगभग सभी विधाओं का आविर्भाव भारतेन्दु युग में हुआ था। लगभग इसी युग से हिन्दी साहित्य में यथार्थवादी चेतना के समावेश और विकास का आभास होता है। हिन्दी कथा-साहित्य और यथार्थ का अटूट सम्बन्ध रहा है। प्रेमचन्द यथार्थ को कथा-साहित्य का प्राण मानते थे। वहीं हजारी प्रसाद द्विवेदी का मानना है कि "कविता यथार्थवाद की उपेक्षा कर सकती है, संगीत यथार्थ को छोड़कर भी जी सकता है, पर उपन्यास और कहानी के लिए यथार्थ प्राण है।"

अतः इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिक काल में कोई भी साहित्य की रचना यथार्थवाद के बिना संभव नहीं है और यथार्थवाद आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्राण है।

निष्कर्ष— हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम यथार्थवाद प्रेमचन्द के साहित्य में दिखाई देता है। उसके पश्चात् 21वीं सदी में लगभग सभी महिला कथाकारों की कहानियों में यथार्थ बोध के दर्शन होते हैं। क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है और 21वीं सदी के साहित्य में समाज में जो कुछ भी 21वीं सदी में घटित हो रहा है वह दिखाई पड़ता है। यथार्थ जैसा कि पहले बताया जा चुका है वास्तविकता, वस्तु या पदार्थ के लिए प्रयुक्त होता है। अतः संसार की प्रत्येक वस्तु जिसका अनुभव हमें अपनी इंद्रियों द्वारा होता है यथार्थ कहलाती है। यथार्थवाद साहित्य की एक चिंतन पद्धति है जिसके द्वारा साहित्यकार अपने समाज और बाह्य जगत में जो कुछ भी घटित होता है उसका यथार्थ चित्रण करते हैं। आधुनिक गद्य की लगभग सभी विधाओं का आरंभ भारतेन्दु युग में हुआ। 21वीं सदी की महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में तात्कालिक समाज की परिस्थितियों का बखूबी वर्णन किया है। महिला कलाकारों ने समाज की बुराइयों को भी उठाया है और आधुनिक दौर में रिश्तों में हुए परिवर्तनों को भी अपनी कहानियों में बखूबी चित्रण किया है। 21वीं सदी की महिला कथाकारों की कहानियों में दांपत्य जीवन, विवाहेत्तर संबंध, माता पिता, भाई-बहन मित्रा एवं अन्य संबंधों पर बखूबी लेखनी चलाई है और आजकल के समाज में रिश्तों में जो भी दरारें आई हैं उनको बखूबी प्रदर्शित किया है।

संदर्भ

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2012, पृ० 346
2. कुमार कमलेश— आदिवासी विमर्श अवधारणा और आंदोलन पृष्ठ 15
3. कृपाशंकर पाण्डेय – हिन्दी कथा साहित्य में यथार्थबोध के विविध रूप, समीक्षा प्रकाशन, बस्ती, संस्करण 1996, पृ० 29-30
4. जयशंकर प्रसाद – काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध, पृ० 120 13.

5. डॉ. नूरजहाँ – हिन्दी कहानी में यथार्थवाद, अभिनव भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 1976, पृ. 28
6. डॉ. सत्यकाम – आलोचनात्मक यथार्थवाद और प्रेमचन्द, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1994, पृ. 6
7. डॉ. सुरेश सिन्हा – नई कहानी की मूल संवेदना, दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली, संस्करण 1961, पृ. 175–76
8. डॉ. सुरेश सिन्हा – नयी कहानी की मूल संवेदना, दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली संस्करण 1961, पृ. 177
9. चन्द्रकान्त बांदिबडेकर– आधुनिक हिन्दी उपन्यास: सृजन और आलोचना, पृ० 52 8.
10. शिवकुमार मिश्र – यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2009 पृ. 18 9.
11. डॉ. त्रिभुवन सिंह – हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स
12. डॉ. एस.पी. खत्री – आलोचना: इतिहास तथा सिद्धान्त, पृ. 475
13. डॉ. त्रिभुवन सिंह – हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स प्रा०लि०, वाराणसी, संस्करण 1997, पृ० 81
14. प्रेमचन्द – कुछ विचार, पृ. 74
15. डॉ. शैला चौहान– कदम आदिवासी समाज एवं संस्कृति पृष्ठ. 11
16. त्रिभुवन सिंह – हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स प्रा०लि०, वाराणसी, संस्करण 1997, पृ० 235
17. नंद दुलारे बाजपेयी – आधुनिक साहित्य, पृ. 445
18. त्रिभुवन सिंह – हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स प्रा.लि., वाराणसी, संस्करण 1997, पृ. 303–04
19. द्वारका प्रसाद मीतल – हिन्दी साहित्य के बाद पृ. 230
20. नगेन्द्र – विचार और विवेचन, पृ. 97
21. नगेन्द्र – साहित्य कोश (मानविकी खण्ड), पृ. 431
22. प्रेमचन्द – साहित्य का उद्देश्य, पृ. 142
23. प्रो. रामचन्द्र माली – श्रीकांत वर्मा की कहानियों में यथार्थबोध, पृ. 32
24. बच्चन सिंह – आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2016, पृ. 194
25. रामचन्द्र वर्मा – मानक हिन्दी कोश, पृ. 435
26. रामदरश मिश्र – हिन्दी उपन्यास: एक अन्तर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
27. शिव कुमार मिश्र– यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2009, पृ. 27.
28. शिव कुमार मिश्र– यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2009, पृ. 56
29. हजारी प्रसाद द्विवेदी – विचार और वितर्क पृ. 103
30. शिवकुमार त्रिभुवन सिंह – हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स
31. शिवकुमार मिश्र – यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2009, पृ. 25 11.

रामायण एवं महाभारत में स्त्री अस्तित्व का समीक्षात्मक अध्ययन

अखिलानन्द उपाध्याय

शोध छात्र, डॉ राम मनोहर लोहिया राजकीय महाविद्यालय मुफ्तीगंज, जौनपुर,

विश्वविद्यालय-वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

Article Info

Volume 6, Issue 2

Page Number : 41-47

Publication Issue :

March-April-2023

Article History

Accepted : 01 April 2023

Published : 10 April 2023

शोधसारांश- वैदिक काल, रामायण और महाभारत काल की मीमांसा की जाए तो यह कहा जा सकता है कि स्त्री को गरिमामयी और गौरवशाली अस्तित्व हर युग में प्राप्त था। कन्याएं पिता के लिए लक्ष्मी होती थी और उन्हें पुरुषों की तुल्य शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। वैदिक काल में भूरिशः ऋषिकाओं का वर्णन स्पष्ट प्रमाण है इसका। रामायण और महाभारत काल की स्त्रियों पर विचार किया जाए तो कुछ प्रसंगों को छोड़कर यह कहा जा सकता है कि इस काल में स्त्री और पुरुष में संभवतः भेद कहीं भी परिलक्षित नहीं होता है। इस काल में स्त्रियों को अनेक प्रकार की शिक्षाएं प्रदान की जाती थी। यहां तक कि उन्हें युद्ध में भी भाग लेने का अधिकार प्राप्त था। साथ ही रामायण और महाभारत हमें यह वैश्विक संदेश है देते हैं कि रामायण और महाभारत में युद्ध केवल और केवल स्त्री सम्मान में लड़ा गया। भगवान श्री राम द्वारा राम सेतु का निर्माण केवल अपनी अर्धांगिनी के लिए नहीं अपितु स्त्री अस्मिता के लिए किया गया था।

मुख्य शब्द- वैदिक काल , रामायण, महाभारत, स्त्री, शिक्षा, अधिकार।

भारतीय वाङ्मय में स्त्री शक्ति का जो अस्तित्व परिलक्षित होता है वह अन्यत्र कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होता है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः" भारतीय वाङ्मय का यह वैश्विक उद्घोष संपूर्ण संसार में गुंजायमान होता है। और यह संदेश देता है कि जहां पर नारी की पूजा और सम्मान होता है वहीं पर देवता निवास करते हैं अन्यथा नहीं। अर्थात् जिन जिन घरों एवं समाज में स्त्री का सम्मान होता है वहां देवी देवताओं का वास होता है और जहां सम्मान नहीं होता है वहां वास नहीं होता है अर्थात् दरिद्रता का वास हो जाता है। "मातृवत् परदारेषु" के रूप में नैतिक उद्घोष जन जन के श्रवणेन्द्रिय के मार्ग से अंतःस्थल में प्रत्येक मानव के मन मस्तिष्क में प्रत्येक स्त्री को माता के रूप में स्थापित करता है। भारतीय वाङ्मय में स्त्री को दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती, सीता आदि के रूप में देखा जाता है। यहां पर अर्धनारीश्वर के स्वरूप के द्वारा स्पष्ट संदेश दिया गया है कि नारी के बिना पुरुष का अस्तित्व पूर्ण नहीं हो सकता है। भारतीय वाङ्मय अथवा सभ्यता में देवताओं के अस्तित्व के साथ-साथ देवी के अस्तित्व की कल्पना हुई है जैसा कि वर्तमान सभ्यताओं में परिलक्षित नहीं होता है।

भारतीय वाङ्मय में देवताओं से पहले देवी का नाम लिया जाता है, यथा- लक्ष्मी नारायण, सीताराम, राधा कृष्ण, पार्वती शंकर और यहां तक कि पिता माता नहीं माता पिता कहा जाता है, फिर भी कुछ नकारात्मक विचारधारा के महापुरुष फेमिनिज्म का रोना रोते हैं। रामायण और महाभारत काल से पूर्व यदि वैदिक युग की बात करें तो जब वर्तमान में अनेक सभ्यताओं का जन्म भी नहीं हुआ था तब हमारे यहां ऋषिकाएं हुआ करती थी। अर्थात् उन्हें पुरुष वर्ग के समान शिक्षा का अधिकार था। ऋग्वेद में 24 अथर्ववेद में 5 मंत्र दृष्टिकाओं का उल्लेख प्राप्त होता है। जिनमें कुछ विशेष नाम इस प्रकार हैं सूर्य सावित्री, सिकता निवावरी, यमी वैवस्वति, अदिति अपाला, आत्रेयी, उर्वशी, नदी, गोधा, आरडी वाक् आम्भृणी, पोलोमी, सची, सर्पराज्ञी, सूर्या सावित्री, इंद्राणी आदि।

उपर्युक्त तथ्यात्मक विवरण उदाहरण यह प्रमाणित करते हैं कि विश्व में स्त्री अस्तित्व की कल्पना और इतना सम्मान शिक्षा का अधिकार लाखों वर्ष पूर्व वैदिक काल में देवी तुल्य नारी को प्राप्त था। वेदों में तो स्त्री को 'जायेदस्तम्'(3.53.4) अर्थात् स्त्री को ही घर कहा गया है। स्त्री को गृह साम्राज्ञी तक कहा गया है-

" सम्राज्ञी श्वसुरे भव , सम्राज्ञी श्वश्रवां भव।

ननान्दरि सम्राज्ञी भव , सम्राज्ञी अधि देवृषु॥" ऋग्वेद 10.85.46

स्त्री को भारतीय वाङ्मय में अर्धांगिनी कहा गया है अर्थात् स्त्री के बिना कोई भी अनुष्ठान पूर्ण नहीं हो सकता। जिसका प्रमाण रामायण में भी प्राप्त होता है तब, जब भगवान रामेश्वरम् में यज्ञ के दौरान माता सीता की प्रतिमूर्ति बनाकर ही यज्ञ को पूर्ण करते हैं। ऋग्वेद में तो स्त्री को 'ब्रह्मा' तक कह दिया गया है- " स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ।"

इससे उत्कृष्ट प्रमाण स्त्री के अत्यंत गौरवमयी अस्तित्व का क्या हो सकता है जब स्त्री को ब्रह्मा कह दिया गया हो। इसका अर्थ यही है कि स्त्री शिक्षा में उत्कृष्ट होती थी वह बालकों को शिक्षा प्रदान करने के साथ यज्ञ में भी ब्रह्मा का स्थान ग्रहण कर सकती थी, तथा विविध संस्कार करवा सकती थी। वेदों में तो स्त्री सेना का भी उल्लेख है। अथर्ववेद में भी वर्णन प्राप्त होता है कि स्त्री अपने पति के साथ यज्ञ और युद्धों में जाती थी-

" स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे"- ऋग्वेद 5.30.9

" स होत्रं स्म पुरा नारी समनं...गच्छति" अथर्ववेद 20.126.10

ऋग्वेद और यजुर्वेद में स्त्री शक्ति के लिए कुछ ऐसे विशेषण का प्रयोग किया गया है जो उनके सारे एवं गौरवशाली अस्तित्व का अद्भुत वर्णन करते हैं अथवा स्त्री शक्ति की महिमा और उसके अस्तित्व को परिभाषित करते हैं यथा -स्त्री को अषाढा (अजेय), सहमाना (विजयिनी), सहस्रवीर्या (असंख्य पराक्रम वाली), असपत्ना (अशत्रु) , सपत्नघ्नी (शत्रु नाशक), जयंती (विजेता), अभिभूवरी (हरा देने वाली) कहा गया है।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि वैदिक काल में स्त्री शक्ति को वह संपूर्ण अधिकार प्राप्त थे जो पुरुष को प्राप्त थे। और स्त्री सशक्तिकरण की जो बात आज आधुनिक दौर में किया जाता है उसकी उच्चतम पराकाष्ठा

लाखों वर्षों पूर्व वैदिक काल में दृष्टिगोचर होता है। तदनंतर रामायण और महाभारत काल में स्त्री शक्ति की दशा अथवा स्थिति की बात करें तो नारी सशक्तिकरण उसके अस्तित्व के उत्कर्ष का प्रमाण विपुल मात्रा में उपलब्ध होता है। सर्वप्रथम रामायण की बात करें तो रामायण काल में स्त्री अस्तित्व में अत्यल्प न्यूनता आती है तब जब भगवान श्री राम का वनगमन होता है, तब माता कौशल्या राजा दशरथ से अयोध्या कांड के 61 वे सर्ग में कहते हैं कि-

" गतिरेका पतिर्नार्या द्वितीया गतिरात्मजः ।

तृतीया ज्ञातयो राजंश्चतुर्थी नैव विद्यते॥"

अर्थात् हे राजन! नारी का एक सहारा उसका पति है दूसरा उसका पुत्र तथा तीसरा सहारा उसके भाई बंधु बांधव आदि रहे हैं चौथा उसके लिए कोई सहारा नहीं है। इस प्रकार कौशल्या और दशरथ के संवाद से स्पष्ट होता है कि कहीं न कहीं स्त्री का अस्तित्व पिता, पति और पुत्र के अतिरिक्त नहीं था। किंतु इन संवाद के अतिरिक्त संपूर्ण रामायण में अन्यत्र कहीं भी स्त्री शक्ति के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह नहीं है। अयोध्या कांड के 198 सर्ग में माता सीता और अनसूया के संवाद में माता सीता अनुसूया से कहती हैं कि- " स्नेहो मयि निपातितः"

अर्थात् मेरे पिता स्नेहवश मुझे गोद में ले लिया और 'यह मेरी बेटी है' ऐसा कह कर मुझ पर सारा स्नेहा उड़ेल दिया। रामायण काल में कन्याओं को विविध प्रकार की शिक्षा देकर उन्हें सुसंस्कृत एवं शिक्षा से पूर्ण बनाया जाता था। सैनिक शिक्षा और अनेक प्रकार की शिक्षाओं से उसे सुशोभित किया जाता था। अयोध्या कांड के ही नवम सर्ग में मंथरा कैकेई से कहती है कि-

" अपवाह्य त्वया देवी संग्रामान्नप्येतनः।

तत्रापि विक्षतः शस्त्रैः पतिस्ते रक्षितस्त्वया॥"

अर्थात् शंबर युद्ध में कैकेई ने अपने आहत पति दशरथ को बचाकर सुरक्षा प्रदान किया था। यह प्रसंग इस बात का प्रमाण है कि रामायण काल में स्त्रियों को न केवल शिक्षा आदि अधिकार प्राप्त था अपितु वह युद्ध में भी भाग लेती थी। जिसके बारे में इससे पूर्व वैदिक काल में स्त्री शक्ति के प्रसंग में बताया गया था प्रमाण सहित की स्त्रियां युद्ध में भी भाग लेती थी।

रामायण काल में स्त्री को वेद पाठ का अधिकार था। वह वेदों का अध्ययन कर सकती थीं। नियमित रूप से स्त्रियां संध्योपासना तथा होम आदि किया करती थीं। सुंदरकांड के 14वें सर्ग में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि माता सीता संध्योपासना किया करती थी।

माता अनसूया तथा माता सीता के मध्य संवाद में माता अनुसूया माता सीता को पतिव्रत धर्म का उपदेश देते हुए कहते हैं कि-

" दुःशीलः कामवृत्तो वा धनैर्वा परिवर्जितः ।

स्त्रीणां आर्यस्वभवानां परमं दैवतं पतिः ॥"

अर्थात् पति कैसा भी हो वह स्त्रियों के लिए परम देवता ही होता है। उपर्युक्त उदाहरण से यह तो स्पष्ट होता है कि स्त्री अधिनता उस काल में मुखरित थी। फिर भी इन सब के अतिरिक्त स्त्री को तत्कालीन समाज में सम्मान प्राप्त था। इसलिए सुरक्षा का संपूर्ण भार परिवार और पुरुष पर होता था। सीता के अपहरण के बाद विभीषण एवं माल्यवान के द्वारा रावण को धिक्कारा जाना यह बतलाता है कि स्त्री अपमान तत्कालीन समाज में कदापि स्वीकार्य नहीं था।

अरण्यकांड की 50वीं सर्ग में जटायु रावण से कहते हैं कि -" दारा रक्ष्या विमर्शनात्" अर्थात् हे रावण! तुम्हारा सीता का अपहरण करना अनुचित है। क्योंकि स्त्री सदा सुरक्षा और सम्मान की पात्र होती है। यह सर्वविदित है कि स्त्री शक्ति का अपमान ही रावण जैसे शिव भक्तों का भी सर्वनाश कर देता है।

इस युग में विधवा स्त्री के प्रति समाज में किंचित मात्र भी असम्मान की भावना नहीं थी, अपितु मांगलिक अनुष्ठानों में सधवा की तरह विधवा स्त्री भी प्रतिभाग लेती थी। रामायण में सती प्रथा का कोई उल्लेख नहीं है। लंका कांड में वध के उपरांत विभीषण माता सीता को शिविका में बैठा कर लाए जिसकी रक्षा राक्षस कर रहे थे। उसी समय 114 वें सर्ग के श्लोक से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि उस समय पर्दा प्रथा नहीं था सदाचरण ही स्त्री का पर्दा माना जाता था-

" न गृहाणि न वस्त्राणि न प्रकारास्तिरस्क्रिया ।

नेदृशा राजसत्कारा वृत्तमावरणं स्त्रियाः ॥" रामायण, 6.114.27

इस प्रकार यदि रामायण कालीन स्त्री की अस्मिता की बात करें तो वैदिक काल में स्त्री का जो गौरवशाली अतीत था लगभग वही सम्मान और शक्ति रामायण काल में भी प्राप्त था।

सामान्यतः तत्कालीन समाज में नारी के प्रति सम्मान, बेटीयों के प्रति सम्मान, स्नेह, शालीन व्यवहार तथा उच्चतम कोटि के शिष्टाचार का पालन किया जाता था।

अब यदि महाभारत कालीन समाज में नारी के अस्तित्व पर दृष्टिपात करें तो जिस प्रकार से वैदिक काल में और रामायण काल में स्त्री समाज को सम्मान और समानता प्राप्त था वह कहीं न कहीं महाभारत काल में भी था। महाभारत के अनुशीलन से हमें बोध होता है कि तत्कालीन समाज आज की अपेक्षा नारी के प्रति अधिक उदार था। अगर महाभारत काल और समाज की बात करें तो हमें यह भी कहना होगा कि भारत भूमि विभिन्न आक्रमणकारियों द्वारा गुलाम बनाया गया था जिसमें आक्रांताओं ने अपने अपने संस्कृति को थोपने का कार्य किया। और साथ ही इतिहास प्रमाण है कि इन आक्रमणकारियों ने भारत के स्त्री समाज पर जो अत्याचार किया वह किसी से छिपा नहीं है। जिसके इन असुरों की कुदृष्टि से स्त्री समाज के सुरक्षा के सुरक्षा के संदर्भ में कुछ कुप्रथाओं का जन्म हुआ जो धीरे-धीरे समाज के परंपरा का भाग बन गया। जिनमें वर्तमान में सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है। क्योंकि यह वही भारत भूमि है जहां देवताओं के साथ देवी कल्पना है, जहां देवताओं से पहले देवी का नाम लिया जाता है, जहां पर पिता से पहले माता पिता कहा जाता है यहां तक कि " यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता" तक कह दिया गया है। महाभारत के आदि पर्व में कहा गया है कि-

"अर्ध भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखा।

भार्या मूलं त्रिवर्गस्य भार्या मूलं तरिष्यतः ॥" आदिपर्व 74.41

अर्थात् भार्या को अर्धांगिनी और श्रेष्ठ मित्र तक कहा गया है। समानता का इससे श्रेष्ठतम उदाहरण अन्यत्र प्राप्त नहीं हो सकता है। स्त्री के प्रति सम्मान के भाव का उत्कृष्ट उदाहरण हमें तब प्राप्त होता है जब युधिष्ठिर विराट पर्व में कहते हैं की-

"इयं हि न प्रियं भार्या प्राणेभ्योऽपि गरीयसी।

परिपाल्या च पूज्या ज्येष्ठेव च स्वसा॥"

अर्थात् यह द्रौपदी हमारी प्रियपत्नी, प्राणाधिक प्रियतमा है, माता की तरह परिपाल्या है, और यह ज्येष्ठा भगिनी के समान पुज्या है। नारी शक्ति के प्रति इतनी उच्च आदर्शों वाले विचार से युक्त वाणी संभवतः ब्रह्मांड में किसी अन्य सभ्यताओं के द्वारा अब तक नहीं कही गई है।

महाभारत काल में निर्धन, रोगी पति की सेवा पूजा करने वाली स्त्री को देवी के तुल्य समझा जाता था। अन्यत्र दृष्टिपात करें तो बोध होता है कि महाभारत में जिन जिन स्त्रियों का का उल्लेख है उनमें दायित्व बोध और अधिकार अनुकूलन की क्षमता भी विद्यमान थी। द्रौपदी द्वारा राजकोष का दायित्व संभालने और गांधारी का मंत्रणा सभा में साहचर्य इसी तथ्य पर प्रकाश डालता है। महाभारत काल के जिन नारी चरित्रों से हम सब का परिचय होता है उसका अस्तित्व केवल नारीत्व तक ही सीमित नहीं रहता है अपितु उनका पुरुषत्व भी पूर्णतः प्रकाशित है। अपने नारीत्व और पौरुष से समाज को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करती हैं। इनकी महिमा और आदर्श अत्यंत उच्च कोटि का है। कन्या का जन्म पिता के लिए भार मानने का उदाहरण संपूर्ण महाभारत में कहीं भी प्राप्त नहीं होता है। जैसा कि आजकल समाज के कुछ हिस्सों में दृष्टिगोचर होता है। पुत्र और कन्या में अंतर नहीं माना जाता था महाभारत काल में -

यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा।" अनुशासन पर्व 45/11

महाराजा शांतनु ने वन में पड़े कृप और कृपी का तथा महाराज अश्वपति ने सावित्री के सभी संस्कार कराए थे। विवाह के पूर्व कन्या को अनेक विषयों की शिक्षा दी जाती थी। कन्याओं द्वारा पिता के कार्य में सहयोग प्राप्त होता था। पिता के ही आदेश से धीवर कन्या सत्यवती नाव द्वारा यात्रियों को नदी पार कराती थी। कुंती और शकुंतला अतिथिसपर्या में नियुक्त थी। तत्कालीन समाज में यहां तक कि कन्या को वर चुनने का अधिकार प्राप्त था। जिसके लिए स्वयंवर आयोजित होता था। स्वयंवर के साथ कन्याओं को आजीवन कुमारी रह कर नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करने का भी अधिकार प्राप्त था। योगिनी सुलभा नामक कन्या का वृत्तांत महाभारत में वर्णित है।

महाभारत में नारी उत्कर्ष के लिए सतीत्व की रक्षा को मुख्य स्थान प्राप्त था इस काल में सभा समितियों में स्त्रियों के भी बैठने की व्यवस्था होती थी। महाभारत काल में भी बहुपत्नी प्रथा विद्यमान था। कश्यप की पत्नी कद्रू और विनीता, पांडु की पत्नी कुंती और माद्री आदि अनेक ऐसे उदाहरण हैं।

निष्कर्षतः वैदिक काल, रामायण और महाभारत काल की मीमांसा की जाए तो यह कहा जा सकता है कि स्त्री को गरिमामयी और गौरवशाली अस्तित्व हर युग में प्राप्त था। कन्याएं पिता के लिए लक्ष्मी होती थी और उन्हें पुरुषों की तुल्य शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। वैदिक काल में भूरिशः ऋषिकाओं का वर्णन स्पष्ट प्रमाण है इसका। रामायण और महाभारत काल की स्त्रियों पर विचार किया जाए तो कुछ प्रसंगों को छोड़कर यह कहा जा सकता है कि इस काल में स्त्री और पुरुष में संभवतः भेद कहीं भी परिलक्षित नहीं होता है। इस काल में स्त्रियों को अनेक प्रकार की शिक्षाएं प्रदान की जाती थी। यहां तक कि उन्हें युद्ध में भी भाग लेने का अधिकार प्राप्त था। साथ ही रामायण और महाभारत हमें यह वैश्विक संदेश है देते हैं कि रामायण और महाभारत में युद्ध केवल और केवल स्त्री सम्मान में लड़ा गया। भगवान श्री राम द्वारा राम सेतु का निर्माण केवल अपनी अर्धांगिनी के लिए नहीं अपितु स्त्री अस्मिता के लिए किया गया था। ऐसे अनुपम और अद्वितीय उदाहरण अन्यत्र जगत में कहीं भी प्राप्त नहीं होते हैं। स्त्री सम्मान के लिए युद्ध करने वाले भगवान श्री राम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए तो स्त्री अपमान में रावण ब्रह्म ज्ञानी होते हुए भी दुर्दशा को प्राप्त हुआ था। स्त्री अपमान के कारण दुर्योधन, दुःशासन और कर्ण की जो दुर्दशा और अंत हुआ उससे संपूर्ण संसार अवगत है। और पांडवों ने स्त्री सम्मान के लिए निरंतर संघर्ष किया तो उन्हें अंततोगत्वा परमधाम की प्राप्ति हुई। रामायण में ऐसा प्रसंग भी आता है जब समुद्र को लांघते समय सुरसा नामक त्री को भी श्री हनुमान जी ने विनम्रता पूर्वक माता कहते हुए करबद्ध निवेदन किया था। जो दर्शाता है कि इन युगों में स्त्रियां सदैव पुजनीय होती थी। रामायण और महाभारत के उत्तर काल में भी एक ऐसा प्रसंग प्राप्त होता है कि जगद्गुरु शंकराचार्य और मंडन मिश्र आचार्य जी के शास्त्रार्थ के मध्य निर्णायक की भूमिका में मण्डन मिश्र जी की पत्नी को देखा गया है। ऐसा अद्भुत और उत्कृष्ट उदाहरण अन्यत्र कहीं भी प्राप्त नहीं होता है जहां पर स्त्री को धर्म ग्रंथ पर शास्त्रार्थ का विशेषाधिकार प्राप्त हो साथ ही साथ दो महापुरुषों के शास्त्रार्थ के मध्य निर्णायक की भूमिका में स्त्री शक्ति दृष्टिगोचर हो। वैदिक काल में स्त्री अस्तित्व का जो गौरवशाली अतीत था वही रामायण और महाभारत काल में भी प्रदर्शित होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

- 1- यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः - मनुस्मृति,
- 2- मातृवत् परदारेषु - हितोपदेश
- 3- जायेदस्तम् - ऋग्वेद 3.53.4
- 4- 4- सम्राज्ञी श्वसुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्रवां भव.... देवृषु- ऋग्वेद 10.85.46
- 5- स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे- ऋग्वेद 5.30.9
- 6- स होत्रं स्म पुरा नारी समनं.... गच्छति- अथर्ववेद 20.126.10
- 7- गतिरेका पतिनार्या द्वितीया... .. नैव विद्यते - अयोध्या काण्ड, सर्ग 61
- 8- स्नेहो मयि निपातितः - अयोध्या काण्ड, नवम सर्ग

- 9- अपवाह्य त्वया देवी संग्रामान्नष्टयेतनः पतिस्तेरक्षिस्त्वया - अयोध्या काण्ड, नवम सर्ग
- 10- दुःशीलः कामवृत्तो वा धनैर्वा परिवर्जितः - सुन्दरकाण्ड, सर्ग 14
- 11- दारा रक्ष्या विमर्शनात् - अरण्य काण्ड, सर्ग 50
- 12- न गृहाणि न वस्त्राणि... . वृत्तमावरणं स्त्रियाः - रामायण, 6.114.27
- 13-अर्धं भार्या मनुष्यस्य... . भार्या मूलं तरिष्यतः - आदिपर्व, 74.41
- 14- इयं हि न प्रियं भार्या... . ज्येष्ठेव च स्वसा - महाभारत, विराट पर्व
- 15-यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा - महाभारत, अनुशासन पर्व, 45.11

पृथ्वी की उत्पत्ति

Praneet Kaur

M Sc. Department of Geography, Kurukshetra, University Kurukshetra,
India

Article Info

Volume 6, Issue 2

Page Number : 48-64

Publication Issue :

March-April-2023

Article History

Accepted : 01 April 2023

Published : 10 April 2023

शोधसारांश- वैज्ञानिक लंबे समय से पृथ्वी की उत्पत्ति के विषय में खोज करने में लगे हैं और इस विषय में विभिन्न वैज्ञानिकों ने अनेक परिकल्पनाएं प्रस्तुत की हैं। इनमें सर्वप्रथम लोकप्रिय मत एक जर्मन दार्शनिक इमैनुएल कांट पउउंदनमस इंज ने दिया और 1796 ईस्वी में गणित यज्ञ लाप्लेस संचसंबम ने उनके मत में संशोधन करके एक परिकल्पना प्रस्तुत की जो निहारिका परिकल्पना दमइनसंतिलचवजीमेपे के नाम से विख्यात हुई। इस परिकल्पना के अनुसार ग्रहों का निर्माण धीमी गति से घूमते हुए धुएं के गुबारों से हुआ है जो देखने में बादलों की तरह प्रतीत होते थे। उस समय सूर्य के निर्माण का अभी प्रारंभिक चरण था। उसके बाद उन्नीस सौ ईसवी में चौबर्लेन और मल्टन बरंउइमतसंपद दक उवनसजवद ने बताया कि जब ब्रह्मांड में एक तारा घूमता हुआ सूर्य के नजदीक से गुजरा तो तारे के गुरुत्वाकर्षण के कारण सूर्य की सतह से सिंगार के आकार का कुछ पदार्थ निकल कर अलग हो गया और यह पदार्थ सूर्य के चारों तरफ घूमने लगा और यही धीरे-धीरे संघनित होकर ग्रहों के रूप में बदल गया। इस सिद्धांत का सर जेम्स जींस और सर हैरोल्ड जेफरी ने भी समर्थन किया। बाद में कुछ वैज्ञानिकों का तर्क था कि सूर्य के साथ एक और भी कोई साथी तारा था और इस तर्क को श्वेतार्क सिद्धांत उपदंतल जीमवतपमे के नाम से जाना जाता है। सन 1950 में रूस के वैज्ञानिक अतो शिमड व जर्मनी के कार्ल वाईजास्कर बंतसूमप्रंबंत ने निहारिका परिकल्पना में कुछ संशोधन किए। उनके मत के अनुसार सूर्य एक सौर निहारिका से गिरा हुआ था जो

मुख्य रूप से हाइड्रोजन, हीलियम और धूल के कणों से बनी हुई थी। इन धूल के कणों से टकराने के कारण एक चपटी तश्तरी के आकार नुमा बादल का निर्माण हुआ और बाद में इसी में अभिवृद्धि के फल स्वरूप ग्रहों का निर्माण हुआ।

पृथ्वी के निर्माण के विषय में वैज्ञानिकों का मानना है की जब धूल से भरे कड़ों का गुबार सूर्य के चारों तरफ चक्कर लगा रहा था तब उसके अंदर स्थित पदार्थ गुरुत्व बल के कारण संहत हो रहा था, और इस प्रक्रिया के दौरान अत्यधिक ऊष्मा उत्पन्न हुई और जिससे पृथ्वी के अंदर के समस्त पदार्थ पिघलकर तरल रूप में परिवर्तित हो गए।

माना जाता है कि पृथ्वी, अन्य ग्रहों के साथ, 4.5 अरब साल पहले सूर्य के निर्माण से बचे धूल और गैसों के एक ठोस बादल के रूप में पैदा हुई थी। शायद 500 मिलियन वर्षों के लिए, पृथ्वी का आंतरिक भाग ठोस और अपेक्षा त ठंडा रहा, शायद 2,000 F। सर्वोत्तम उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार मुख्य अवयव लोहा और सिलिकेट थे, जिनमें अन्य तत्वों की थोड़ी मात्रा थी, उनमें से कुछ रेडियोधर्मी थे। जैसे-जैसे लाखों साल बीतते गए, रेडियोधर्मी क्षय से निकलने वाली ऊर्जा, ज्यादातर यूरेनियम, थोरियम और पोटेशियम ने धीरे-धीरे पृथ्वी को गर्म कर दिया, जिससे इसके कुछ घटक पिघल गए। लोहा सिलिकेट्स से पहले पिघल गया, और भारी होने के कारण केंद्र की ओर डूब गया। इसने वहां पाए जाने वाले सिलिकेट्स को मजबूर कर दिया। कई वर्षों के बाद, लोहा लगभग 4,000 मील गहरे केंद्र में पहुँच गया, और जमा होना शुरू हो गया। उस समय कोई भी आंखें उस उथल-पुथल को देखने के लिए नहीं थीं जो पृथ्वी पर हुई होगी, सतह पर विशाल ढेर और बड़बड़ाहट, ज्वालामुखियों का विस्फोट, और सृष्टि में सब कुछ कवर करते हुए लावा बह रहा था। अंत में, केंद्र में लोहा कोर के रूप में जमा हुआ। इसके चारों ओर, पृथ्वी के ठंडा होने पर ठोस चट्टान की एक पतली लेकिन काफी स्थिर परत बन गई। क्रस्ट में अवसाद प्राकृतिक बेसिन थे जिसमें पानी, ज्वालामुखियों और दरारों के माध्यम से ग्रह के आंतरिक भाग से उठकर, महासागरों का निर्माण करने के लिए एकत्र किया जाता था। धीरे-धीरे, पृथ्वी ने अपना वर्तमान स्वरूप प्राप्त कर लिया।

पृथ्वी की उत्पत्ति और विकास

बदलते ग्रह के लिए शोध प्रश्न

पृथ्वी की उत्पत्ति और प्रकृति के बारे में प्रश्न लंबे समय से मानव विचार और वैज्ञानिक प्रयास में उलझे हुए हैं। ग्रह के इतिहास और प्रक्रियाओं को समझने से भूकंप और ज्वालामुखियों जैसी आपदाओं की भविष्यवाणी

करने, पृथ्वी के संसाधनों का प्रबंधन करने और जलवायु और भूगर्भिक प्रक्रियाओं में बदलाव की आशंका करने की क्षमता में सुधार हो सकता है।

पृथ्वी अत्यन्त सक्रिय स्थान है। भूकंप में प्लेट की सीमाएं टुट जाती हैं, जिससे ज्वालामुखी पिघले हुए लावा के फव्वारे उगलते हैं, और पर्वत श्रृंखलाएं और समुद्र तल लगातार बनते और नष्ट होते हैं। पृथ्वी वैज्ञानिक लंबे समय से इस सक्रिय ग्रह के इतिहास को समझने और भविष्य की भविष्यवाणी करने के लिए चिंतित हैं। पिछले चार दशकों में, पृथ्वी वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के कामकाज को समझने में काफी प्रगति की है। वैज्ञानिकों के पास यह समझने के लिए लगातार सुधार करने वाले उपकरण हैं कि कैसे पृथ्वी की आंतरिक प्रक्रियाएं ग्रह की सतह को आकार देती हैं, कैसे अरबों वर्षों में जीवन को बनाए रखा जा सकता है, और कैसे भूवैज्ञानिक, जैविक, वायुमंडलीय और समुद्री प्रक्रियाएं जलवायु और जलवायु परिवर्तन उत्पन्न करने के लिए परस्पर क्रिया करती हैं।

अमेरिकी ऊर्जा विभाग, राष्ट्रीय वैमानिकी और अंतरिक्ष प्रशासन, राष्ट्रीय विज्ञान फाउंडेशन और अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुरोध पर, राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद ने पृथ्वी विज्ञान में भव्य प्रश्नों का प्रस्ताव और अन्वेषण करने के लिए एक समिति गठित की। यह रिपोर्ट, जो पृथ्वी विज्ञान समुदाय से मांगी गई समिति के विचार-विमर्श और इनपुट का परिणाम है, आज दस "बड़ी तस्वीर" पृथ्वी विज्ञान के मुद्दों का वर्णन करती है। इन बुनियादी सवालों के जवाब से हम जिस ग्रह पर रहते हैं उसकी समझ और हमारे पर्यावरण के प्रबंधन के लिए रणनीतियों में गहराई से सुधार हो सकता है।

पृथ्वी और अन्य ग्रहों का निर्माण

सौर मंडल मूल रूप से विभिन्न प्रकार के ग्रहों के एक समूह से बना है—जैसे चंद्रमा, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस और नेपच्यून से लेकर अन्य चट्टानी आंतरिक ग्रह आदि। सदियों से पृथ्वी, उसके पड़ोसी ग्रहों और उल्कापिंडों के अध्ययन ने सौर मंडल के जन्म के मॉडल के विकास को सक्षम बनाया है। तेजी से शक्तिशाली दूरबीनों से खगोलीय टिप्पणियों ने इन मॉडलों में एक नया आयाम जोड़ा है, जैसा कि अंतरिक्ष यान के माध्यम से क्षुद्रग्रहों, धूमकेतुओं और अन्य ग्रहों के अध्ययन के साथ-साथ स्टारडस्ट और उल्कापिंडों के भू-रासायनिक अध्ययन हैं।

हालांकि आम तौर पर यह माना जाता है कि सूर्य और अन्य सभी ग्रह एक ही नेबुलर बादल से उत्पन्न हुए हैं, इस बारे में बहुत कम जानकारी है कि पृथ्वी ने अपनी विशेष रासायनिक संरचना कैसे प्राप्त की, या अन्य ग्रह पृथ्वी से और एक दूसरे से इतने अलग क्यों हो गए। उदाहरण के लिए, पृथ्वी ने, हर दूसरे ग्रह के विपरीत, अद्वितीय गुणों को बरकरार रखा है — जैसे कि पानी की उपस्थिति — जो इसे जीवन का समर्थन करने की अनुमति देती है?

पृथ्वी पर पानी की उत्पत्ति

कार्बन (C), हाइड्रोजन (H), ऑक्सीजन (O), और नाइट्रोजन (N) जैसे जैव-तत्वों के बाद के माध्यमिक अभिवृद्धि के साथ, पृथ्वी 4.56 Ga पर वायुमंडल और महासागर घटकों के बिना, एक शुष्क ग्रह के रूप में पैदा हुई थी, जो 4-37e4-20 Ga पर चरम पर था। पृथ्वी के इस दो-चरणीय गठन मॉडल को हम जैव-तत्व मॉडल (ABEL Model) के आगमन और जैव-तत्वों (जल घटक) के आगमन की घटना को ABEL बमबारी के रूप में संदर्भित करते हैं। यह स्पष्ट है कि ठोस पृथ्वी की उत्पत्ति ऑक्सीजन के समस्थानिक संरचना और अन्य समस्थानिकों में समानता के आधार पर एंस्टैटाइट कोंड्राइट जैसी सूखी सामग्री से हुई है। दूसरी ओर, पृथ्वी का पानी मुख्य रूप से हाइड्रोजन समस्थानिक अनुपात पर आधारित कार्बनयुक्त कोंड्राइट सामग्री से प्राप्त होता है। ठोस पृथ्वी और पानी के बीच इस पहली को समझाने के लिए एबीईएल मॉडल को जानना आवश्यक है, साथ ही ऑक्सीकरण करने वाले जैव-तत्वों के द्वितीयक अभिवृद्धि, जो एक अत्यधिक रिडक्टिव ग्रह पर जीवन को उभरने के लिए मेटावोलिस्म शुरू करने के लिए एक अग्रदूत बन गया। यदि एबीईएल बमबारी न होती तो पृथ्वी पर जीवन का उदय कभी नहीं होता। इसलिए, एबीईएल बमबारी इस ग्रह के रहने योग्य ग्रह के रूप में विकसित होने की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। एबीईएल बॉम्बार्डमेंट के कालक्रम को लेट हैवी बॉम्बार्डमेंट और लेट विनियर मॉडल के नाम से सूचित किया जाता है। माना जाता है कि एबीईएल बमबारी 4-37e4-20 Ga के दौरान हुई थी।

प्राचीन काल से, लोगों ने माना है कि पानी पृथ्वी के आंतरिक भाग से आता है, इस अवलोकन के आधार पर कि ज्वालामुखियों से निकलने वाले मैग्मा में एक जल घटक होता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जल घटक की उत्पत्ति पृथ्वी के आधुनिक आंतरिक भाग से होती है, जो एक महासागर जैसे तरल पानी के बजाय मेंटल में हाइड्रोस खनिजों के रूप में होती है। इस तरह के अवलोकन या अनुभवजन्य नियम के आधार पर, लोगों ने आम तौर पर माना है कि जल घटक मूल रूप से पृथ्वी के आंतरिक भाग में संग्रहीत किया गया है, और समय के साथ महासागरों के रूप में पृथ्वी की सतह पर जमा होने के लिए बाहर निकला है।

प्लेट टैक्टोनिक्स के प्रस्ताव के बाद से (उदाहरण के लिए, ले पिचॉन, 1968, मॉर्गन, 1968, मैकेंजी, 1969) और एक अधिक हाल ही में प्रकट गतिशील संपूर्ण पृथ्वी प्रणाली जिसमें सुपरप्लम और ठोस पृथ्वी के महाद्वीपों के तीन-परत मॉडल शामिल हैं (जैसे मारुयामा और अन्य), 2007, कवाई एट अल, 2009), यह स्पष्ट हो गया है कि पानी का घटक पृथ्वी के आंतरिक भाग से आया है, जब तक कि लगभग 1.0 Ga एक अपवेलिंग मेंटल द्वारा डीकंप्रेसन पिघलने का प्रभुत्व है (मारुयामा एट अल, 2014), जबकि सरफेस जल गहराई तक गहरे मेंटल

में 660 किमी. तक, हाइड्रस खनिजों के रूप में ले जाया गया (मारुयामा, 1994 मारुयामा और लिउ, 2005)। हालांकि, जल घटक का मूल स्रोत अज्ञात बना हुआ है।

ग्रह-निर्माण सिद्धांत पर विशेष ध्यान देने वाले विज्ञान समुदाय में, यह अस्पष्ट रूप से माना गया है कि पृथ्वी के निर्माण की शुरुआत से ही पृथ्वी पर वातावरण और महासागर था। ग्रह निर्माण सिद्धांत के क्लासिक मॉडल सप्रोनोव (1969, 1972) और हयाशी एट अल द्वारा प्रदान किए गए थे, (1985), बाद वाला तथाकथित क्योटो मॉडल है। इन मॉडलों के बाद एन-बॉडी सिमुलेशन (जैसे कोकुबो और इडा, 1995, इडा एट अल, 2001) पर ध्यान केंद्रित करने वाले एक विशेष प्रयोजन कंप्यूटर द्वारा संख्यात्मक गणना के आधार पर अध्ययन किया गया। हाल ही में ग्रैंड टैक मॉडल (वाल्श एट अल, 2011) प्रस्तावित किया गया था, जो बृहस्पति को क्षुद्रग्रहों या बर्फीले ग्रहों को वितरित करने और फिर चट्टानी ग्रहों के गठन के बाद धरती को अपनी वर्तमान स्थिति में लौटने के लिए बृहस्पति से बहुत दूर की ओर पलायन करने की व्याख्या करता है। इस मॉडल के बाद, ओब्रायन एट अल। (2014) ने सुझाव दिया कि इस प्रक्रिया के माध्यम से पानी को पृथ्वी पर स्थानांतरित किया गया था। हालांकि, ये नए मॉडल भौतिक विज्ञान से दिए गए सबूतों के अनुरूप नहीं हैं, जैसे कि वर्तमान क्षुद्रग्रह बेल्ट और सौर मंडल (डीमेओ एंड कैरी, 2014) में रासायनिक जोनिंग देखा गया है।

दूसरी ओर, एस्ट्रोलिथोलॉजी का खगोल विज्ञान के क्षेत्र में एक शोध विषय के रूप में एक लंबा इतिहास रहा है, क्योंकि उरे (1952), एंडर्स (1964), और रिंगवुड (1959, 1966) जैसे अग्रणी लोगों ने काम किया है। इस तरह का शोध चोंड्रूल के अस्तित्व के आधार पर उल्कापिंडों के वर्गीकरण से शुरू हुआ (जैसे उरे और क्रेग, 1953)। मूल रूप से, उल्कापिंड एक "समूह" है जो एक गैर-संतुलन प्रक्रिया के तहत सौर निहारिका से घनीभूतों के एकत्रीकरण को दर्शाता है, जिसमें कैल्शियम-एल्यूमीनियम-समृद्ध समावेशन (सीएआई) और 1000 °C से अधिक तापमान पर बनने वाले चोंड्रोल्स और बहुत नीचे गठित मैट्रिक्स खनिज शामिल हैं। चोंड्रोल्स के साथ मिश्रित इस तरह के उल्कापिंड सामग्री को चोंड्राइट के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, जो ऑक्सीकृत चोंड्राइट और शुष्क (रिडक्टिव) चोंड्राइट के रूप में उप-वर्गीकृत होता है। सबसे अधिक रिडक्टिव एक एनस्टैटाइट चोंड्राइट है, जबकि सबसे अधिक ऑक्सीकृत एक सीआई चोंड्राइट है। क्षुद्रग्रह बेल्ट को आंतरिक भाग (मुख्य रूप से रिडक्टिव एनस्टैटाइट चोंड्राइट) और एक बाहरी भाग (पानी से भरपूर कार्बोनेसियस चोंड्राइट) में विभाजित किया गया है, जो सूर्य से दूरी के कार्य के रूप में उल्कापिंड के मैट्रिक्स के तापमान को इंगित करता है। दूसरे शब्दों में, सूर्य से जितनी दूर दूरी होती है, चोंड्राइट्स उतने ही अधिक हाइड्रेटेड होते जाते हैं। इसके आधार पर, शोधकर्ताओं ने सुझाव दिया कि पृथ्वी की अभिवृद्धि अस्थिर तत्वों के बिना अत्यधिक कम सामग्री के साथ शुरू हुई, बाद के चरण में वाष्पशील में समृद्ध ऑक्सीकृत तत्वों के साथ

(रिंगवुड, 1977, 1979, रिंगवुड और केसन, 1977, वान्के, 1981, वांके और ड्रेबस, 1988), जो तथाकथित लेट विनियर मॉडल से विकसित हुआ था, जिसे पहली बार एंडर्स (1968) द्वारा प्रस्तावित किया गया था। रिंगवुड और वान्के द्वारा मुख्य रूप से तैयार किए गए अमानवीय अभिवृद्धि मॉडल ने लेट विनियर मॉडल को मजबूत किया जो सीआई चोंड्रिटिक पृथ्वी की संरचना जैसे कि साइडरोफाइल तत्वों के संबंध में पृथ्वी की गठन प्रक्रिया की व्याख्या नहीं कर सका। हाल ही में, अल्बारेडे (2009) ने I-Xe और U-Pb कालक्रमों के आधार पर कालानुक्रमिक डेटा प्रदान किया, यह सुझाव देते हुए कि देर से लिबास घटना टी-टौरी चरण के बाद $100 \pm 50 \text{ Ma}$ पर हुई।

पृथ्वी का “अंधेरा युग”

यह माना जाता है कि पृथ्वी के निर्माण के दौरान लगभग पहले 500 मिलियन वर्ष पूर्व, मंगल के आकार का एक ग्रह उससे टकरा गया, जिससे मलबे का एक विशाल बादल बन गया जो पृथ्वी का चंद्रमा बन गया और इतनी गर्मी छोड़ी कि पूरा ग्रह पिघल गया। लेकिन इस बारे में बहुत कम जानकारी है कि पृथ्वी पर ग्रह की शैशवावस्था के दौरान परिणामी पिघली हुई चट्टान कैसे विकसित हुई, जिसे हम आज जानते हैं। पृथ्वी के अस्तित्व के पहले 500 मिलियन वर्ष, जिसे हैडियन ईऑन के रूप में जाना जाता है, यह समझने में एक महत्वपूर्ण लापता कड़ी है कि ग्रह के वायुमंडल, महासागरों और कोर, मेंटल और बाहरी क्रस्ट की विभेदित परतें कैसे विकसित हुईं। वैज्ञानिकों को लगभग पता नहीं है कि सतह का वातावरण कितनी तेजी से विकसित हुआ, संक्रमण कैसे हुआ, या जब परिस्थितियाँ जीवन का समर्थन करने के लिए पर्याप्त रूप से अनुकूल हो गईं।

पृथ्वी के सबसे पुराने खनिजों (जिरकॉन) के साथ-साथ पृथ्वी के चंद्रमा और अन्य ग्रहों से कुछ सुराग धीरे-धीरे हैडियन ईन की एक स्पष्ट तस्वीर उभरने की अनुमति दे रहे हैं। पुरानी चट्टानों और खनिजों के छोटे से छोटे नमूने से भी जो जानकारी निकाली जा सकती है, वह तेजी से बढ़ रही है, और ठोस प्रयास से यह उम्मीद की जाती है कि कई और प्राचीन चट्टानें और खनिज नमूने मिलेंगे।

जीवन की शुरुआत

द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज में, चार्ल्स डार्विन (1859) ने परिकल्पना की कि नई प्रजातियाँ मौजूदा प्रजातियों के संशोधन से उत्पन्न होती हैं। लेकिन कहीं न कहीं, जीवन वृक्ष निर्जीव पूर्वजों से उत्तनन्न हुआ है। जीवन पहली बार कब, कहाँ और किस रूप में प्रकट हुआ? जीवन की उत्पत्ति विज्ञान के सबसे पेचीदा, कठिन और स्थायी प्रश्नों में से एक है।

वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला में चिंगारी और गैसों से जीवन बनाने के लिए कड़ी मेहनत की है ताकि यह रोशन किया जा सके कि पृथ्वी की प्रारंभिक परिस्थितियों में जीवन पहली बार कैसे बना। लेकिन यहां तक कि उन शुरुआती स्थितियों को भी कम करना एक मायावी लक्ष्य बना हुआ है। जीवन की उत्पत्ति किन पदार्थों से हुई है? क्या जीवन, जैसा कि डार्विन ने अनुमान लगाया था, एक "गर्म छोटे तालाब" में उत्पन्न हुआ, शायद एक ज्वारीय पूल बार-बार सूख गया और ताजा हो गया? या हो सकता है कि जीवन हाइड्रोथर्मल वेंट के बीच निहित हो? क्या जीवन की उत्पत्ति पृथ्वी से परे भी हो सकती है?

इसके अतिरिक्त, पृष्ठभूमि में छिपी महत्वपूर्ण अवधारणा हैबिटेबल ट्रिनिटी (दोहम और मारुयामा, 2015) है। पृथ्वी पर जीवन के उद्भव के लिए, इसमें कोई संदेह नहीं है कि पृथ्वी में पानी होना चाहिए, लेकिन पानी की उपस्थिति का मतलब जीवन का जन्म नहीं है, जैसा कि 1950 के दशक से लंबे समय से देखा जाता रहा है (जैसे, स्ट्रॉल्ड, 1953, हुआंग, 1959, 1960, डोले, 1964, श्वलोवस्की और सागन, 1966, कार्स्टिंग एट अल, 1993), जीवन के निर्माण खंडों (एमिनो एसिड, प्रोटीन, और किसी भी अन्य कार्बनिक यौगिकों) को संश्लेषित करने के लिए, पानी के घटक के अलावा वायुमंडलीय और भूमि द्रव्यमान घटकों का होना आवश्यक है। साथ ही, इन तीन घटकों (वायुमंडल, महासागर और भूभाग), सूर्य द्वारा संचालित हाइड्रोलॉजिकल साइकिलिंग के माध्यम से, अधिक जटिल कार्बनिक यौगिकों का उत्पादन करने के लिए रासायनिक प्रतिक्रियाओं के कई चरणों को जारी रखने की आवश्यकता है। यह जीवन के जन्म तक पहुंचने का मार्ग है। यहां, हम इस बात पर जोर देते हैं कि प्रारंभिक महासागरीय द्रव्यमान बहुत सीमित होना चाहिए ताकि समुद्र के ऊपर जीवन के लिए स्रोत पोषक तत्व के रूप में प्रकट हो सके और प्लेट टेक्टोनिक्स (मारुयामा एट अल, 2013) शुरू हो सके। हैबिटेबल ट्रिनिटी की अवधारणा ब्रह्मांड में जीवन की खोज के लिए सबसे महत्वपूर्ण सूचकांक होगी, जो रहने योग्य क्षेत्र की अवधारणा का स्थान लेगी।

भौतिक वातावरण और प्रारंभिक जीवन के लिए उपलब्ध रासायनिक बिल्डिंग ब्लॉक्स की एक सटीक तस्वीर विकसित करना एक महत्वपूर्ण पृथ्वी विज्ञान चुनौती है। इन रहस्यों पर प्रकाश डालने के सुराग मुख्य रूप से पृथ्वी की प्राचीन चट्टानों और खनिजों की जांच से निकलते हैं—उस समय का एकमात्र शेष सबूत जब पृथ्वी का जीवन पहली बार उभरा।

पृथ्वी का आंतरिक भाग

पृथ्वी का आंतरिक भाग कैसे कार्य करता है, और यह सतह को कैसे प्रभावित करता है?

जैसे-जैसे ग्रह उम्र और ठंडे होते जाते हैं, उनकी आंतरिक और सतही प्रक्रियाएं धीरे-धीरे बदलती हैं। पृथ्वी के आंतरिक भाग के भीतर परिवर्तनों की अभिव्यक्ति— जैसे कि पहाड़ों और ज्वालामुखियों का विकास— का पृथ्वी की सतह और वायुमंडल की प्रकृति पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

वैज्ञानिकों को पता है कि पृथ्वी के मेंटल (कोर और क्रस्ट के बीच की मोटी परत), जो अत्यधिक दबाव और बहुत अधिक तापमान में है, का अधिकांश भाग एक चिपचिपे तरल की तरह व्यवहार करता है। हालांकि, यह विशाल इंटीरियर प्रत्यक्ष अध्ययन के लिए काफी हद तक पहुंच योग्य नहीं है। एक सदी से भी अधिक समय से, सतह पर किए गए भूकंपीय तरंग, भू-चुंबकीय और गुरुत्वाकर्षण माप पृथ्वी की आंतरिक संरचना की समझ में सुधार कर रहे हैं। निरंतर प्रगति के बावजूद, वैज्ञानिक केवल पृथ्वी के कोर, चुंबकीय क्षेत्र, मेंटल और सतह के बीच संबंधों का पता लगाने और यह जांच करने के लिए शुरू कर रहे हैं कि पृथ्वी अन्य ग्रहों से अलग क्यों है, या भविष्य में यह कैसे बदल सकता है।

5. पृथ्वी में प्लेट विवर्तनिकी क्यों है और महाद्वीप?

पृथ्वी विज्ञान का एक प्रमुख फोकस महाद्वीपों की प्रकृति को समझने पर रहा है—ऐसी विशेषताएं जो पृथ्वी को भूमि पर रहने वाले जीवन के लिए रहने योग्य बनाती हैं। महाद्वीप कैसे और कब बने? वे कैसे बदल गए हैं? दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका के अटलांटिक तट एक पहली के टुकड़े की तरह क्यों दिखते हैं?

प्लेट विवर्तनिकी बड़ी संख्या की एक छोटी संख्या के संदर्भ में पृथ्वी की सबसे बाहरी परतों का विवरण

पृथ्वी के आंतरिक भाग का उच्च दबाव और तापमान, ग्रह का विशाल आकार और इसकी संरचनाएँ, भूवैज्ञानिक समय का लंबा विस्तार और सामग्री की विशाल विविधता पृथ्वी की सामग्री के अध्ययन के लिए चुनौतियां पेश करती हैं। हालाँकि, इस क्षेत्र में अब सफलता हाथ लगी है नए विश्लेषणात्मक उपकरण और उन्नत कंप्यूटिंग क्षमताएं परमाणु स्तर पर पृथ्वी सामग्री के अध्ययन और सिमुलेशन में सुधार कर रही हैं और भविष्यवाणी में सुधार करने का वादा करती हैं कि ये भौतिक गुण ग्रह प्रक्रियाओं को कैसे प्रभावित करेंगे।

पृथ्वी की जलवायु और रहने की क्षमता

लगभग 40 साल पहले भूविज्ञान के लिए एक केंद्रीय प्रतिमान बनने के बाद से सापेक्ष गति में कठोर प्लेटों ने कई सफलता अंतर्दृष्टि प्रदान की है। टेक्टोनिक प्लेटों की गति और उनकी सीमाओं पर परस्पर क्रिया को अब भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट, पहाड़ों के निर्माण और पृथ्वी की सतह पर महाद्वीपों के धीमे बहाव के पीछे एक प्रेरक शक्ति के रूप में जाना जाता है।

हालांकि प्लेट टेक्टोनिक सिद्धांत पृथ्वी की सतह की कई विशेषताओं की व्याख्या करता है, यह ज्ञात नहीं है कि पृथ्वी में प्लेट क्यों हैं या प्लेट टेक्टोनिक्स और पृथ्वी के प्रचुर मात्र में पानी, महाद्वीपों और जीवन के अस्तित्व के बीच क्या संबंध हैं। इस तरह के सवालों के जवाब देने के लिए बेहतर मॉडल, आधुनिक प्लेट सीमाओं के अध्ययन और अन्य ग्रहों के साथ तुलना की आवश्यकता होगी।

6. पृथ्वी प्रक्रियाओं को सामग्री द्वारा कैसे नियंत्रित किया जाता है गुण?

यह छोटी चीजें हैं जो सभी अंतर बनाती हैं। वैज्ञानिक अब मानते हैं कि पृथ्वी पर बड़े पैमाने की प्रक्रियाएं, जैसे कि प्लेट टेक्टोनिक्स, उन सामग्रियों की प्रकृति से संचालित होती हैं जो ग्रह को बनाते हैं – उनके परमाणु संरचनाओं के सबसे छोटे विवरण तक।

7. जलवायु परिवर्तन का क्या कारण है और यह कितना बदल सकता है?

यह व्यापक रूप से माना जाता है कि औद्योगिक युग की शुरुआत के बाद से पृथ्वी का औसत वैश्विक सतह का तापमान बढ़ गया है, और सीओ₂ और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम से कम आंशिक रूप से जिम्मेदार है। ग्लोबल वार्मिंग के संभावित गंभीर परिणाम यह निर्धारित करने की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं कि वार्मिंग कितनी है

मानव गतिविधियों के कारण होता है और इसके बारे में क्या किया जा सकता है। दोनों सवालों के जवाब देने में पृथ्वी विज्ञान की अहम भूमिका है।

भूवैज्ञानिक रिकॉर्ड ने ग्रह की जलवायु के इतिहास को परिवर्तनशीलता और स्थिरता दोनों का एक अजीब संयोजन के रूप में प्रकट किया है। वैश्विक जलवायु परिस्थितियाँ पिछले 10,000 . से जीवन के लिए अनुकूल और अपेक्षा त स्थिर रही हैं

साल और 3 अरब से अधिक वर्षों के लिए जीवन के लिए उपयुक्त।

लेकिन भूवैज्ञानिक साक्ष्य यह भी दिखाते हैं कि जलवायु में महत्वपूर्ण परिवर्तन दशकों या सदियों जितनी छोटी अवधियों में हो सकते हैं। पृथ्वी की जलवायु लंबी अवधि में अपेक्षा त स्थिर कैसे रहती है, भले ही यह इतनी अचानक बदल सकती है? उन अवधियों को समझना जिनमें ग्रह अत्यंत ठंडा था, अत्यधिक गर्म था, या विशेष रूप से तेजी से बदल गया था, पृथ्वी की जलवायु के बारे में नई अंतर्दृष्टि की ओर ले जा रहे हैं। प्राचीन चट्टानों के अवलोकन से अंततः जलवायु परिवर्तन के परिमाण और परिणामों की भविष्यवाणी में सुधार हो सकता है।

8. जीवन ने पृथ्वी को कैसे आकार दिया है और पृथ्वी ने जीवन को कैसे आकार दिया है?

वैज्ञानिक जानते हैं कि पृथ्वी के वायुमंडल की संरचना, विशेष रूप से इसकी अक्सीजन की उच्च सांद्रता, जीवन की उपस्थिति का परिणाम है। सूक्ष्म पैमाने पर, जीवन एक अस्थिर लेकिन शक्तिशाली रासायनिक बल है: जीव उन प्रतिक्रियाओं को उत्प्रेरित करते हैं जो उनकी अनुपस्थिति में नहीं होतीं, और वे अन्य प्रतिक्रियाओं को तेज या धीमा कर देते हैं। इन प्रतिक्रियाओं, एक बड़े बायोमास द्वारा समय के विशाल हिस्सों में मिश्रित, वैश्विक परिणाम के परिवर्तन उत्पन्न कर सकते हैं।

इसी तरह, पृथ्वी के भूगर्भीय विकास, साथ ही उल्कापिंडों के प्रभाव जैसी विनाशकारी घटनाओं ने जीवन के विकास को स्पष्ट रूप से प्रभावित किया है। लेकिन यहां तक कि जब विलुप्त होने और प्रमुख विकासवादी परिवर्तनों का दस्तावेजीकरण किया जा सकता है, तब भी इसके कारण एक रहस्य बने हुए हैं। जैविक प्रक्रियाओं के विरोध में वे किस हद तक भूवैज्ञानिक के कारण थे?

वास्तव में भूगर्भीय घटनाओं ने विकास को कैसे प्रभावित किया है, और जलवायु पर जीवन का कितना नियंत्रण है, यह अभी भी बहस का विषय है। जीवन और भूमि को आकार देने वाली प्रक्रियाओं के बीच अंतर्संबंधों को समझना एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करता है।

एक सक्रिय पृथ्वी के साथ रहना

कभी भी सटीक समय और स्थान की भविष्यवाणी करने में सक्षम नहीं होगा कि भूकंप आएगा। निरंतर चुनौतियों में यह समझना शामिल है कि फ्लूट फटना कैसे शुरू और बंद होता है, बड़े भूकंपों के पास कितने झटकों की उम्मीद की जा सकती है, और एक खतरनाक भूकंप शुरू होने पर चेतावनी समय बढ़ाना शामिल है।

10. द्रव प्रवाह और परिवहन मानव पर्यावरण को कैसे प्रभावित करते हैं?

पृथ्वी के कई सबसे मूल्यवान संसाधनों की उपस्थिति और स्थान का निर्धारण द्रव प्रवाह और परिवहन की प्रक्रियाओं द्वारा किया जाता है। खनिजों, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस और भूजल का आकलन करने और निकालने और कचरे को सुरक्षित रूप से निपटाने की क्षमता सतह पर और जमीन के नीचे तरल पदार्थ को समझने पर निर्भर करती है।

सिलिड-अर्थ साइंसेज में ग्रैंड रिसर्च क्वेश्चन पर समिति के कुछ: डोनाल्ड जे। डीपाओलो (अध्यक्ष), कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कलेय थ्यूरी ई. सेर्लिंग, यूटा विश्वविद्यालय, साल्ट लेक सिटीय सिडनी आर हेमिंग, कोलंबिया विश्वविद्यालय एंड्रयू एच। नोल, हार्वर्ड विश्वविद्यालय फ्रैंक एम. रिक्टर, शिकागो

विश्वविद्यालय लेह एच। र यडेन, मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी रोबर्टा एल. रुडनिक, मैरीलैंड विश्वविद्यालय, कलेज पार्कय लार्स स्टिक्सरूड, मिशिगन विश्वविद्यालय, एन आर्बरय जेम्स एस। ट्रेफिल, जॉर्ज मेसन विश्वविद्यालय ऐनी एम. लिन (अध्ययन निदेशक), राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद। यह रिपोर्ट संक्षिप्त राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद द्वारा समिति की रिपोर्ट, ओरिजिन एंड इवोल्यूशन ऑफ अर्थ: रिसर्च क्वेश्चन फॉर ए चेंजिंग प्लैनेट (2008) के आधार पर तैयार की गई थी। अधिक जानकारी या प्रतियों के लिए, पृथ्वी विज्ञान और संसाधन बोर्ड से (202) 334-2744 पर संपर्क करें या पीजच:ध्दंजपवदंसंबंकमउपमे.वतहध्दमेत पर जाएं। रिपोर्ट की प्रतियां राष्ट्रीय अकादमियों प्रेस, 500 फिफ्थ स्ट्रीट, एनडब्ल्यू, वाशिंगटन, डी.सी. 20001 से उपलब्ध हैं (800) 624-6242 यू.दं.मकन. पृथ्वी का निर्माण एक अजीब, वैज्ञानिक रहस्य बना हुआ है।

हम सात अन्य ग्रहों के साथ सौर मंडल में एक ग्रह पर रहते हैं और अब तक हजारों एक्सोप्लैनेट की खोज कर चुके हैं। लेकिन पृथ्वी जैसे ग्रह कैसे बनते हैं यह अभी भी एक बड़ी बहस का विषय बना हुआ है।

वर्तमान में, ग्रहों के निर्माण पर दो प्रमुख सिद्धांत हैं। वैज्ञानिक हमारे सौर मंडल के अंदर और बाहर ग्रहों का अध्ययन जारी रखते हैं ताकि यह बेहतर ढंग से समझ सकें कि इनमें से कौन सा सिद्धांत सबसे सटीक वर्णन करता है कि सौर मंडल और उसके ग्रह कैसे बने।

पहला और सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत सिद्धांत कोर अभिवृद्धि मंडल है, जो पृथ्वी जैसे स्थलीय ग्रहों के गठन की व्याख्या करने के लिए अच्छी तरह से काम करता है, लेकिन विशाल ग्रहों के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार नहीं है। दूसरा सिद्धांत, जिसे डिस्क अस्थिरता विधि कहा जाता है, बड़े ग्रहों के निर्माण के लिए जिम्मेदार हो सकता है। ये दो प्रमुख सिद्धांत कंकड़ अभिवृद्धि सिद्धांत से जुड़े हुए हैं जो अतिरिक्त रूप से यह समझाने में मदद करता है कि विभिन्न वस्तुएं कैसे बन सकती हैं।

संबंधित: पृथ्वी की परतें: हमारे ग्रह को अंदर और बाहर एक्सप्लोर करना

अधिक चंबम.बवउ वीडियो के लिए यहां क्लिक करें...

कोर अभिवृद्धि मंडल क्या है?

हमारे सौर मंडल के सौर नीहारिका की कलाकार की अवधारणा, गैस और धूल के बादल जिससे पृथ्वी, सूर्य और हमारे सौर मंडल के अन्य ग्रहों का निर्माण हुआ।

हमारे सौर मंडल के सौर नीहारिका की कलाकार की अवधारणा, गैस और धूल के बादल जिससे पृथ्वी, सूर्य और हमारे सौर मंडल के अन्य ग्रहों का निर्माण हुआ। (छवि क्रेडिट: चित्रकारी क पीराइट विलियम के. हार्टमैन, ग्रह विज्ञान संस्थान, टक्सन)

लगभग 4.6 अरब साल पहले, हमारा सौर मंडल धूल और गैस का एक बादल था जिसे सौर निहारिका के रूप में जाना जाता था। गुरुत्वाकर्षण ने सामग्री को अपने आप में ढहा दिया क्योंकि यह घूमना शुरू कर दिया, पदार्थ को संघनित कर दिया और नीहारिका के केंद्र में सूर्य का निर्माण किया।

सूर्य के बनने के साथ ही शेष सामग्री ऊपर चढ़ने लगी। गुरुत्वाकर्षण के बल से बंधे हुए छोटे-छोटे कण एक साथ बड़े कणों में बदल गए। सौर हवा, सूर्य के ऊपरी वायुमंडल से निकलने वाले आवेशित कणों की एक निरंतर धारा, हाइड्रोजन और हीलियम जैसे हल्के तत्वों को बहा ले जाती है।

इसने भारी, चट्टानी सामग्री को पीछे छोड़ दिया जिसने पृथ्वी जैसे छोटे स्थलीय संसार का निर्माण किया। और सूर्य से दूर, सौर हवा का हल्के तत्वों पर कम प्रभाव पड़ा जिसने इन तत्वों को गैस दिग्गजों में संयोजित करने की अनुमति दी। इस प्रक्रिया ने हमारे सौर मंडल के क्षुद्रग्रहों, धूमकेतुओं, ग्रहों और चंद्रमाओं का निर्माण किया।

पृथ्वी का चट्टानी कोर सबसे पहले बनता है, जिसमें भारी तत्व आपस में टकराते और बंधते हैं। घने पदार्थ प्रोटोप्लैनेट के केंद्र में डूब गए जबकि हल्के पदार्थ ने क्रस्ट का निर्माण किया। माना जाता है कि इस समय के आसपास पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के बनने की संभावना है।

अपने विकास की शुरुआत में, पृथ्वी को एक बड़े पिंड के प्रभाव का सामना करना पड़ा जिसने युवा ग्रह के मेटल के टुकड़ों को अंतरिक्ष में पहुंचा दिया। गुरुत्वाकर्षण ने इनमें से कई टुकड़ों को एक साथ खींचकर चंद्रमा का निर्माण किया, जिसने इसके निर्माता के चारों ओर परिक्रमा की।

इस कलाकार के चित्रण में प्रोटोप्लैनेट और प्लैनेटिस्मल के साथ ग्रह निर्माण का देर-चरण चरण देखा गया है।

इस कलाकार के चित्रण में प्रोटोप्लैनेट और प्लैनेटिस्मल के साथ ग्रह निर्माण का देर-चरण चरण देखा गया है। (छवि क्रेडिट: एशले न रिस ६अ क्सफोर्ड विश्वविद्यालय)

पृथ्वी की पपड़ी के नीचे मेंटल का प्रवाह प्लेट टेक्टोनिक्स का कारण बनता है, ग्रह की सतह पर चट्टान की बड़ी प्लेटों की गति। टकराव और घर्षण ने पहाड़ों और ज्वालामुखियों को जन्म दिया, जिससे गैसों उगलने लगीं।

जब पृथ्वी पहली बार बनी थी तो उसमें बमुरिकल कोई वायुमंडल था। जैसे ही ग्रह ठंडा होने लगा और गुरुत्वाकर्षण ने पृथ्वी के ज्वालामुखियों से गैसों को पकड़ना शुरू कर दिया, इसका वातावरण बनना शुरू हो गया।

जबकि आंतरिक सौर मंडल से गुजरने वाले धूमकेतु और क्षुद्रग्रहों की आबादी आज विरल है, जब ग्रह और सूर्य युवा थे तब वे अधिक प्रचुर मात्र में थे। इन ब्रह्मांडीय पिंडों के बीच टकराव की संभावना पृथ्वी की सतह पर अधिकांश पानी जमा कर देती है।

हमारा ग्रह गोल्डील क्स जोन के रूप में जाना जाता है, जो एक तारे के आस-पास का एक क्षेत्र है जो किसी ग्रह की सतह पर तरल पानी के अस्तित्व के लिए पर्याप्त है, जिसमें पानी न तो जमता है और न ही वाष्पित होता है। कई वैज्ञानिक सोचते हैं कि इस क्षेत्र में होने और तरल पानी की उपस्थिति जीवन के अस्तित्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रारंभिक पृथ्वी-चंद्रमा प्रणाली की एक कलात्मक अवधारणा जो बड़े प्रभावों के साथ बमबारी के बाद पृथ्वी की सतह को दिखाती है, जिससे सतह पर मैग्मा बाहर निकलता है, हालांकि कुछ तरल पानी बरकरार रखा गया था। छवि 30 जुलाई 2014 को जारी की गई।

प्रारंभिक पृथ्वी-चंद्रमा प्रणाली की एक कलात्मक अवधारणा जो बड़े प्रभावों के साथ बमबारी के बाद पृथ्वी की सतह को दिखाती है, जिससे सतह पर मैग्मा बाहर निकलता है, हालांकि कुछ तरल पानी बरकरार रखा गया था। छवि 30 जुलाई 2014 को जारी की गई। (छवि क्रेडिट: सिमोन मार्ची)

एक्सोप्लैनेट का अवलोकन करने में, वैज्ञानिक सोचते हैं कि यह मूल अभिवृद्धि मंडल प्रमुख गठन प्रक्रिया के रूप में फिट बैठता है।

अधिक “धातुओं” वाले सितारे – एक शब्द जो खगोलविद हाइड्रोजन और हीलियम से भारी सभी रासायनिक तत्वों के लिए उपयोग करते हैं – उनके कोर में उनके धातु-गरीब चचेरे भाइयों की तुलना में अधिक विशाल ग्रह होते हैं। नासा (नए टैब में खुलता है) के अनुसार, कोर अभिवृद्धि से पता चलता है कि छोटे, चट्टानी संसार अधिक विशाल गैस दिग्गजों की तुलना में अधिक सामान्य होने चाहिए।

एक खोज जिसने ग्रह निर्माण के स्पष्टीकरण के रूप में कोर अभिवृद्धि की वैधता को मजबूत करने में मदद की है, वह 2005 में एक विशाल ग्रह की खोज है जिसमें एक विशाल कोर है जो सूर्य जैसे स्टार एचडी 149026 की परिक्रमा करता है।

ग्रेग हेनरी ने एक प्रेस (नए टैब में खुलता है) रिलीज (नए टैब में खुलता है) में कहा, “यह ग्रह निर्माण के लिए मूल अभिवृद्धि सिद्धांत की पुष्टि है और इस बात का सबूत है कि इस तरह के ग्रह बहुतायत में मौजूद होने चाहिए।” टेनेसी स्टेट यूनिवर्सिटी, नैशविले के एक खगोलशास्त्री हेनरी ने तारे के धुंधले होने का पता लगाया। 2019 में, यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी ने एक्सोप्लैनेट सैटेलाइट (बम्बै) को चिह्नित किया, जिसे सुपर-अर्थ से लेकर नेपच्यून तक के आकार के एक्सोप्लैनेट का अध्ययन करने के लिए डिजाइन किया गया था। इस तरह के और अन्य मिशनों के साथ, वैज्ञानिकों का लक्ष्य दूर की दुनिया का अध्ययन करना है ताकि उनकी समझ विकसित हो सके कि विभिन्न सौर प्रणालियों में ग्रहों की संभावना कैसे बनती है।

बम्बै टीम (नए टैब में खुलती है) ने कहा, “मुख्य अभिवृद्धि परिणाम में, किसी ग्रह के मूल को एक महत्वपूर्ण द्रव्यमान तक पहुंचना चाहिए, इससे पहले कि वह एक भगोड़ा फैशन में गैस को जमा करने में सक्षम हो।” “यह महत्वपूर्ण द्रव्यमान कई भौतिक चरों पर निर्भर करता है, जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण ग्रहों के अभिवृद्धि की दर है।”

सम्बंधित: पृथ्वी कितनी तेजी से आगे बढ़ रही है?

डिस्क अस्थिरता में डल क्या है?

जबकि कोर अभिवृद्धि में डल स्थलीय ग्रहों के लिए काम करता है, गैस दिग्गजों को हल्के गैसों के महत्वपूर्ण द्रव्यमान को पकड़ने के लिए तेजी से विकसित होने की आवश्यकता होगी। लेकिन उस में डल के साथ सिमुलेशन इस तेजी से गठन के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। उन सिमुलेशन में, प्रक्रिया में कई मिलियन वर्ष लगते हैं, जो कि प्रारंभिक सौर मंडल में उपलब्ध प्रकाश गैसों की तुलना में अधिक लंबा है।

लेकिन मूल अभिवृद्धि में डल केवल इस बात का स्पष्टीकरण नहीं है कि ग्रह कैसे हो सकते हैं।

एक नए सिद्धांत के अनुसार, सौर मंडल के अस्तित्व में डिस्क अस्थिरता, धूल और गैस के झुरमुट एक साथ बंध जाते हैं। समय के साथ, ये झुरमुट धीरे-धीरे एक विशाल ग्रह में जमा हो सकते हैं। ये ग्रह उन ग्रहों की तुलना में तेजी से बन सकते हैं जो मूल अभिवृद्धि स्पष्टीकरण के भीतर बनते हैं, कभी-कभी एक हजार वर्षों में भी, जो उन्हें तेजी से गायब होने वाली हल्की गैसों को फंसाने की अनुमति देता है। ये ग्रह जल्दी से एक कक्षा-स्थिर द्रव्यमान तक पहुँच जाते हैं जो उन्हें सूर्य की ओर जाने से रोकता है।

एक्सोप्लैनेटरी एस्ट्रोनॉमर पॉल विल्सन (नए टैब में खुलता है) के अनुसार, यदि डिस्क अस्थिरता ग्रहों के निर्माण पर हावी है, तो इसे बड़े क्रम में दुनिया की एक विस्तृत संख्या का उत्पादन करना चाहिए। भू-9799 के चारों ओर महत्वपूर्ण दूरी पर परिक्रमा करने वाले चार विशाल ग्रह डिस्क अस्थिरता के लिए अवलोकन संबंधी साक्ष्य प्रदान करते हैं।

फोमलहौत बी (नए टैब में खुलता है), एक एक्सोप्लैनेट जिसके तारे के चारों ओर 2,000 साल की कक्षा है, डिस्क अस्थिरता के माध्यम से बनाई गई दुनिया के उदाहरण के रूप में काम कर सकता है, हालांकि अपने पड़ोसियों के साथ बातचीत के कारण ग्रह को भी बाहर निकाला जा सकता था।

अधिक चंबम.बवउ वीडियो के लिए यहां क्लिक करें...

कंकड़ अभिवृद्धि क्या है?

एक युवा तारे की परिक्रमा करती धूल भरी डिस्क का श्य।

एक युवा तारे की परिक्रमा करती धूल भरी डिस्क का श्य। (छवि क्रेडिट: नासाधजेपीएल-कैल्टेक)
डिस्क अस्थिरता म डल समय के साथ कोर अभिवृद्धि म डल की समस्या से जूझता हैय विशेष रूप से बड़े पैमाने पर गैस दिग्गजों को हल्के घटकों को कितनी जल्दी हथियाना होगा। लेकिन एक और, हालिया म डल जिसे कंकड़ अभिवृद्धि के रूप में जाना जाता है, इस व्याख्यात्मक अंतर को भरने में भी मदद करता है।

इस म डल में, शोधकर्ताओं ने दिखाया है कि अन्य स्पष्टीकरणों की तुलना में 1000 गुना तेजी से विशाल ग्रहों का निर्माण करने के लिए छोटे, कंकड़ के आकार की वस्तुओं को एक साथ कैसे जोड़ा जा सकता है।

“यह पहला म डल है जिसके बारे में हम जानते हैं कि आप सौर नेबुला के लिए एक बहुत ही सरल संरचना के साथ शुरू करते हैं, जिससे ग्रह बनते हैं, और विशाल-ग्रह प्रणाली के साथ समाप्त होते हैं जिसे हम देखते हैं,” हेरोल्ड लेविसन, दक्षिण पश्चिम में एक खगोलशास्त्री कोलोराडो में रिसर्च इंस्टीट्यूट (एसडब्ल्यूआरआई) और म डल का वर्णन और खोज करने वाले एक पेपर के प्रमुख अध्ययन लेखक ने 2015 में चतवविन्दकैचंबम.वतह को बताया।

कुछ साल पहले, 2012 में, स्वीडन में लुंड विश्वविद्यालय के शोधकर्ता मिचेल लैम्ब्रेक्ट्स और एंडर्स जोहानसन ने प्रस्तावित किया था कि छोटे कंकड़, एक बार लिखे जाने के बाद, तेजी से विशाल ग्रहों के निर्माण की कुंजी रखते हैं।

“उन्होंने दिखाया कि इस गठन प्रक्रिया से बचे हुए कंकड़, जिन्हें पहले महत्वहीन माना जाता था, वास्तव में ग्रह बनाने की समस्या का एक बड़ा समाधान हो सकता है,” लेविसन ने कहा।

लेविसन और उनकी टीम ने उस शोध पर और अधिक सटीक रूप से म डल बनाने के लिए बनाया कि कैसे छोटे कंकड़ आज आकाशगंगा में देखे गए ग्रहों का निर्माण कर सकते हैं। पिछले सिमुलेशन में, दोनों बड़े और मध्यम आकार की वस्तुओं ने अपेक्षा त स्थिर दर पर अपने कंकड़-आकार के चचेरे भाई का उपभोग किया, लेकिन लेविसन के सिमुलेशन से पता चलता है कि बड़ी वस्तुएं बुलियों की तरह अधिक काम करती हैं, मध्यम आकार के लोगों से कंकड़ छीनकर बहुत अधिक बढ़ने के लिए तेज दर।

अध्ययन के सह-लेखक कैथरीन क्रेटके ने चतुर्विन्दकैचंबम.वतह को बताया, “बड़ी वस्तुएं अब छोटे लोगों को तितर-बितर कर देती हैं, जबकि छोटे वाले उन्हें वापस बिखेर देते हैं, इसलिए छोटे लोग कंकड़ की डिस्क से बिखर जाते हैं।” . “बड़ा आदमी मूल रूप से छोटे को धमकाता है ताकि वे सभी कंकड़ खुद खा सकें, और वे विशाल ग्रहों के कोर बनाने के लिए बड़े हो सकें।”

Artificial Intelligence in India : A New Era of Digital Economy

Dr. Neha Jaiswal

Assistant professor, Department of Commerce, Rajiv Gandhi South Campus, Banaras Hindu University, Varanasi, Uttar Pradesh, India

Article Info

Volume 6, Issue 2

Page Number : 65-70

Publication Issue :

March-April-2023

Article History

Accepted : 01 April 2023

Published : 10 April 2023

ABSTRACT- Artificial Intelligence (AI) is emerging as a central policy issue in several countries. The central issues for policy makers are applications of AI for public good, regulation, economic impact, global security and fairness issues etc. Advanced and rapid developments in the field of technology in recent times have been led by the AI, which has profoundly changed development and life status around the world. This paper discusses about the worldwide initiatives on AI policies and India's current AI policy landscape, challenges in formulating AI policies, sector of relevance and challenges. This paper explains the framework and demand of Artificial Intelligence in India. This paper also critically analysed the venture capital investment in AI in India.

Keywords - Artificial, Intelligence, India, New Era, Digital, Economy.

INTRODUCTION

Artificial Intelligence (AI) refers to the simulation of human intelligence in machines that are programmed to think like humans and emulate human cognitive capabilities. The term AI may also be applied to any machine that exhibits traits associated with a human mind such as learning and problem solving. AI, an approach to copy the cognitive functioning of the human mind for solving some problem or for simply learning, has potential to disrupt almost all aspects of human existence. This intelligence aspect is also very well termed as machine intelligence in which the machine is made to demonstrate contrasting natural intelligence of humans.

FRAMEWORK OF ARTIFICIAL INTELLIGENCE STRATEGY IN INDIA: The development, adoption and promotion of AI have been visibly high on the list of priorities of the Indian Government, an approach that rests on the premise that AI has the potential to make lives easier and to make inclusive society.

NITI AAYOG'S NATIONAL STRATEGY FOR AI: #AIFORALL- India has taken a unique approach to its national AI strategy by focusing on how India can leverage AI not only for economic growth, but also for social inclusion. NITI Aayog, the government think tank that conceptualised and articulated the strategy, calls this approach #AIforAll. The strategy, as a result, aims to

- i) Enhance and empower Indians with the skills to find quality jobs;
- ii) Invest in research and sectors that can maximize economic growth and social impact;
- iii) Scale Indian-made AI solutions to the rest of the developing world.

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the [Creative Commons Attribution Non-Commercial License](#), which permits unrestricted non-commercial use distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

NITI Aayog published India's strategy document on Artificial Intelligence on June 4, 2018. For formulation of ibid strategy, NITI Aayog has devised processes such as collaborating with experts and stakeholders, AI projects in various fields with fully explanatory proofs and designing a strategy for developing a vibrant AI ecosystem in India. NITI Aayog has identified AI as a truly transforming technology and it has coined a brand name #AIforAll for proliferation of AI in India. This brand is introduced in India to satisfy its needs and aspirations of attaining a leadership role in AI development. The strategy is derived to use AI mainly for inclusive socio- economic growth of India and it aims to place India at forefront of AI technology development arena. The strategy strives to leverage AI for economic growth, social development and inclusive growth, and finally as a "Garage" for emerging and developing economies. NITI AAYOG mainly focused on 5 major areas: Healthcare, Agriculture, Education, Smart Cities and Infrastructure and Smart Mobility and Transportation. The strategy paper systematically discusses about present eco-system of AI development in India, prospective sectors for AI proliferation, research and development capabilities and way forward.

NITI Aayog provides over 30 policy recommendations to invest in scientific research, encourage reskilling and training, accelerate the adoption of AI across the value chain, and promote ethics, privacy, and security in AI. Its flagship initiative is a two-tiered integrated strategy to boost research in AI. First, new Centres of Research Excellence in AI (COREs) will focus on fundamental research. Second, the COREs will act as technology feeders for the International Centres for Transformational AI (ICTAIs), which will focus on creating AI-based applications in domains of societal importance. In the said report, NITI Aayog identifies healthcare, agriculture, education, smart cities, and smart mobility as the priority sectors. The report also recommends setting up a consortium of Ethics Councils at each CORE and ICTAI, developing sector specific guidelines on privacy, security, and ethics, creating a National AI Marketplace to increase market discovery and reduce time and cost of collecting data, and a number of initiatives to help the overall workforce acquire skills.

NATIONAL ARTIFICIAL INTELLIGENCE PORTAL- The Indian Government launched National Artificial Intelligence Portal called www.ai.gov.in on 30 May 2020. The portal will work as a one-stop digital platform for AI-related developments in India, sharing of resources such as articles, start-ups, investment funds in AI, resources, companies and educational institutions related to AI in India. The portal will also share documents, case studies, research reports etc. It also has a section about learning and new job roles related to AI.

The government has also launched a national programme for youth named 'Responsible AI for Youth'. It aims at empowering the young students of the country with an appropriate new-age tech mindset, access to required AI toolset and relevant AI skill sets to make the youth digitally ready for the future

AI ACADEMIA/ INSTITUTES AND CENTERS IN INDIA:

- Centre for Artificial Intelligence IIT Kharagpur
- Center for Artificial Intelligence & Robotics (CAIR), DRDO
- Robert Bosch Centre for Data Science and Artificial Intelligence, IITM
- The Artificial Intelligence Group (AI@IISc)
- Department of AI @ IITH
- Academia-industry Collaboration on Artificial Intelligence

- Laboratory of Statistical AI and Machine Learning (LSAIML), IITR

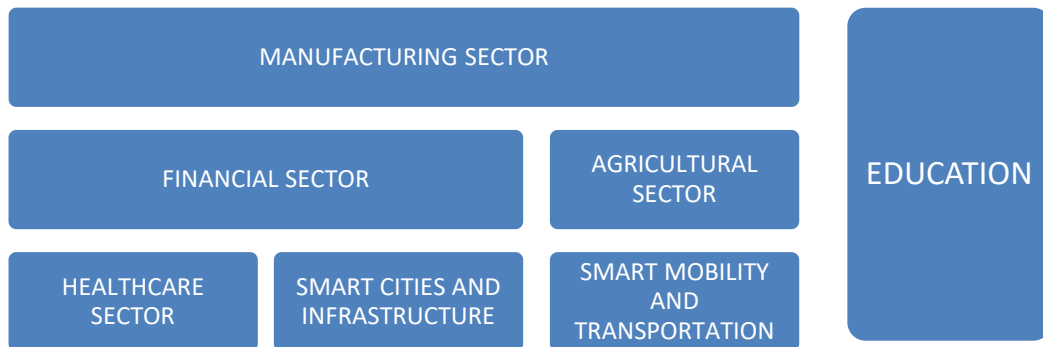


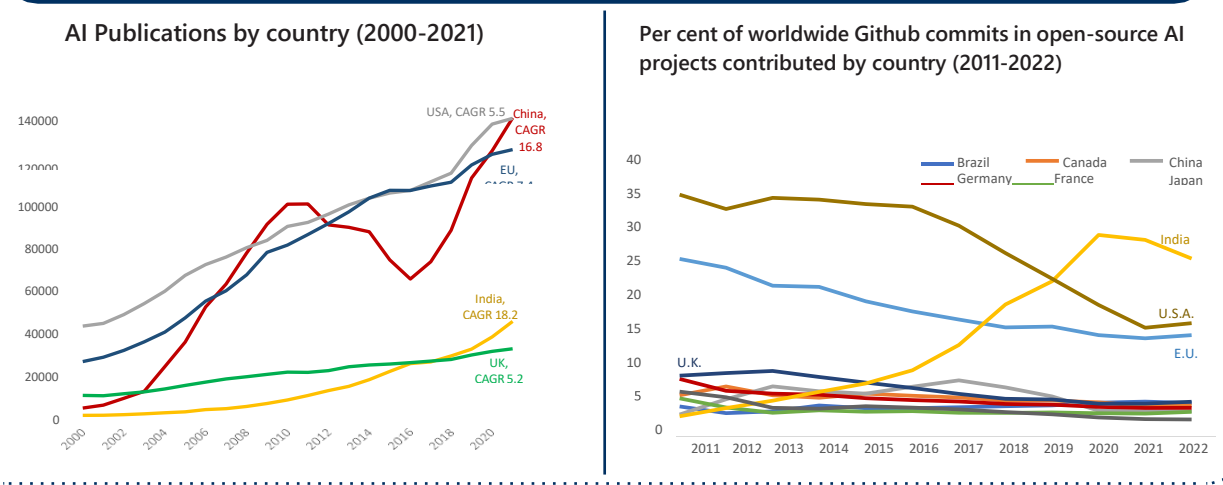
Figure 1: Use cases of artificial intelligence in india.

RECENT STATUS OF ARTIFICIAL INTELLIGENCE IN INDIA

The government's big push towards Artificial Intelligence (AI) has been visible since the launch of the Digital India Initiative in 2015. AI and machine learning are being adopted in the implementation of several government programmes, including the recent announcement of 75 AI-powered defence products. The national programme on AI is being spearheaded by NITI Aayog. With private sector support, the government has organised a series of start-up contests and set up accelerator programmes to nurture the technology and its applications in India. The Ministry of Medium and Small Enterprises also announced a scheme to provide special support to MSMEs for the use of AI tools. The policy momentum has kept up with the announcement of AI for All and the Responsible AI for Social Environment (RAISE) programmes. India has also joined other leading economies such as the US, the UK, the EU, Australia, Canada, France, Germany, Italy, Japan, Mexico, New Zealand, the Republic of Korea and Singapore as a founding member of the Global Partnership on Artificial Intelligence (GPAI), a multi-stakeholder initiative to guide the responsible development and use of AI.

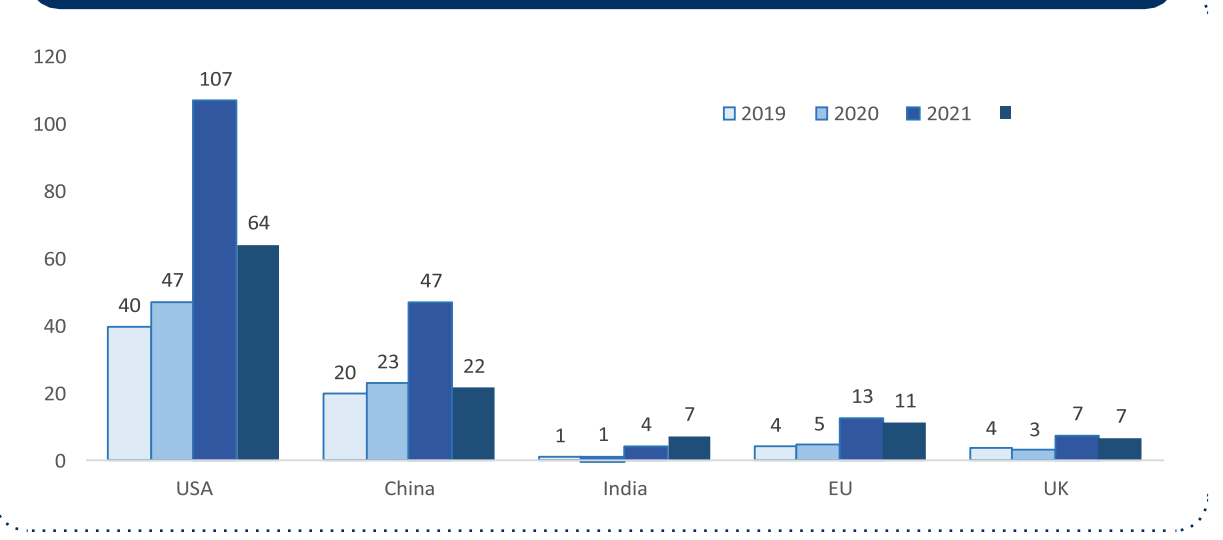
In the latest Indian budget (2023), the government has announced its intention to set up three centres of excellence for AI in an attempt to 'make AI in India and make AI work for India. These centres will strive to create a stronger AI ecosystem by developing cutting-edge AI use cases in key areas such as agriculture, health and sustainable cities. The successful implementation of these policies is visible in India gaining global recognition in AI. AI publications in India have been increasing by 18 per cent in the last two decades from 2000 to 2020; it currently ranks the highest in contribution to open-source AI projects, ahead of developed nations like the US (see Figure 2).

Figure 2: India is a leading contributor to AI publications and projects



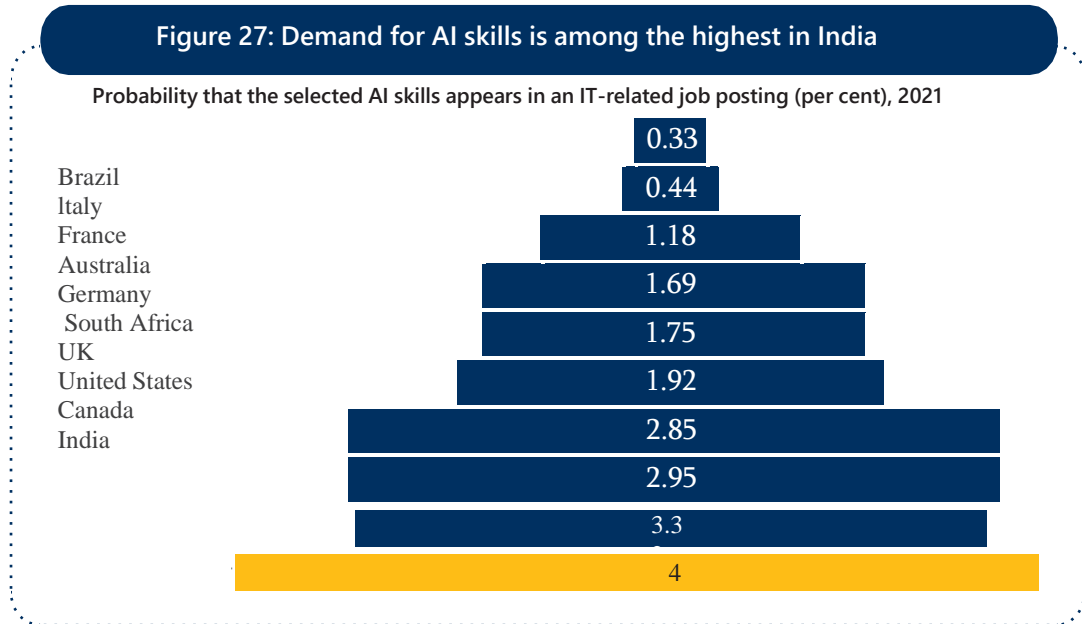
VENTURE CAPITAL INVESTMENT IN AI START-UPS- Venture capital investments in AI start-ups have also steadily increased (see Figure 3). This includes start-ups in the health sector such as those building intelligent screening solutions through AI-powered analysis of medical visuals, providing business intelligence using computer vision and natural language processing (NLP), building digital capabilities of users (skilling) through AI, creating virtual assistance, insightful customer engagement through machine learning and NLP, etc. Some of the promising start-ups providing conversational AI platforms and chatbots in India are Haptik, Gupshup, Uniphore, and Verloop. Similarly, AgNext Technologies deploys AI-based solutions across the global agricultural value chain, Artivatic simplifies risk assessment for insurance products and Beatoven.ai solves the problem of music acquisition and licensing issues for content creators. The start-ups are spread across many industries for a variety of applications.

Figure 3: Venture capital investments in AI in million USD (2018-2022)



Source: OECD.AI Policy Observatory

DEMAND FOR AI SKILL HIGHEST IN INDIA- With investments pouring into AI, there is a rising demand for AI skilled workers. The demand for AI has been consistently rising among employers – an IT job posting in India has a 4.2 per cent chance of seeking candidates with AI skills, the highest among all G20 countries (see Figure 4)



CONCLUSION- Artificial intelligence (AI) is an emerging focus area of policy development in India. In AI India has a unique opportunity to apply the technology to solve some of its biggest problems such as shortage of healthcare facility, low quality of education, financial system etc. The paper has reviewed international as well as national status of adoption of artificial intelligence technology. India is amongst the top 3 largest start up hubs of the world. A national program on AI shall catalyse these innovative minds to co-create solutions and contribute to the building of new India governed by technology. Accenture, in its recent AI research reports provides a framework for evaluating the economic impact of AI for select G20 countries and estimates AI to boost India’s annual growth rate by 1.3 percentage points by 2035

REFERENCES

1. <https://niti.gov.in/national-strategy-artificial-intelligence>
2. <https://meity.gov.in/artificial-intelligence-committees-reports>
3. <https://www.aitf.org.in/>
4. <https://medium.com/politics-ai/an-overview-of-national-ai-strategies-2a70ec6edfd>
5. <https://futureoflife.org/ai-policy-challenges-and-recommendations>
6. AI Policies in India A status Paper final.pdf (tec.gov.in)
7. AI Trend story.pdf (indiascienceandtechnology.gov.in)

8. Artificial intelligence policy in India: a framework for engaging the limits of data-driven decision-making | Philosophical Transactions of the Royal Society A: Mathematical, Physical and Engineering Sciences (royalsocietypublishing.org)
9. India's Artificial Intelligence Revolution | IBEF

प्रथम प्रकारकातिशयोक्त्यलङ्कारे गौणसाध्यवसानालक्षणायाः प्रयोजकहेतुता

डॉ. सीता राम शर्मा

प्रोफेसर (साहित्य) राजकीय धुलेश्वर आचार्य, (पी.जी. संस्कृत महाविद्यालय, मनोहरपुर, जयपुर)

Article Info

Volume 6, Issue 2

Page Number : 71-75

Publication Issue :

March-April-2023

Article History

Accepted : 01 April 2023

Published : 10 April 2023

शोधसारांशः- शक्तिः त्रिधा अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना चेति । अस्मिन् लेखे लक्षणां तद्भेदांश्च विविच्य, लक्षणभेदानां ध्वन्यलङ्कारयोः प्रयोजक- हेतुतायाः सिद्धिश्चेति विषयाः निरूपिताः । मम्मटः शुद्धायाः साध्यवसानाया उदाहरणम् 'आयुरेवेदम्' इति प्रस्तौति। उदाहरणेऽस्मिन् 'इदं' पदेन पुरोवर्तित्वरूपेण घृतादेरुपस्थितिर्न तु घृतत्वादिरूपेण, यतोहि घृतत्वरूपेण अर्थोपस्थितौ 'घृत' पदस्य प्रयोग आवश्यकः, किन्तु 'घृत' पदस्य प्रयोगोऽत्र नास्ति, अतः पुरोवर्तित्वरूपेणैव घृतस्योपस्थितिः । अत्र 'आयुः' पदेन विषयिणा 'घृत' मिति विषयो निर्गीर्णः ।

मुख्यशब्दाः- शक्तिः, अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना, मुख्यार्थः, बाधः, अर्थः।

कथिता लक्षणाया ये भेदाश्श्रीमम्मटेन ते ।

ध्वन्यलङ्कारबीजत्वं यथा यान्ति तथोच्यते ' ॥

अस्माकं साहित्यशास्त्रे शब्दस्य तिस्रशक्तयस्स्वीकृता वर्तन्ते अभिधा लक्षणा व्यञ्जना च। प्रत्येकं शक्तिः कस्यचिद् अर्थविशेषस्य प्रतिपादिका, तत्र का शक्तिः किंविधम् अर्थं प्रतिपादयतीति विषये साहित्यदर्पणकारो विश्वनाथो वक्ति-

वाच्योऽर्थोऽभिधया बोध्यो लक्ष्यो लक्षणया मतः ।

व्यङ्ग्यो व्यञ्जनया ताः स्युस्तिस्त्रः शब्दस्य शक्तयः ॥

एतासु शक्तिषु- शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानात् कोशाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च । वाक्यस्य शेषाद् विवृतेर्वदन्ति सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः ॥ इति नयेन साक्षात् सङ्केतितस्य अर्थस्य बोधिका शक्तिर्नाम अभिधा, मुख्यार्थबाधादिहेतु-त्रयसापेक्षोपस्थितिकस्य लक्ष्यार्थस्य बोधिका शक्तिर्नाम लक्षणा, मुख्यार्थबाधादिहेतुनिरपेक्षस्य वाच्यार्थबोधात् परं व्यजमानस्य अर्थस्य बोधिका शक्तिर्नाम व्यञ्जना च । प्रस्तूयमानेन शोधपत्रेण लक्षणां तद्भेदांश्च विविच्य लक्षणाभेदानां ध्वन्यलङ्कारयोः प्रयोजकहेतुतायाः सिद्धिश्चेति विषया निरूपयिष्यन्ते । स्वप्रतिपादयिषितविषयावबोधाय पूर्वं लक्षणैव निरूपणीयेति धिया लक्षणोत्थान- विषये वाग्देवतावतारस्य मम्मटस्य अभिमतं विव्रीयते-

मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।

अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपिता क्रिया' ॥

अर्थाद् मुख्यार्थबाधे मुख्यार्थेन सामीप्यादिसम्बन्धयोगे रूढिवशात् प्रयोजनवशाद् वा यया शब्दशक्त्या अन्यो मुख्यार्थभिन्नोऽर्थो लक्ष्यते सा शक्तिर्लक्षणा ।

लक्षणाभेदाः यथा- मम्मटः सर्वप्रथमं लक्षणाया उपादानलक्षणालक्षणलक्षणाख्यं द्विभेदं करोति,

स्वसिद्धये पराक्षेपः परार्थं स्वसमर्पणम् ।

उपादानं लक्षणं चेत्युक्ता शुद्धैव सा द्विधा ॥

अर्थाद् यत्र मुख्यार्थः स्वस्य अर्थस्य सिद्धये परस्य अर्थस्य आक्षेपं करोति तत्र उपादानलक्षणा, यत्र च मुख्यार्थः परस्य अर्थस्य सिद्धये स्वस्य मुख्यार्थस्यैव समर्पणं त्यागं वा करोति तत्र लक्षणलक्षणा । लक्षणाया इमौ उपादानलक्षणालक्षणलक्षणाख्यौ भेदौ केवलं शुद्धाया लक्षणाया एव भवतः यतोहि एतयोर्भेदयोर्लक्षणा सादृश्येतर- कार्यकारणसम्बन्धादेव प्रवर्तत इति विशेषः । आद्यस्य भेदस्योदाहरणं मम्मटः 'कुन्ताः प्रविशन्ति' इति

प्रस्तौति । अत्र 'कुन्ताः' अचेतनाः अतस्तेषु प्रवेशक्रिया न सम्भवति, येन मुख्यार्थ - बाधः, जाते च मुख्यार्थबाधे लक्षणोत्थापकद्वितीयहेतुना स्वसंयोगसम्बन्धेन 'कुन्ताः' इति पदं स्वस्य अर्थस्य सिद्धये परस्य अर्थस्य 'कुन्तधारिणः पुरुषाः' इत्याकारस्य कुन्तगत-तीक्ष्णतारूपप्रयोजनप्रतिपादनाय उपादानं ग्रहणं वा करोति तस्मादुपादानलक्षणा । मम्मटभट्टानुसारं लक्षणाया द्वितीयस्य 'लक्षणलक्षणा' इत्याख्यस्य भेदस्योदाहरणं 'गङ्गायां घोषः' इत्यस्ति । अत्र 'गङ्गा' पदस्य मुख्यार्थी जलप्रवाहो, यस्मिन् घोषस्य अधिकरणत्वं बाधितमेव घोषस्य स्थितिर्जलप्रवाहे भवितुं नार्हति तस्माल्लक्षणाया द्वितीयहेतोः सामीप्यसम्बन्धात् तटरूपस्य अर्थस्य उपस्थितिर्जायते येन वाक्याकारो 'गङ्गायास्तटे घोषः' इति सम्पद्यते, किन्तु वक्त्रा साक्षाद् 'गङ्गायास्तटे घोषः' इत्याकारके वाक्ये प्रयोक्तव्ये 'गङ्गायां घोषः' इति वाक्यं कथं प्रयुक्तम् ? इति चेत्, अत्र लक्षणायाः तृतीयेन केनापि हेतुना भाव्यमेव । अत्र 'गङ्गा' पदस्य अर्थः 'तटम्' भवतीति विषये क्वचिदपि न रूढिः प्रसिद्धिर्वा अर्थाद् गङ्गा पदस्य अर्थः तटं

लक्षणाभेदानां ध्वन्यलङ्कारयोः प्रयोजकहेतुतासिद्धिः - भवतु इत्यस्मिन् कापि रूढिर्नास्ति, अतः प्रयोजनरूपेण हेतुना अवश्यमेवात्र भाव्यम् । वक्तुः प्रयोजनमस्ति तादृशे 'गङ्गायां घोषः' इति वाक्यप्रयोगे लक्षणया उपस्थिते 'तटे' 'शैत्यपावनत्वरूपधर्म' - प्रतीतिः । अत्र गङ्गापदं परस्य तटरूपस्य अर्थस्य सिद्धये स्वस्य जलप्रवाहात्मकस्य अर्थस्य समर्पणं त्यागं वा करोति तस्माल्लक्षणलक्षणा । एतयोरुपर्युक्तयोर्भेदयोः प्रतिपादनानन्तरं मम्मटो लक्षणां गौणी सारोपा गौणी साध्यवसानेति रूपेण तथा च शुद्धा सारोपा शुद्धा साध्यवसानेति रूपेण चतुर्विधां विभजते, तत्र गौणीं सारोपां निरूपयन्नाह -

सारोपान्या त यत्रोक्तौ विषयी विषयस्तथा' ।

अर्थाद् यत्र विषयी उपमानं विषय उपमेयं चोभावपि साक्षाच्छब्दत उपात्तौ भवतः तत्र गौणी सारोपा लक्षणा । उदाहरणं 'गौर्वाहीकः', अत्र गोगता जाड्यमान्द्यादिगुणा वाहीके आरोप्यन्ते, तस्माद् गुणेभ्य आगतत्वाद् गौणी सारोपा लक्षणा ।

विषयन्तः कृतेऽन्यस्मिन् सा स्यात् साध्यवसानिका ।

यत्र विषयिणा उपमानेन विषय उपमेयं निगीर्यते क्वलीक्रियते वा, तत्र साध्यवसाना लक्षणा । मम्मटो 'गौरयम्' इति उदाहरणं प्रस्तौति, उदाहरणेऽस्मिन् विषयिणा 'गौः' इति उपमानेन 'वाहीक' रूपो विषयो निगीर्णः, तस्मात् साध्यवसाना लक्षणा ।

लक्षणाया इमौ एव सारोपासाध्यवसानानामकौ प्रकारौ शुद्धाया लक्षणाया अपि भवतः किन्तु एतयोर्लक्षणाप्रकारयोः सादृश्येतरकार्यकारणादिसम्बन्धो भवति, सादृश्य- सम्बन्धेन गौणी सारोपा गौणी साध्यवसाना च लक्षणाप्रकारौ सम्पद्येते, सादृश्येतरसम्बन्धेन शुद्धा लक्षणा भवति । तत्र शुद्धायाः सारोपाया लक्षणाया उदाहरणम् 'आयुर्धृतम्' इत्यस्ति । अत्र 'आयुः' विषयि 'घृतं' च विषयः । द्वावपि विषयिविषयौ साक्षाच्छब्दत उपात्तौ, 'आयुर्धृतम्' इति कथनात् 'आयुः' पदस्यार्थो दीर्घकालजीवनम् घृतपदस्यार्थश्च कश्चिद् द्रव्यविशेषः, द्वयोर्नामार्थयोः अभेदः इति नियमः, किन्तु लोकेऽत्यन्तं भिन्नदशां प्राप्तयोर्द्वयोर्नामार्थयोः अभेदोऽयं कथं सङ्गच्छेत् ?, अर्थाद् आयुरेव घृतं कथं भवितुमर्हति? इति कारणान्मुख्यार्थबाधः तदनु लक्षणया द्वयोः कार्यकारणभाव- सम्बन्धेनाऽथवा जन्यजनकभावसम्बन्धेन 'आयुः' पदेन 'आयुष्कारणं' लक्ष्यते । अत्र केचन 'आयुः' पदेन 'आयुष्कारणं घृतं' लक्ष्यते इति मन्वते तन्न यतोहि 'घृतम्' इति पदं तु साक्षादुक्तमेवास्ति अतो वाक्ये उक्तं घृतपदं स्वम् अर्थं तु उपस्थापयत्येव, अत 'आयुः' पदेन 'आयुष्कारण' मेव लक्ष्यते, यथा 'मुखं चन्द्रः' इत्यस्य 'चन्द्रसदृशमात्रे' लक्षणा न तु 'चन्द्रसदृशे मुखे' इत्याकारकाधिकेऽर्थे, मुखस्य स्वपदेन उक्तत्वात् क्रियते, तेन चन्द्रसदृशे अर्थे विहिते सति चन्द्राभिन्नं मुख मिति शाब्दबोधः सम्पद्यते तथैवात्रापि आयुष्कारणमेव लक्ष्यार्थः तेन च 'आयुरभिन्नं घृत' मिति बोधः सम्पद्यत इति ज्ञेयम् । व्यङ्ग्यरूपं प्रयोजनं चात्र 'घृते सहकारिव्युदासेन स्वतन्त्ररूपेण आयुर्जनकता' वर्तते, अथवा 'घृतम् आयुर्जनने स्वातिरिक्तं सहायानन्तरं विनाऽपि आयुर्जनने समर्थम्' इत्यस्ति । अत्र 'आयुर्धृतम्' इति स्थाने 'घृतमायुः' इति पदं प्रयोक्तुं शक्यमासीत्, किन्तु अत्र घृतरूपात् कारणच्छ्रीघ्रतया आयुरूपकार्योत्पत्तिं दर्शयितुं कार्यस्य पूर्वप्रयोगः कारणस्य च पश्चादित्यवधेयम् ।

अग्रे च मम्मटः शुद्धायाः साध्यवसानाया उदाहरणम् 'आयुरेवेदम्' इति प्रस्तौति । उदाहरणेऽस्मिन् 'इदं' पदेन पुरोवर्तित्वरूपेण घृतादेरुपस्थितिर्न तु घृतत्वादिरूपेण, यतोहि घृतत्वरूपेण अर्थोपस्थितौ 'घृत' पदस्य प्रयोग आवश्यकः, किन्तु 'घृत' पदस्य प्रयोगोऽत्र नास्ति, अतः पुरोवर्तित्वरूपेणैव घृतस्योपस्थितिः । अत्र 'आयुः' पदेन विषयिणा 'घृत' मिति विषयो निगीर्णः । शुद्धसारोपालक्षणावद् 'आयुः' पदेन आयुष्कारणं 'इदम्' इति पदेन लभ्ये

घृते लक्ष्यते । व्यङ्ग्यरूपं प्रयोजनं चात्र 'घृतस्य आयुर्जनने स्वातिरिक्तं सहायानन्तरं विनाऽपि आयुर्जनने सामर्थ्यम्' इत्यस्ति । इत्थं मम्मटभट्टानुसारं लक्षणायाः षट् भेदाः सम्पद्यन्ते-

01 उपादानलक्षणा	कुन्ताः प्रविशन्ति
02 लक्षणलक्षणा	गङ्गायां घोषः
03 गौणी सारोपा	गौर्वाहीकः
04 गौणी साध्यवसाना	गौरयम्
05 शुद्धा सारोपा	आयुर्धृतम्
06 शुद्धा साध्यवसाना	आयुरेवेदम्

अग्रे अस्या लक्षणाया भेदानामुपयोगो ध्वन्यलङ्कारोत्थानेऽपि भवति अर्थाद् इमा षट्प्रकारिका लक्षणाः स्वोपस्थित्या ध्वनिविशेषस्योत्थाने अलङ्कारविशेषस्योत्थाने च हेतवो भवन्तीत्ययं रुचिरो विषय इदानीं प्रतिपाद्यते । लक्षणाया उपादानलक्षणा- लक्षणलक्षणाख्यौ भेदौ अविवक्षितवाच्यध्वनेः अर्थाल्लक्षणामूलध्वनेः प्रतिपादितयोर्द्वयोः भेदयोरर्थान्तरसङ्क्रमितवाच्यध्वनिरित्यस्य अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनिरित्यस्य च हेतू भवतः ।

लक्षणाभेदानां ध्वन्यलङ्कारयोः प्रयोजकहेतुतासिद्धिः

अर्थान्तरसङ्क्रमितवाच्यध्वनौ उपादानलक्षणायाः प्रयोजकहेतुता

उपादानलक्षणायां वाक्यघटितं पदं स्वस्य अर्थस्य सिद्धये अपरम् अर्थम् उपादत्ते इति नियमः अनेनैव पूर्वं प्रतिपादितेन नियमेन अर्थान्तरसङ्क्रमितवाच्यध्वनेरपि सत्ता स्थिरा भवति, यथा-

त्वामस्मि वच्मि विदुषां समवायोऽत्र तिष्ठति ।

आत्मीयां मतिमास्थाय स्थितिमत्र विधेहि तत् ' ॥

अत्र सम्मुखस्थं संबोध्यं प्रति उक्तिः, यः सम्मुखस्थो भवति तस्य कृते 'त्वाम्' इति पदस्य प्रयोगो नोपयुज्यते, सम्मुखस्थाय संबोध्याय 'त्वां' पदस्य प्रयोगे अनुपयुक्तारूपमुख्यार्थबाधः, तदनु लक्षणाया द्वितीयहेतुना 'त्वाम्' इति पदं सामान्यविशेषसम्बन्धबलाद् उपदेश्यं (लक्ष्यार्थं) लक्षयति । 'वच्मि' इति पदं (वच्मि तथा उपदिशामि इत्यनयोः क्रिययोः) अर्थदृष्ट्या किञ्चिन्मात्रं सारूप्यसम्बन्धाद् 'उपदिशामि' इति अर्थान्तरं लक्षयति । प्रयोजनं चात्र उपदेश्यस्य तस्य हितसाधनत्वमस्ति । अत्र 'त्वां' 'वच्मि' इति पदं स्वस्य अर्थस्य सिद्धये 'उपदेश्यम्' 'उपदिशामि' इत्यर्थान्तरे सङ्क्रमेते। अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनौ लक्षणलक्षणायाः प्रयोजकहेतुता - लक्षणलक्षणा नामको भेदो ध्वनेः अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनिरिति भेदस्य उत्थाने प्रयोजकं बीजं वा भवति, इयं स्थितिर्मम्मटोपन्यस्तोदाहरणेन अवगन्तुं शक्यते, यथा-

उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते सुजनता प्रथिता भवता परम् ।

विदधदीदृशमेव सदा सखे! सुखितमास्व ततः शरदां शतम् ॥

प्रस्तुते पद्ये स्वशत्रुं प्रति कस्यचिदुक्तिः । किन्तु शत्रुं प्रति तादृशं कथनं न सङ्गच्छते इति मुख्यार्थबाधः, वैपरीत्यसम्बन्धेन 'उपकृतं' 'सुजनता' 'सुखितम्' 'शरदां शतम्' 'आस्व' इत्यादीनि पदानि स्वमर्थं समर्थं तिरस्कृत्य वा क्रमशः 'अपकृतं' 'दुर्जनता' 'दुःखितम्' 'शीघ्रं' 'मित्रयस्व' इति रूपम् अर्थं प्रकटयन्तीति अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनिः । अस्मिन् अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनौ बीजरूपेण लक्षणलक्षणैव वर्तते, यतोहि यथा 'गङ्गायां घोषः' इत्युदाहरणे गङ्गापदं घोषस्य अधिकरणत्वसिद्धये स्वार्थस्य जलप्रवाहात्मकस्य समर्पणं विधाय तटरूपमर्थं लक्षयति तथैव शत्रुं प्रति वक्तुरुक्तिसिद्धये 'उपकृतम्' इत्यादीनि पदानि स्वार्थं समर्थं 'अपकृतम्' इत्यादीन् अर्थान् लक्षयन्ति ।

रूपकालङ्कारे गौण्याः सारोपाया लक्षणायाः प्रयोजकहेतुता

गौण्यां लक्षणायाम् उपमानोपमेययोः अभेदारोपः क्रियते, अयमेव अभेदात्मको नियमो रूपकालङ्कारेऽपि उपयुज्यते यथा - 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः " एतल्लक्षणानुसारमुदाहरणं द्रष्टुं शक्यते-

**ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला बिभ्रती तारकास्थी-
न्यन्तर्धानव्यसनरसिका रात्रिकापालिकीयम् ।
द्वीपाद् द्वीपं भ्रमति दधती चन्द्रमुद्राकपाले
न्यस्तं सिद्धाञ्जनपरिमलं लाञ्छनस्य छलेन ॥**

अत्र 'रात्र्यां' 'कापालिकी' आरोपिता वर्तते, 'ज्योत्स्नायां' 'भस्म' आरोपितं, 'तारकासु अस्थीनि' आरोपितानि, 'चन्द्रे' 'मुद्राकपालं' चारोपितं वर्तते, अतो रूपकं सम्पद्यते, अत्र रात्रिकापालिकी इत्यस्य कापालिक्यभिन्ना रात्रिः, ज्योत्स्नाभस्म इत्यस्य भस्माभिन्ना ज्योत्स्ना, तारकास्थीनि इत्यस्य अस्थीन्यभिन्ना तारकाः, चन्द्रमुद्राकपाले इत्यस्य मुद्राकपालाभिन्नाः चन्द्रः इतिवद् रूपकघटितबोधो जायते । एतद्रूपकचतुष्टयं वाक्ये परस्परं सम्मित्य मुख्यार्थस्य (रसरूपस्य) शोभां जनयतीति कारणाद् रूपकालङ्कारः।

प्रथमप्रकारकातिशयोक्तयलङ्कारे गौणसाध्यवसानालक्षणायाः प्रयोजकहेतुता - गौण्यां साध्यवसानालक्षणायां विषयिणा उपमानेन सादृश्यसम्बन्धाद् विषयस्य उपमेयस्य निगरणं क्रियते, अयमेव नियमः प्रथमातिशयोक्तयलङ्कारेऽपि उपयुज्यते, अतिशयोक्तेर्लक्षणं तावद् - 'निगीर्याध्यवसानं तु प्रकृतस्य परेण यत् वर्तते । परेण उपमानेन निगीर्य क्वलीकृत्य पृथक् अनिर्दिश्य यत् प्रकृतस्य अर्थाद् उपमेयस्य अध्यवसानम् आहार्यभेदनिश्चयः सा प्रथमप्रकारिका अतिशयोक्तिरिति फलितार्थः । उदाहरणं यथा-

कमलमनम्भसि कमले च कुवलये तानि च कनकलतिकायाम् । सा च सुकुमारसुभगेत्युत्पातपरम्परा केयम् ॥

अत्र प्रेयसीं दृष्ट्वा तत्सखीं प्रति नायकस्योक्तिः । अत्र 'कमलम्' (इति उपमानपदेन निगीर्णं नायिकामुखम्) अनम्भसि जलशून्ये अनुदके स्थाने इत्यर्थः, कमले (इति उपमानेन निगीर्णे मुखे) कुवलये (इति द्विवचनरूपेण उपमानेन निगीर्णे नेत्रे, रक्तादिगुणसाम्यात् कुवलयनेत्रोरुपमानोपमेयभावः कल्प्यते), तानि कमलं कुवलयद्वयं चेति त्रीण्यपि कनकलतिकायां कान्ताशरीररूपायां सुवर्णलतायाम् (कनकलतिका इत्युपमानेन कान्तातनुः निगीर्णम्, अत्रापि कनकलतिका कान्तातनुः इत्यनयोः सौन्दर्यातिशयादुपमानोपमेयभावः कल्प्यते) सा कनकलतिका सुकुमारा च सुभगाऽपि इत्येवंविधा उत्पातपरम्परा आश्चर्यमाला केयं कीदृशीयमिति भावः । 'अत्र कमल-कुवलय-कनकलतिका-पदैः विषयिभिः उपमानैर्वा मुखनेत्रद्वय-शरीराणां कमलत्वादिना अध्यवसानान्निगारणाद् वा अतिशयोक्तिः ।

चतुर्थातिशयोक्तयलङ्कारे शुद्धसारोपलक्षणायाः प्रयोजकहेतुता- अतिशयोक्तयलङ्कारस्य 'कार्यकारणयोर्यश्च पौर्वापर्यविपर्ययः" इतिरूपस्य चतुर्थभेदस्य बीजं शुद्धा सारोपा लक्षणा वर्तते, यतोहि 'आयुर्धृतम्' इति लक्षणानियमोऽस्मिन् अलङ्कारे पाल्यते प्रयुज्यते वा । यथा कारणस्य शीघ्रकारितां वक्तुं कार्यस्य पूर्वमुक्तिः 'आयुर्धृतम्' इति उदाहरणे दृश्यते तद्वदत्रापि । 'आयुः ' कार्यं 'घृतं' च कारणम्, किन्तु घृतस्य आयुर्जनेन शीघ्रकारित्वं सूचयितुम् आयुरूपस्य कार्यस्य प्रथमत उक्तिः, अर्थादत्र कारणकार्ययोः यथा विपर्ययः कृतो वर्तते तथैव चतुर्थातिशयोक्तय-लङ्कारेऽपि द्रष्टुं शक्यते-

हृदयमधिष्ठितमादौ मालत्याः कुसुमचापबाणेन ।

चरमं रमणीवल्लभ ! लोचनविषयं त्वया भजता ॥

पद्येऽस्मिन् मालत्याः हृदये पूर्वं रतिः उदिता, पश्चाच्च भवता लोचनविषयं भजता (मालत्याः) हृदयम् अधिष्ठितम् । अत्र मालत्या : हृदये रतिरूपकार्यस्य पूर्वमेवोदयो दर्शितः, पश्चाच्च रतिरूपकार्यस्य कारणं रमणीवल्लभस्य हृदयाधिष्ठानं दर्शितमिति सारः। वस्तुतोऽत्र रमणीवल्लभेन माधवेन यदा मालत्याः हृदयम् अधिष्ठितं तदा तस्या हृदये कामोदयो जात इति आशयः कारणकार्यभावेन प्रकाशनीय आसीत्, एतादृशाशयप्रकाशने रमणीवल्लभस्य माधवस्य मालत्या हृदयाधिष्ठानम् इतिरूपं कारणं, मालत्या हृदये माधवं प्रति कामाधिष्ठानं च कार्यम् । किन्तु एतयोः कारणकार्ययोरत्र विपर्ययो जातः, अर्थाद् मालत्यां कामोदयोक्तिः प्रथममेव कृता पश्चाच्च माधवस्य मालत्या : हृदयाधिष्ठानम् इत्युक्तिः कृता, अतः कार्यकारणयोः क्रमविपर्ययात् चतुर्थातिशयोक्तिरत्र ।

शुद्धसाध्यवसानालक्षणायां प्रयोजनरूपो व्यङ्ग्यो वस्तुध्वनिरूपः - शुद्धा साध्यवसाना या लक्षणा वर्तते तस्यां प्रयोजनरूपो यो व्यङ्ग्यः, स वस्तुतो वस्तुध्वनिरूपोऽस्ति यतोहि 'आयुरेवेदं' किं वा 'आयुः पीयते' इत्युदाहरणयोः 'आयुः' पदेन आयुष्कारणं लक्ष्यते, इयं हि आयुष्कारणता 'इदम्' इति पदेन पुरोवर्तित्वरूपेण उपस्थिते घृते विद्यते । ' घृतस्य आयुर्जनेन स्वातिरिक्तं सहायान्तरं विनाऽपि आयुर्जनेन सामर्थ्यम्' इत्याकारकं

प्रयोजनमत्र व्यङ्ग्यम् । शुद्धसाध्यवसाना लक्षणाऽपि कस्यचिदलङ्कारस्य प्रयोजिका भवितुमर्हति यस्मिन् अलङ्कारे शुद्धसाध्य-
वसानालक्षणायाः स्थितिः घटेत, किन्तु शुद्धसाध्यवसानालक्षणाया आधारेण सम्पद्यमाने अलङ्कारे व्यक्तस्य प्रयोजनरूपस्य व्यङ्ग्यस्य एव
चमत्कारोऽलङ्कारचमत्कारापेक्षया अनुभूयते । अस्यां हि लक्षणायां व्यङ्ग्यो वस्तुरूपो भवति, किन्तु केवला शुद्धसाध्यवसाना लक्षणैव वस्तुध्वनेः
प्रयोजिका बीजं वा भवतीति कथयितुं न शक्यते यतोहि वस्तुध्वनये केवला शुद्ध साध्यवसाना लक्षणैव हेतुर्न भवति, प्रत्युत लक्षणायाः सर्वेषु भेदेषु
प्रयोजनरूपो व्यङ्ग्यो वस्तुध्वनिरूप एव भवति, तथा च यत्र लक्षणाप्रसङ्गो नास्ति, तत्रापि अर्थादभिधामूल-ध्वनेः
सङ्लक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यभेदस्थलेऽपि वस्तुध्वनेः स्थितिर्भवतीति बोध्यम् ।

सन्दर्भग्रन्थसूची-

1. लेखकेन विरचितम्
2. सा.द.द्वि. परि. का. सं. 03
3. काव्यप्रकाशस्य विश्वेश्वरटीकायाः 42 पृष्ठे उद्धृतम्
4. का. प्र.द्वि.उ. का. सं. 09
5. का. प्र. द्वि. उल्लासः, का. सं. 10
6. काव्यप्रकाशः, द्वि.उ. एकादश्याः कारिकायाः पूर्वाद्धभागः
7. काव्यप्रकाशः, द्वि.उ. एकादश्याः कारिकायाः अपराद्धभागः
8. काव्यप्रकाशः, च. उ. पद्यसंख्या 23
9. काव्यप्रकाशः, च. उ. पद्यसंख्या 24
10. काव्यप्रकाशः, द. उ. सूत्रसंख्या 138
11. काव्यप्रकाशः, द. उ. पद्यसंख्या 422
12. काव्यप्रकाशः, द. उ. सूत्रसंख्या 100
13. काव्यप्रकाशः, द. उ. पद्यसंख्या 450
14. काव्यप्रकाशः, द. उ. सूत्रसंख्या 100
15. काव्यप्रकाशः, द. उ. पद्यसंख्या 453
16. काव्यप्रकाशः, वामनी टीका, परिमलपब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पुनर्मुद्रित- संस्करणम् 2008
17. काव्यप्रकाशः, विश्वेश्वरटीका, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करणम् 1998
18. साहित्यदर्पणः, वटुतोषिणी टीका, अक्षयवटप्रकाशनम्, संस्करणम् 2004

सहयोगात्मकाधिगमः

डॉ. आरती शर्मा

सहायकाचार्यः, शिक्षापीठः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय, नवदेहली

Article Info

Volume 6, Issue 2

Page Number : 76-79

Publication Issue :

March-April-2023

Article History

Accepted : 01 April 2023

Published : 10 April 2023

शोधसारः (Abstract)- मानवः संसारेऽस्मिन् परस्परसहयोगेनैव व्यवहरति। मानवसमाजस्यास्तित्वमेव तस्य सहयोगिनः एव संभवं कृतमस्ति। अनेन न केवलम् एकः जनः अपितु सम्पूर्णसमूहः लाभान्वितः भवति। सहयोगे सर्वे छात्राः एकं समानं लक्ष्यं प्राप्यर्थं मिलित्वा प्रयासं कुर्वन्ति। सहयोगः एकस्य व्यक्तित्वस्य विशेषकः भवति। लक्ष्यसंरचनायां छात्राः सहयोग विशेषकं स्वीयानुक्रियायां प्रदर्शयन्ति। एवं प्रकारेण सर्वे छात्राः सहयोगात्मकाधिगमेन स्वीय ज्ञानमभिवर्धयन्ति। वस्तुतः सहयोगात्मकाधिगमः एकप्रकारकम् अधिगमोपागमः अस्ति, यस्मिन् लघु समूहेषु छात्राः परस्परं अधिगमे साहाय्यं कुर्वन्ति। सामान्यरूपेण सहयोगः अधिगमस्य कृते व्यापकसमूहसंरचना विद्यते। व्यापक समूह संरचनायां लक्ष्यस्य प्रकृतिः, लक्ष्यप्राप्त्यर्थं योजितानां विभिन्नकार्याणां महत्त्वं, कार्ये सहभागिताप्रदातृणां सदस्यानां मध्ये अन्तःक्रिया, भाषा एवं प्रकृतिः सदस्यानाञ्च मध्ये अन्तःनिर्भरता सम्मिलिताः भवन्ति। तर्हि सहयोगात्मकाधिगमस्य उद्भवः कदा सञ्जातम्, अस्य सैद्धान्तिक पृष्ठभूमिः का वर्तते, अस्य घटकानि कानि, विधयः के इत्यादि बिन्दूनामुपरि विचारः शोधलेखेऽस्मिन् करिष्यते।

मुख्यशब्दाः- सहयोगात्मकाधिगमः, मानवः, छात्राः, सहयोगिनः।

विषय प्रवेशः - सहयोगात्मकाधिगमः अधिगमेन सम्बन्धितमस्ति, यत्र छात्राः स्वयं भागं ग्रहयन्ति एवञ्च लक्ष्यप्राप्त्यर्थं प्रयतन्ते। अस्मिन् छात्राः परस्परं मिलित्वा कार्यं कुर्वन्ति अधिगच्छन्ति च।

“Cooperative learning is an educational approach which aims to organize classroom activities into academic and social learning experiences. There is much more to Cooperative learning than merely arranging students into groups and it has been described as structuring positive interdependence.”

जॉनसन महोदयानुसारेण - "सहयोगात्मकाधिगमः लघुसमूहेषु प्रयुज्यमाना अनुदेशनात्मिका तकनीकी विद्यते, यस्मिन् छात्राः परस्परं कार्यं कुर्वन्तः अधिगच्छन्ति।

सहयोगात्मकाधिगमे लक्ष्येन सह साम्यताकारणेन समूहस्य सर्वे सदस्याः परस्परं सहयोगेन योजिताः तिष्ठन्ति।

सहयोगात्मकाधिगमस्योद्भवः - सम्पूर्ण विश्वे शिक्षायाः क्षेत्रे निरन्तरं नवपरिवर्तनानां केन्द्र बिन्दुः कक्षा-कक्ष प्रक्रिया एव भवति। वर्तमान शैक्षिक पद्धत्या 'शिक्षा सर्वेषाम्' इति नियोजनं क्रियते। छात्राः परस्परं प्रतियोगी भावनया स्वीयां स्थितिम् उच्चतरं कर्तुं प्रयतन्ते परन्तु अनया भावनया तेषु मैत्री भावनायाः अभावः दरीदृश्यते, अतः सहयोगात्मकाधिगमस्य उद्भवः सञ्जातम्। सहैव सम्पूर्ण कक्षाऽनुदेशने प्रत्येकस्य छात्रस्योपरि व्यक्तिशः ध्यानं दातुं न शक्यते। सम्पूर्ण कक्षाऽधिगमे

व्यक्तिगतविभिन्नता: दृष्टमशक्याः भवन्ति। व्यक्तिगतानुदेशनं यथा - अभिक्रमिदानुदेशन, साधिकाराधिगमः अध्यापकस्य कार्यभारे वृद्धिं कुर्वन्ति। अधिककाल-संसाधन एवं शिक्षकाणामभावे व्यक्तिगताऽनुदेशनं कक्ष्यायां न सम्भवति। परिणामस्वरूपं परम्परागत सम्पूर्ण कक्षाऽनुदेशने परिवर्तनमागतम्। तत्रापि ज्ञातं यत् प्रतियोगितात्मकाधिगमेन छात्रेषु नकारात्मकान्तनिर्भरता जन्मं प्राप्नोति। स्लैविनमहोदयेन शोधेभ्यः ज्ञातं यत् प्रतियोगिता छात्रेभ्यः परस्परं साहाय्यार्थं हतोत्साहितं करोति। प्रतियोगिता समाजीकरणसिद्धान्तस्य विपरीतमस्ति। एवं प्रकारेण समूहानुदेशनेन लघुसमूहानुदेशनं एवं प्रतियोगितया च सहयोगं प्रति परिवर्तनस्वीकरणतर्कं बलं प्राप्तम् अर्थात् सहयोगात्मकाधिगमस्य उद्भवः जातम्। अधिगमस्य कोरद्वयं व्यक्तिगताधिगमः समूहाधिगमश्च अतिवादी विचारद्वयं वर्तते। अतिवादं परित्यज्य मध्यम मार्गः समूहाधिगमः विद्यते, यत् सहयोगात्मकाधिगमं प्रति नयति।

सहयोगात्मकाधिगमस्य सैद्धान्तिक पृष्ठभूमिः- सहयोगात्मकाधिगमं समर्थनं बलञ्च विभिन्न सैद्धान्तिकपृष्ठभूमिभ्यः प्राप्तम्। अस्य पृष्ठे मुख्य सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्याणि यथा विकासात्मक- समंजन-सामाजिक-अभिप्रेरणात्मक- अधिगम सिद्धान्तः इत्यादि सन्ति।

विकासात्मकपरिप्रेक्ष्यम् - प्याजे एवं वाइगोत्सकी महोदयानां विचाराणामाधारेण विकासात्मक सिद्धान्तस्य विकासः अभवत्। वाइगोत्सकी महोदयेन समीपताविकासस्य क्षेत्रस्य (Zone of Proximate Development) अवधारणां जन्मऽददत्। अनयाऽवधारणया तात्पर्यमस्ति - वास्तविकं विकासस्य स्तर एवं स्वयं द्वारा समस्यायाः समाधानं कृत्वा सम्भाव्य विकासस्य स्तरस्य मध्ये अन्तरालेनास्ति। तथापि अधिगमकर्ता कस्यापि वयस्कव्यक्तेः निर्देशने एव कार्यं करोति। तस्य समीपताविकासस्य क्षेत्रम् एकेन मानवेन बिना कस्यापि साहाय्येन स्वयं एवं ज्ञानयुक्त व्यक्तेः सम्पर्कं स्थित्वा कार्यस्य मध्ये भेदाऽभिज्ञानमस्ति।

“What a child can do today in Co-operation tomorrow he will be able to do on his own.”

एकः छात्रः यः एकं कार्यमद्य अन्यव्यक्तीनां सहयोगेन कर्तुं शक्नोति, स्वः सः तद् कार्यं स्वयं कर्तुं पारयिष्यति।

सहयोगात्मक गतिविधयः बालकेषु अभिवृद्धिं जन्म ददति। समानवयसः बालकाः परस्परं विकास क्षेत्रे क्रियाशीलाः भवन्ति। अस्मिन् आदौ प्रकार्याणि समूहरूपेण क्रियन्ते, ततः तानि बालकानां मध्ये सम्बन्धानां रूपं धारयन्ति। तत्पश्चात् ते व्यक्तेः मानसिक प्रकार्याणि भवन्ति।

सामाजिकसमञ्जनपरिप्रेक्ष्यम् - अस्याः विचारधारायाः समर्थकानां मतमस्ति यत् सहयोगात्मकाधिगमविधिषु समूहस्य समञ्जनकारणेनैव उपलब्धौ उन्नयनं भवति। समूहस्य सर्वे सदस्याः परस्परं सर्वेषां समूहसदस्यानां ध्यानं यच्छन्ति, साफल्यञ्च वाञ्छन्ति। सहयोगात्मकाधिगमस्य सन्नद्धता हेतु दलनिर्माणक्रियाणामुपरि बलं देयम्। एताः क्रियाः समूहस्य सदस्येषु ऐक्यभावनां विकासयन्ति। अन्ततोगत्वा अन्यव्यक्तीनां रक्षणमपि ज्ञास्यन्ति। यदा बालाः परस्परं ध्यानं यच्छन्ति, तर्हि न केवलं विभिन्नप्रत्ययनामाधिगमे साहाय्यं कुर्वन्ति अपितु परस्परमधिगन्तुमुपलब्ध्यर्थञ्च प्रेरयन्ति। सहयोगात्मकाधिगमेन समूहसदस्येषु अन्तर्निर्भरता विकसिता भवति।

अभिप्रेरणात्मकपरिप्रेक्ष्यम् -

अभिप्रेरणात्मक परिप्रेक्ष्ये मुख्यरूपेण समूहसंरचना एवं पुरस्कारोपरि क्रियते, यस्मिन् समूहः कार्यं करोति। समूहसंरचना मुख्यतः त्रिधा प्रतियोगात्मिका, वैयक्तिकी, सहयोगात्मिका च प्राप्यते। सहयोगात्मक पुरस्कार संरचनायां समूहस्य सदस्येभ्यः स्वीयवैयक्तिक लक्ष्यं प्रति गन्तुं समूहस्य साफल्यमावश्यकं भवति। समूहस्य सर्वे सदस्याः लक्ष्यकेन्द्रितव्यवहारसमूहं पारितोषिकं प्रदास्यति। सर्वेषु सहयोगात्मकाधिगमसिद्धान्तेषु सहयोगात्मककार्याणां प्रयोगः क्रियते। अभिप्रेरणात्मक परिप्रेक्ष्यस्य समर्थकाः सहयोगात्मकाधिगमस्य प्रभावस्य प्रभावशीलता सहयोगात्मक पुरस्कार संगठनस्य सन्दर्भे

प्रत्यक्षीकृतं कुर्वन्ति। अभिप्रेरणात्मकपरिप्रेक्ष्ये पुरस्कारसंगठनमत्यावश्यकमस्ति। सहयोगात्मक पुरस्कारसंरचना समवयस्कानां कृते मानकानां (Peer Norms) निर्माणं करोति एवं व्यक्तिगत प्रयासेभ्यः संरक्षणं प्रददाति।

अधिगमसिद्धान्तपरिप्रेक्ष्यम् – स्लेविन महोदयानुसारेण सहयोगात्मकाधिगमव्यूहरचना कक्षासङ्घटनेभ्यः द्विधा भिन्नमस्ति। कार्य संरचना – सहयोगात्मक कार्य संगठने छात्रेभ्यः समूह कार्यं कुर्वन्तः परस्परं प्रोत्साहितं करणीयं भवति। सर्वेषां छात्राणां योगदानमेव वैयक्तिक योगदानं सुनिश्चितं करोति। समूहपुरस्कारः सर्वेषां सदस्यानां कृते प्रेरकस्य कार्यं करोति।

वीटले महोदयानुसारेण सहयोगात्मकाधिगमः द्विऽधिनियमेषु आधारितमस्ति-

(i) ज्ञानं निष्क्रियो भूत्वा प्राप्तुं न शक्यते। जनेन सक्रियो भूत्वा एव प्राप्यते उत वा निर्मायते। (ii) संज्ञानस्य कार्यं अनुकूलनकरणमस्ति। अयं जनं अनुभवात्मकसंस्कारान् सङ्घटयितुं साहाय्यं करोति।

प्याजे महोदयानुसारेण ज्ञानप्राप्तेरनन्तरं तस्मिन्प्रोपरि मानसिक एवं शारीरिकरूपेण कार्यं करणीयं भवति। सामाजिक अन्तःक्रिया ज्ञानस्य संरचनायां वृद्धिं करोति। सहयोगात्मकाधिगमे कक्षा तद् स्थानमस्ति, यत्र सक्रियात्मक चर्चाः भवन्ति एवं अध्यापकः अधिगमस्य सुगमकर्तारूपेण कार्यं करोति। सः केवलं सूचनानां स्रोतः एव न भवति।

सहयोगात्मकाधिगमस्य घटकानि –

सहयोगात्मकाधिगमस्य घटकानि – एतानि अति-

- सकारात्मकाऽन्तर्निर्भरता
- सकारात्मकोद्देश्यनिर्भरता
- सकारात्मकपुरस्कारः
- सकारात्मकसंसाधनान्तर्निर्भरता
- सकारात्मकभूमिकाऽन्तर्निर्भरता
- सकारात्मकार्यानिर्भरता
- व्यक्तिगतयोगदानम्
- अन्तर्वैयक्तिककौशलम्
- समूहप्रक्रमणम्
- परस्परमन्तःक्रियाः

घटकानां नाम्ना एव तेषु अन्तर्निहित भावः ज्ञातुं शक्यते। यथा यदा एकस्य समूहस्य लक्ष्येषु समानता अथवा समूहमध्ये स्थित्वा अभिज्ञानस्य भावना भवति, तर्हि सकारात्मकान्तर्निर्भरता जन्म प्राप्नोति। अधिगमसमूहः केवलम् अधिगमोद्देश्यानां कारणेनैव परस्परं योजितं भवति। पुरस्कारेण समूहसदस्येषु उत्साहः जायते। समूहस्य लक्ष्याणां प्रात्यर्थं सर्वेषां संसाधनानां, सूचनानां सामग्रीणाञ्च मिलित्वा प्रयोगः करणीयं भवति। अध्यापकः समूहमध्ये छात्रेषु विविध भूमिकानां सृजनं करोति। यथा- पाठकः (Reader), अधिगम निरीक्षकः (Checker of understanding), सहभागित्व प्रोत्साहकः (Encourager of participation), ज्ञानविस्तारकः (Elaborator of knowledge) इत्यादयाः। एवं प्रकारेण समूहे सर्वैः वैयक्तिकं योगदानं करणीयं भवति।

कस्यापि समूहं सहयोगात्मकसमूहरूपेण निर्मातुं नेतृत्वं, निर्णयनं, विश्वासः, सम्प्रेषणं, प्रबन्धनकौशलानाञ्च विकासकरणमावश्यकं भवति। समूह प्रक्रमणे समूहस्य सर्वेषां सदस्यानां कार्यकलापानामुपरि विचारविमर्शः क्रियते, यत् तथैव

कार्यमग्रेसरणीयमथवा किञ्चित् परिवर्तनं करणीयम्। परस्परमन्तः क्रिया इत्युक्ते सदस्यानां मध्ये सम्मुखे उत्साहिताः अन्तःक्रियाः सकारात्मकान्तनिर्भरता, सामाजिक कुशलता एवं मनोवैज्ञानिक समायोजनेन उद्भाविता भवति।

सहयोगात्मकाधिगमविधयः - सहयोगात्मकाधिगमविधीनानां नामानि, तेषां विधीनां जनकाः -

विधेः नाम	जनकः
1 Learning together and alone	जॉनसन एवं जॉनसन
2 Teams Games Tournaments (TGT)	डीवरीज एवं एडवर्डस
3 Group Investigation	शारन एवं शारन
4 Constructive Controversy	जॉनसन एवं जॉनसन
5 Jigsaw	अरोनस एस तस्य सहयोगिनः
6 Student Team's Achievements (STAD)	स्लेविन एवं तस्य सहयोगिनः
7 Complex Instruction	कोहेन
8 Team Associated Instructure (TAI)	स्लेविन एवं तस्य सहयोगिनः
9 Co-operative Learning Structures	कारगन
10 Co-operative Learning Reading and Writing	स्टीवनस, स्लेविन एवं तस्य सहयोगिनः

सारांशः - सहयोगात्मकाधिगमः एका सफला अधिगमव्यूहरचनाऽस्ति, यस्मिन् छात्रः लघु समूहे स्थित्वा स्वीय योग्यतास्तराणामाधारेण विविधाधिगमक्रियाभ्यः विषयमवगच्छन्ति। समूहस्य प्रत्येकं सदस्यः केवलं स्वीयाधिगमाय उत्तरदायि न भवति, अपितु स्वीय समूहस्य सदस्यानामधिगमे, अधिगमसाहाय्ये एवम् अधिगमस्य वातावरणं सृजने अपि भवति। सदस्यानां सहयोगात्मक प्रयासाः समान लक्ष्याणां प्राप्तौ सहायकाः भवन्ति। सहयोगात्मकाधिगमः स्व-सम्मान भावनां जन्म ददाति। छात्रेषु एनां भावनामुदेति यत् प्रत्येकं व्यक्तिः महत्त्वपूर्णमस्ति। साररूपेण सहयोगात्मकाधिगमे निहित सन्देशं हिन्दीभाषायामेवं वक्तुं शक्नुमः -

“मेरी सफलता तुम्हें लाभ देगी, तुम्हारी सफलता मुझे लाभ प्रदान करेगी।

सभी एक साथ डूवेंगे या तैर कर बाहर आ पायेंगे।

एक दूसरे के बिना काम असम्भव है।

एक सदस्य की सफलता को मिल कर मनायें।”

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. R.V. Slavin (1995), Co-operative Learning, Theory, Research and practice. Englewood cliffs, N.J.: Prentice hall.
2. M.Deutach (1949), A Theory of Co-operation and Competition, Human Relations
3. J.Ellis ormrod, Educational Psychology. Developing Learners Prentice Hall.
4. Loger T.and David W.Johnson-An Overview of Co-operative Learning, Published in J. Thousand, A.Villa ana A.Nevin (ed). Creative and Collaborative Learning, Brookers Press. Baltimore, 1994,
5. S.Kagan, (1994) Co-operative Learning, san clement, CA; Kagan Publications

चिन्ताऽवसादयोः स्वरूपं यौगिक समाधानानि च

डॉ. सुनील कुमार शर्मा

सहायकाचार्यः, शिक्षापीठः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय, नवदेहली

Article Info

Volume 6, Issue 2

Page Number : 80-84

Publication Issue :

March-April-2023

Article History

Accepted : 01 April 2023

Published : 10 April 2023

शोधसारः (Abstract) - "चिन्ताचिन्ता द्वयोर्मध्ये चिन्ता एव बलीयसी।" इति सूक्तिः सुप्रसिद्धा वर्तते यतोहि चिन्ता तु देहं दहति परन्तु चिन्ता जीवितं मानवमेव दहति। वस्तुतः अस्माकं मानवजीवने काश्चन् मनोवैज्ञानिकसमस्याः अनुभूयन्ते, यथा-मानसिक तन्त्रता, चिन्ता, अवसाद, व्यसनमित्यादयाः। एताः मानसिकसमस्याः भवन्ति, एतासां रूपं न भवति, बर्हितः द्रष्टुमशक्याः भवन्ति। मानवस्य व्यवहारेण, क्रियाकलापेन, नकारात्मकचिन्तनेनैव एतादृशानां समस्यानामाभिज्ञानं भवितुमर्हति। एवञ्च एतादृशानां मनोवैज्ञानिकसमस्यानामुपचारोऽपि अतिकठिनं भवति। कदाचित् योगमाध्यमेन एतादृशी समस्यानामुपरि विजयं प्राप्तुं शक्नुमः, इति धिया शोधलेखेऽस्मिन् द्वे मनोवैज्ञानिकसमस्ये स्वीक्रियेते - चिन्ताऽवसादश्च। उभयोः स्वरूपस्य, परिभाषाणां, लक्षणानां कारणानाञ्च चिन्तनं शोधलेखेऽस्मिन् करिष्यते, सहैव यौगिक क्रियाभिः, आसनेभ्यः कथं एतयोः उभयोः समाधानानि भवितुमर्हन्ति, इत्यस्मिन् सन्दर्भेऽपि चिन्तनस्य शोधलेखस्य मुख्योद्देश्यमस्ति।

मुख्यशब्दाः- चिन्ता, भावनात्मका, व्याकुलः, यौगिक, अवसादः, विद्वान्सः।

विषय प्रवेशः - चिन्ता वस्तुतः एका दुःखद भावनात्मका स्थितिर्भवति यया मानवः एकप्रकारकाज्ञातभयेन ग्रस्तः भवति, व्याकुलः अप्रसन्नश्च तिष्ठति। चिन्ता वस्तुतः व्यक्तेः भविष्यकाले आगम्यमानानां कस्यापि भीतियुक्तसमस्यां प्रति सजगतायुक्तं संकेतं भवति। चिन्तया न केवलं अस्माकं दैनन्दिनजीवनस्य क्रियाकलापाः प्रभाविताः भवन्ति, अपितु अस्माकं निष्पादनं, बुद्धिमत्ता, सर्जनात्मकता इत्यादयाः अपि नकारात्मकरूपेण प्रभाविताः भवन्ति। एतद्ऽपि वक्तुं शक्नुमः यत् अत्यधिक चिन्ताकारणेन मानवस्य व्यक्तित्वमपि अत्यन्तं प्रभावितं भवति, सः किमपि कार्यं सम्यक् रूपेण कर्तुं न पारयति। विविध मनोवैज्ञानिकैः चिन्ता स्व-स्वमतानुसारेण परिभाषिता, यथा- फ्रायड महोदयानुसारेण-

"चिन्ता एका एतादृशी भावनात्मिका दुःखदाश्च अवस्था भवति, या मानवस्य अहं इत्यमुमागामि समस्याया जागरयति, येन मानवः वातावरणेन सह अनुकूलतया व्यवहारं कर्तुं समर्थः भवेत्। "

अमेरिकन साइकेट्रिक एसोशियेन एवं बारलोव महोदयानुसारेण -

"चिन्ता एका एतादृशी मनोदशा विद्यते, यस्याः अभिज्ञानं चिन्हित नकारात्मक प्रभावेन, तनावस्य शारीरिकलक्षणेभ्यः, लाभवित्यं प्रति भयेन क्रियते।"

मनोवैज्ञानिकानामनुसारेण चिन्तायाः लक्षणानि एवं भवितुमर्हन्ति -

- दैहिकलक्षणानि
- सांवेगिक लक्षणानि

- संज्ञानात्मक लक्षणानि
- व्यवहारात्मक लक्षणानि

दैहिक लक्षणेषु अत्यधिका शारीरिकविश्रान्तिः सम्पूर्णदेहस्यमांसपेशीषु तनावः, स्वेदविस्तार, उत्तरक्तचापः, हृदयगतेः वर्धनं, उदरसमस्याः, शिरोवेदना, हस्तपादाभ्यां शीतलत्वं, भारे न्यूनता इत्यादयाः समागताः भवन्ति।

सांवेगिक लक्षणेषु तन्यता, तनावग्रस्तता, उदासीनता, निराशा, विश्रान्तिः इत्यादयाः अन्तर्भवन्ति।

संज्ञानात्मक लक्षणेषु नकारात्मकं चिन्तनं, भविष्यं प्रति दुःखद कल्पनाकरणमित्यादयाः भवितुमर्हन्ति।

व्यवहारात्मकलक्षणेषु अन्तर्मुखत्वं, अन्येभ्यः स्वीयं गौणीकरणं, नकारात्मकचिन्तन कारणेन निर्णयस्वीकरणे काठिन्यानुभूतिः इत्यादयाः समागताः भवन्ति।

अवसादः - इयम् एका मनोदशा विकृतिरस्ति। यदा बहुकालपर्यन्तं चिन्तायाः स्थितिः भवति, तर्हि तद् अवसाद अथवा विषादरूपेण परिणमति। अवसादस्य स्थितौः मानवस्य मनः बहु नीरसं भवति। एवं तस्मिन् मुख्यरूपेण निष्क्रियता, एकाकी स्थिति एवं आत्महत्यायाः प्रयासकरणस्य प्रवृत्तिः दरीदृश्यते। एतादृशः अवसादग्रस्तः मानवः स्वीयं दैन्यं निर्बलञ्च मत्वा जीवनमसमीचीनं मन्यते। आर. अग्रवाल महोदयेनोक्तम् -

"चिन्ताऽवसादश्च उभयमपि तन्यतायाः तनावस्य क्रमिकं सांवेगिकं प्रभावञ्चास्ति। अतिगम्भीरा तन्यता कालान्तरे चिन्तायां परिवर्तितं भवति एवं दीर्घं स्थायि चिन्ता अवसादस्य रूपं स्वीकरोति।" मनोवैज्ञानिकानामनुसारेण अवसादस्य लक्षणानि भवन्ति -

- (1) सांवेगिकलक्षणानि
- (2) संज्ञानात्मकलक्षणानि
- (3) अभिप्रेरणात्मक लक्षणानि
- (4) व्यवहारपरक लक्षणानि
- (5) दैहिक लक्षणानि

सांवेगिक लक्षणेषु नीरसता, निराशा, दुःख, लज्जाभावः, दोषभावः, अकार्यभावादयाः अन्तर्भवन्ति।

संज्ञानात्मकलक्षणेषु स्वीयभविष्यविषये अत्यधिकं नकारात्मकं चिन्तनमन्तर्भवति।

अभिप्रेरणात्मक लक्षणेषु स्वीय दैनिक कार्येषु अभिरुचेः अभावः, कार्यारम्भप्रवृत्तेः न्यूनता, स्वेच्छया कार्यकरण प्रवृत्तेः अभावः इत्यादयाः समाहिताः भवन्ति।

व्यवहारपरक लक्षणेषु अत्यधिकमन्तर्मुखी स्वभावः व्यवहारश्च एकाकीप्रवृत्तिः, जनेभ्यः मेलनाभावः, निष्क्रियता इत्यादयाः समायान्ति।

दैहिकलक्षणेषु शिरोवेदना, उदरसमस्याः, अनिद्रा, भोजने अरुचिः, सम्पूर्णदेहे वेदना इत्यादयाः अन्तर्भवन्ति।

चिन्तायाः कारणानि - मनोवैज्ञानिकैः चिन्ताया कारणान्यपि चिन्तितानि, तान्यथा-

1. जैविककारकानि
2. मनोवैज्ञानिककारकानि
3. अधिगमेन सम्बन्धितानि कारकानि
4. संज्ञानात्मक - व्यवहारात्मक कारकानि

जैविककारकानि- आइजेन्फ, ग्रे, लेडर, विंग इत्यादि मनोवैज्ञानिकानामनुसारेण चिन्ता आनुवांशिक कारणेभ्यः अपि भवति। अर्थात् मानवस्य अन्ते कानिचन एतादृशानि जीन्स भवन्ति, ये चिन्तायाः कृते कारणानि भवन्ति। केवलमेकमेव जीन्स चिन्तायाः कारणानि न भवन्ति अपितु एतादृशः जीन्स एकाधिकाः भवन्ति।

मनोवैज्ञानिक कारकानि- अस्याः विचारधारायाः अनुसारेण अहम् एवं उपादम् इच्छानां अचेतनस्तरे जातानां संघर्षानां कारणेन चिन्ता उत्पद्यते।

अधिगमेन सम्बन्धितानि कारकानि- केचन विद्वांसः वदन्ति यत् वातावरणे एतादृशानि अनेकानि कारकानि भवन्ति येभ्यः मानवः चिताग्रस्तः भवति।

संज्ञानात्मक - व्यवहारात्मक कारकानि - मनोवैज्ञानिकानां मताऽनुसारेण मानवस्य सम्मुखे एतादृशी स्थितिः उत्पद्यते या तस्य नियन्त्रणतः बहिर्भवति, येन सः चिन्ताग्रस्तः भवति, सहैव सः व्यक्तिशः स्वयं असहायं निर्बलं चानुभवति, तदा सः चिन्तितः भवति।

अवसादस्य कारणानि -अवसादस्यापि मनोवैज्ञानिकैः कानिचन कारणानि उक्तानि-

- जैविक विचारधारा
- मनोगतिकी विचारधारा
- संज्ञानात्मक विचारधारा

जैविक विचारधारा - एतद् मतानुसारेण विषादस्य कारणानि जीन्स भवन्ति अथवा शारीरिक समस्याः अथवा आनुवांशिकता।

मनोगतिकी विचारधारा - अस्याः विचारधारायाः जन्मदाता फ्रायड एवं तस्य शिष्यः कार्ल अब्राहम मन्यते। अनेन मतानुसारेण यदा कस्यापि व्यक्तेः, कस्यापि प्रियजनतः अथवा प्रियवस्तुतः अथवा सम्यक् परिस्थितितः अलगावः भवति अर्थात् यदा सः व्यक्तिः तादृशी वस्तुतः अथवा परिस्थितितः पृथक् भवति, तदा सः अवसादस्यावस्थायाम् भवति।

संज्ञानात्मक विचारधारा - अनेन मतानुसारेण अवसादस्य प्रमुखं कारणं व्यक्तेः नकारात्मकं चिन्तनं भवति। अनेन कारणेन सः घटितानां घटनानां कृते पश्चात्तापं करोति, येन तस्मिन् आत्मदोषस्य भावना उत्पन्ना भवति एवं सः भविष्यस्य विषये निराशापूर्ण कल्पनाः करोति, परिणामस्वरूपं सः स्वीय वर्तमान कालस्य समुचितोपयोगं कर्तुं न शक्नोति एवं दुःखी निराशाश्च तिष्ठति।

चिन्ताऽवसादयोः यौगिक समाधानानि - यथा वयं जानीमः यत् योगमाध्यमेन जीवनस्य विविधावश्यकतानां समस्यानाञ्च समाधानं कर्तुं प्रयासः क्रियते। योगस्य प्रमुखोद्देश्यं भवति - व्यक्तेः चिन्तनस्य, चरित्रस्य एवं व्यवहारस्य परिष्करणम्। यथा- यथा सत्त्वगुणः वर्धते, तथैव चित्तस्य परिष्करणमारभति। योगाभ्यासः प्राणोर्जायाः अवरोधान् दूरीकृत्य चित्तं निर्मलयति, परिणामस्वरूपं व्यक्तेः नकारात्मकं चिन्तनं परित्यज्य सकारात्मकदिशां प्रति अग्रेसरति एवञ्च तस्य सर्वप्रकारकाः समस्याः व्याधयश्च दूरे भवितुमारभन्ति।

चिन्तायाः यौगिक समाधानानि -

षट्कर्म - जलनेति, कपालभाँति, शीतक्रम, कुंजल

आसनानि - श्वास-प्रश्वासस्य सजगतया सह संधि संचालनस्याभ्यासः

- ताडासनम् (5-10 आवृत्तिः)
- तिर्यक् ताइसनम् (5-10 आवृत्तिः)
- कति चकासनम् (5-10 आवृत्तिः)

- सूर्यनमस्कारः (3-5 आवृत्तिः)
- पद्मासनम्
- सिद्धासनम्
- स्वस्तिकासनम्
- गोमुखासनम्
- शशांकासनम्
- वज्रासनम्
- सर्वांगासनम्
- हलासनम्
- सिंहासनम्
- शवासनम् (15-20 निमेषाः)

प्रत्येकासनानन्तरं किञ्चित् क्षणेभ्यः विश्रान्तिः स्वीकरणीया।

प्राणायामाः

- नाडी शोधन प्राणायामः
- भ्रामरी प्राणायामः
- उज्जायी प्राणायामः
- चन्द्रभेदी प्राणायामः

आरम्भे समयशक्त्यनुसारम् अभ्यासः करणीयम्। शनैः शनैः अभ्यासानामावृत्तिः वर्धनीया। प्रारम्भकाले 3-5 आवृत्तिभिः सह प्राणायामस्य अभ्यासः करणीयम्। गायत्रीमन्त्रस्य नियमितोच्चारणं करणीयम्। प्रातःकालीन भ्रमणं करणीयम्। अनेन शनैः शनैः चिन्तायाः परिहारः भवति।

अवसादस्य यौगिक समाधानानि -

षट्कर्म- जलनेति, कपालभाँति, वमन, शीतकर्म, व्युत्क्रम आरम्भकाले कपालभाँति इत्यस्य अभ्यासः बहुकालपर्यन्तं नैव करणीयम्। जलनेति, व्युत्क्रम एवं शीतकर्म एतेषामाभ्यासः प्रतिदिनं कर्तुं शक्यते। वमनाभ्यासः सप्ताहे द्वि-त्रिवारमेव करणीयम्।

आसनानि-

- सन्धिसञ्चालनाभ्यासः
- ताड़ासनम्
- तिर्यक ताड़ासनम्
- कटि चक्रासनम्
- सूर्य नमस्कारः
- हलासनम्
- सर्वाङ्गसनम्

- शीर्षासनम्
- भुजंगासनम्
- शशांकासनम्
- मार्जारासनम्

प्राणायामाः -

- नाडी शोधनप्राणायामः
- भस्त्रिका प्राणायामः
- भ्रामरी प्राणायामः
- सूर्यभेदी प्राणायामः

ग्रीष्मकाले भस्त्रिका एवं सूर्यभेदी प्राणायामस्य अधिकाभ्यासः नैव करणीयम्। अवसादस्यावस्थायां महामृत्युञ्जय इति मंत्रस्य उच्चारणमेवञ्च ॐकारस्य उच्चारणं करणीयम्। प्रातःकालीन भ्रमणं करणीयम्। अवसादरोगिणः तादृशः अभ्यासः नैव करणीयं येन सः अन्तर्मुखी भवेत्। अधिकाधिकतया एतादृशाः अभ्यासाः करणीयाः यैः शरीरं मनश्च गतिशीलः भवेत्। अवसादरुग्णैः जनैः योगनिद्रायाः ध्यानश्चाभ्यासः नैव करणीयम्।

सारांशः—एवं प्रकारेण केचन योगाभ्यासाः यदि नियमित रूपेण क्रियन्ते, तर्हि चिन्ताऽवसादयोः एतादृशी समस्यानामुपरि यथासंभवं नियन्त्रणं प्राप्तुं शक्यते। समस्या काऽपि भवतु, तस्याः मूलं भवति जीवनस्य विषये सम्यक् ज्ञानाभावः। यदि किमपि कार्यं करणात् पूर्वमेव विवेकपूर्णरीत्या चिन्तनं क्रियते, तर्हि वयं यथासंभवं स्वीयसमस्यानां समाधानं कर्तुं शक्नुमः। योगोऽपि वास्तविकरूपेण मानवस्य अन्ते विवेकं सकारात्मकताञ्चोत्पादयति।

सन्दर्भग्रन्थसूची-

1. सिंह, अरुण कुमार (2009), असामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
2. मिश्र, दीन (2006), योग एवं मानसिक स्वास्थ्य, प्रयाग
3. शर्मा, एस.एन. (1990-91), आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, कचहरी घाट, आगरा
4. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव डी.एन., (2001), आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
5. सिंह, अरुण कुमार (2006), उच्चतर नैदानिक मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, जवाहर नगर, दिल्ली
6. पण्ड्या प्रणव (2010), आध्यात्मिक चिकित्सा एक समग्र उपचार पद्धति, श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज, हरिद्वार।

ज्ञानशौर्यम्



Publisher

Technoscience Academy

(The International open Access Publisher)

Website : www.technoscienceacademy.com